

निखिल जयंती विशेषांक

अप्रैल 99

मूल्य : 18/-

संक्ष-तंत्र-योग

विज्ञान

निखिल जन्मोत्सव
शत शत वर्ष

कुण्डली वाचन शक्तिपात्र द्वारा
मन के द्वच्छ पर विजय

देव आह्वान सम्भव है
बोड्य योगिनी सिद्धि

आंधियों से कह दो - मेरे जलाए ये टीपक अब बुझ नहीं सकते



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

श्राव्य-प्रकाश



साधना

- गुरु शिव सायंच साधना 9
- गुरु हृष्ण स्वापन साधना 13
- गुरु अनंत सिंह साधना 15
- मुख आधा शक्ति साधना 21



सदगुरुदेव

- जो मेरे मानस के राजहस 3
- गुरु बाणी 40
- सदगुरु प्रसंग 77

स्तनभ

- आयुर्वेद सुधा 28
- पाठकों के पत्र 44
- साधक साझों 47
- बाराहमिहोर ने कहा 51
- मैं समय हूँ 60
- नक्षत्रों की वाणी 70
- इस मास विल्सनी 78
- एक दृष्टि में 84



मनोविज्ञान

- मन के छन्द पर विजय 25

विवेचना

- समाजि रहस्य 18

विशेष

- सदगुरु अवतरण विवरा 37
- सिंहाश्रम साधक परिवार 39
- शब्द स्मर्तों च भोगिनी 57

दीक्षा

- देवस्व आज्ञान दीक्षा 30
- शक्तिपत

रिपोर्टज

- अविरल यात्रा जारी है 80

आवाहन

- भोगाल आज्ञान 42

प्रेस्टक संस्थापक

दृ. लालाटायातन श्रीमाली
(परमहंस स्वामी
निष्ठालेश्वरजी)

प्रधान सम्पादक
श्री द्विलालाश्रम श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक
एवं संयोजक
श्री द्विलालाश्रम श्रीमाली

सम्पादक अष्टल

डॉ. सन्तानु शर्मा,
श्री द्विलालाश्रम
श्री द्विलाल विज, श्री द्विलाल विज,
श्री द्विलाल पटिल, श्री द्विलाल, श्री
श्री द्विलाल विज, श्री द्विलाल विज,
श्री द्विलाल विज, श्री द्विलाल विज

प्रिमीय सलाहकार

श्री अरतिन्द्र श्रीमाली

विकिंग शेक्षण
श्री द्विलाल पटिल

श्री द्विलाल विज

प्रकाशक एवं स्वामीन्द्र

श्री वैलालाश्रम श्रीमाली

द्रवा

नोल वार्ट इन्डस्ट्री
10/2, DLF, इंडिस्ट्रियल परिया,
गोती नगर, नई दिल्ली
से मुदित तथा
मन तत्र-यज्ञ विज्ञान
डाइकोर्ट कालोनी, बीबीपुर से
प्रकाशित।

नई प्राप्ति

एक प्रति 18/-

दो दैवि 195/-

वर्ष 19	अंक 4
अप्रैल 1999	पृष्ठ 84
प्रिमीय सलाहकार	

प्रिमीय सलाहकार

श्री द्विलाल विज

श्री द्विलाल

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'गत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्बन्धक एवं सहमत छोना अनिवार्य नहीं है। तर्क कुर्हन करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या स्थान गिल चाप, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुग्मकड़ सामू-संत होते हैं, अतः उनके पत्रों के बारे में कृष्ण भी अच्युत बालकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, गुरुदेव या सम्पादक चिग्नेवार होगे। किसी भी सम्पादन को किसी भी प्रकार का परिश्रित नहीं दिखा जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से पांचलाने पर उन अपनी उरफ से प्रामाणिक और सभी सामग्री अधवा यंत्र भेजते हैं, परंतु भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अधवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी चिम्मेवारी नहीं होती। गढ़क अपने विषदास पर ही ऐसी सामग्री चिम्मिका कार्यालय से मिलती है। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का चारिंक शुल्क वर्तमान में ₹१५/- है, परंतु यदि किसी विशेष परं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को चिम्मालिक या बंद करना पड़े, तो जिहने भी अंक आपको प्राप्त हो जाके हैं, उसी में पर्याप्त सदस्यता अधवा दो यार, तीन यार या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित जिसी भी रायना में सफलता असफलता, हानि-लाप की चिम्मेवारी साधक की स्वयं की होती तथा साधक कोई भी ऐसी उपायना, जप या यंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखकों के विचार माल होते हैं, उन पर भाषा का वाचारण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। गठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के विचले लेखों का भी ज्यों का त्यों लागवेग किया जाये है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सके। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (मले ही जे शारीरी व्यास्था के बदल हो) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण गुरु पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी चिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अधवा आर्टिस्ट की होती। दीक्षा प्राप्त करने का तदपर्याप्त यह नहीं है, कि साधक उसमें सम्बन्धित लाप पुरन्तर प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होती। गुरुदेव या पत्रिका निवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की चिम्मेवारी बहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

जयन्तु स्तिद्वाश्रमभाव पूर्वः,
मुद्रन्तु देवर्थि मुलि प्रभूतः ।
हर्षन्तु सततं शिष्याभि लंघाः,
जयन्तु लिखितेऽवरं सिद्धजन्मयः ॥

सिद्धाश्रम प्राप्ति के पावित्र माव से मनुरूपत तुप हुए साधक गण विजय प्राप्ति करें। वहाँ विचरण करने वाले लिङ्गदेव मन्त्रवं भोव्युत्त हैं। गुरुदेव निखिल के शिष्य सम्मान उपरे श्री चरणों में चेतकर हीवित रहें। चित्र गणपूरुषों द्वारा सेवोय भगवान निखिल अपने विषयों तथा उपासकों को शिखि प्रदान करें।

मन मैला और तन को धोवे

सिक्ख धर्म के आदिगुरु नानकदेव पूर्ण शूद्र हैं। एक बार ने किसी ब्राह्मण की रसीद में चले गए। वह कपों कर्पकाणी शाकाण या, और अनाधिकार प्रवेश से ब्राह्मण कोपित हो जाय और बोला— 'आपने मेरा धीका अपवित्र कर दिया, आप ब्राह्म निकल गएं।'

नानकदेव रसोई ने ब्राह्म निकल आए और बोले— 'मेरे ब्राह्म आने जाने से तुम्हारा धीका क्या पवित्र हो जाया?'—

'क्यों नहीं हो जाया? मैं हमे अमी शूद्र जल में धो लूंगा।'

ब्राह्मण ने अकड़ के भाय बोला— 'नल से क्या हो जायगा, धीका तब या अपवित्र हो रहेगा—'

नानक ने पुनः अपनी बात का समर्थन करते हुए बोले— 'आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?'— ब्राह्मण बोला।

— जब तक तुम अपवित्र चीज़ में रहोगे तब तक तुम्हारा धीका किस प्रकार पवित्र हो सकता है।

— 'आप मुझे अपवित्र कह रहे हैं', ब्राह्मण ने नानकदेव से ऐसे उत्तर को आशा नहीं दी।

— 'मैं जो कह रहा हूँ, सत्य कह रहा हूँ।'

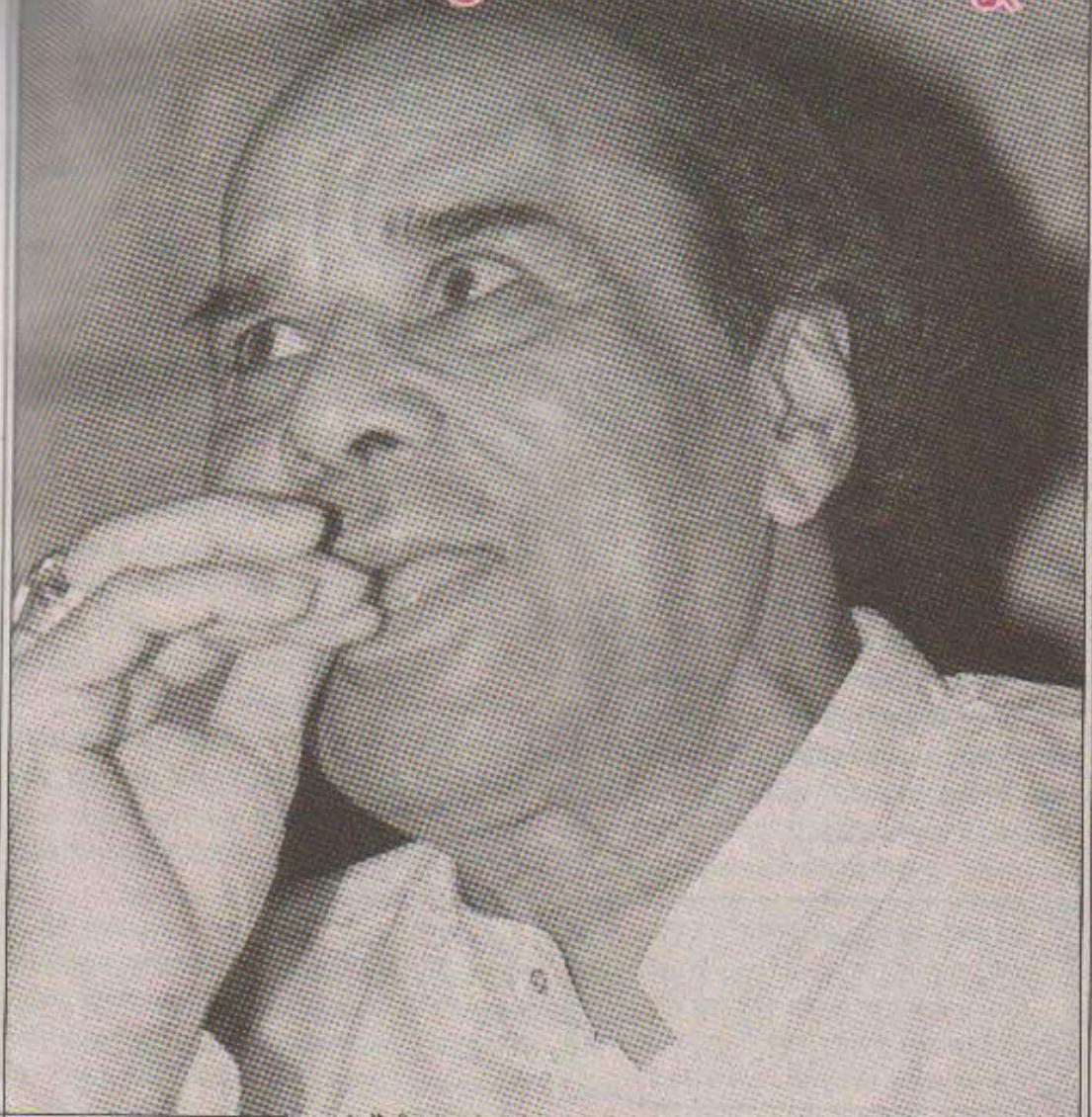
— 'आपको बात का क्या आधार है?', ब्राह्मण ने पूछा।

— 'तुम्हारे भन्दर अहंकार का भूत, कोध का चण्डाल, अशान की होमनी, निर्देशना का राजसंग और पाप की राजसंगी बयो है। तुम अपने आपको पवित्र समझते हो? जब तक तुम अपवित्र हो, तब तक लालू धो लो, साफ कर लो, पर तुम्हारा धीका पवित्र नहीं हो सकता। स्वयं को पवित्र बनाकर ही तुम धीके को भी पवित्र बना सकते हो। गुरुजी का बचन था।'

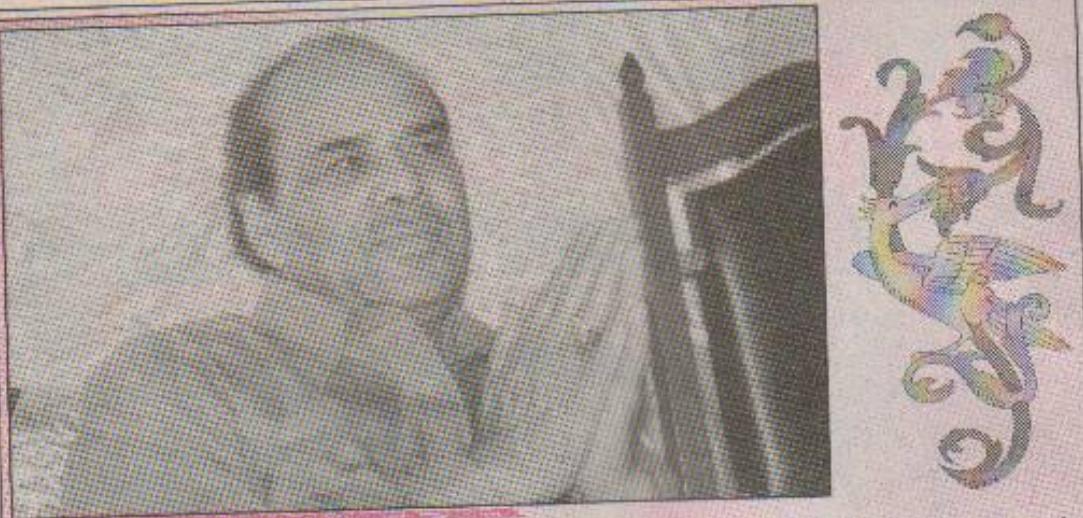
सत्य ही तो है— मन ही मैला हो, तो पिर तन को धोने से लाभ भी क्या है? कर्मकाण्ड करते रहें, मंत्र जप करते रहें और माला करते रहें, साधना करते रहें, परन्तु मन में दृष्टि विचार भरे हुए रहें, तो साधना में सफलता मला मिल भी कैसे सकेगी? ब्राह्मी सफाई के साथ आत्मरिक सफाई भी उत्तरी ही आवश्यक है। सद्गुरुसदेव पूज्यमान ने भी अपने प्रवचनों में इस बात को अनेकों बार कहा है।

ओ नरे गानस के राजहस्या

तुम गले हो, मैं लेका हूँ



‘अप्रैल’ 99 मंत्र-तंत्र-यंत्र विभाग ‘3’



तुम्हें उम्मे उद्धान भरने को सत्यर करता हो और
तुम्हें उम्मे उद्धान भरने को सत्यर करता हो, कि वे
विनाशकी विद्या विनाशकी विद्या होती है।



Tग मध्ये विष्णु मैं मानस के राजहंस हो और
विनाशकी विद्या विनाशकी विद्या को विनाशकी विद्या हो, कि वे
मैं वे विद्या को भवेत् हैं, उसी प्रकार गैर मन
भी कई कई जन्मों का नाश है, कि तुम मेरे मानस के राजहंस
हो और मैं तुम सबसे अहंता भव्यता तथा मेरी परिवित हूँ।

परंतु हूँ इस कारणवश भौमिक मैंने यो तो किया है
तम्हारा भूमन ! युरु ही तो सही अर्थों में सुगम करता है किसी
भी मानव का । जन्मी तो केवल उसे भौमिक रह देने का एक
माध्यम भर ही जनती है, शेष कार्य तो बस भूमिक होता है
जब वह भुक्त के स्थापक में स्थान है, छिटाय जन्म प्राप्त करता
है, सही अर्थों में छिन बनता है और केवल छिन ही नहीं वह
इसमें भी अधिक शुभ, अचेत, शीतल, स्निग्ध बनकर हंस
और हंस से राजहंस बनने की ओर अभ्यस्त हो जाता है। मैं
जानता हूँ तुम्हारे जीवन के अध्य को गाया। मुझे पता है तुमने
जीवन कहाँ से शुरू किया है, कहाँ के लिए प्रयाण किया था,
क्षयोंकि मेरे ही जानस की तो एक सुन्दरी है तुम् । अंतर केवल

परोपकारे कथितः स्वसुख्याय जगदपृष्ठः ।
जगद्वितय जायदते विरताः सावधो भूषि ॥
— केवल परोपकार का विनाश करने वाले और अपने
सुख के लिए स्मृता से रहित विरते ही साधु पुरुष मन्यार
के कल्पाण के लिए पृथ्वी पर कर्म लेते हैं।

‘अप्रैल’ 99 मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान ‘4’

यह ही गया कि मैं तुम्हें उद्धान भरने को सत्यर करता हो और
तुम जमीन पर विनाशकी विद्या को भवेत् हो।

मैं तुम्हें उम्मे मानसरोवर तक चलने को बात कहता
हूँ गया और तुम पता नहीं किन किन पोखरों में स्नान करके
आपो आप को धन्य मानने लगे, किन्तु जान लो कि वह
अनिवाचनीय तुम्हें तभी मिल सकेगी जब तुम मानसरोवर
का स्पर्श कर लोगे । पोखरों में वह तुम्हि मिल ही नहीं सकती ।
पोखरों तो अनेक होंगे तुम्हारे जीवन में, किन्तु वे पोखर तुम्हारी
नियति नहीं हो सकते । मैंने अपने मानस के राजहंसों का गाय
लिपि में पोखरों का स्नान लिखा ही नहीं था । विनाशकी विद्या
कुछ और ही था, किन्तु ऐसे वह ही गया थि, वार-बार लगभग
हर जग्न में ही तुम गोरा छाव छुड़ा कर पता नहीं किन किन
प्रबन्धनाओं में यो जाते रहे ।

पर तुम्हारे गामने अश्राह मानसरोवर भील केली
हुई है, जान का जल उसमें अगाध रूप ये भरा हुआ है, जो
कि स्वच्छ है, निर्मल है, पवित्र है, जिसमें दुबकी लगाना ही
तुम्हारे जीवन का अहोभाग्य है, पर मुझे अश्राह तो जग-
वात से होता है कि मैं तुम्हें जील के गाय में बड़ा हुआ
आवाज दे रहा हूँ और तुम झील के जिनारे रखदे खड़े केकर
पर्वतों में मुँह मार रहे हो ।

यह तो तम्हारी नियति नहीं है, वह लवध नहीं है
जो वह तुम्हारे कुल की परम्परा भी नहीं है, तुम्हारे पूजनों की
परम्परा तो यह रही है कि तुम मानसरोवर झील में उतरो,
दुबकीगां लगाओ और अपने पखों को भौंधिक स्वाञ्ज और
भौंधिक बलशाली बनाकर भुक्त आकरा । मैं तिचरण करूँ ।

तुम कहें वर्षी से इस मानसरोवर में उन्हें से ध्वरति
जैसे को, तुम्हारे मन का भय हिम्मत नहीं जूदा पा रखा है और
चिल्ले कहें वर्षी से तुम्हें आनन्द के मुक्त आकाश में विचरण
करना यही छोड़ दिया है, इसीलिए तुम्हारे पंखों में उड़ने की
शक्ति नहीं रही, उस आनन्द के आकाश में विचरण
करना की अवसर नहीं रही, तुम्हारे पास
मुझ क्षेत्र समतावान पंख छोटे
हुए थे तुम जमीन पर चलने
को बाहर हो, जबकि
तुम्हारी निश्चित,
तुम्हारा लक्ष्य, और
तुम्हारा कुल-धर्म,
मुक्त आकाश में
विचरण करना है,
पर पिछले कई
वर्षों से तुमने
उड़ना ही छोड़
दिया है, और
इसीलिए तुम उड़ने
से ध्वरा रहे हो, मन
में एक अजीब सा भय
समा गया है, कि कहाँ उड़ने
की कोशिश करें और लड़खड़ा
कर गिर न जाऊँ, कहीं आकाश में
विचरण करने की कोशिश करें और धृष्टग रे जाना।
पर ये करने आपने आपको, अपने शरीर को चक्काना चुरू न कर
दे।

यह यह तुम्हारा गम है, तुम्हारे मन की शक्ति है, वे
तुम्हारे आप-पास के शृणुचिन्नकों की भनाए हैं, घर परिवार
को सलाह है, और उसी वजह से तुम मन में उड़ने वाली छढ़ा
रखते हुए भी चुपचाप भैंसे हुए हो, मुक्त आकाश में विचरण
करने के आनन्द की भावना मन में रखते हुए भी मन गम कर
जैसे हुए हो, मानसरोवर में छुड़कियां लगाने की उच्छु रखते
हुए भी, आप-बच्चों आपनी के साथ किनारे पर कर
पत्थरों में चोब गार रहे हैं, यह सब तुम्हारा दोष नहीं है,
तुम्हारे आप-पास के चक्कावणा का दोष है, तुम्हारे आप
पास के लोगों की बुनदीली है, तुम्हारी पिछली दी तीन पालियों
की खपलारा है, अप्रतिकृत हो। ॥ ता मानसरोवर के आगाम

जल में डुबली लगाई, और न भूत आकाश में विचरण किया।
परन्तु याद तुम्हें यह निश्चय है, तो परिवार का भी तुम्हें
सहयोग मिलेगा।

पर तुम्हें और तुम्हें अन्तर है, उनके पास कोई गुरु
हीं था वा उनके रमण विलास के तुम रागहंस हो,

उनके पास कोई पत्र-प्रक्षेप कहाँ था जो
उन्हें उड़ने का कला सिखाता,
उनके पास कोई चेतना पूर्ण
नहीं था जो आपने साथ ले
जाकर मानसरोवर में
दुखको लम्बाता,
और पंखों में ताकत
भरता, इसीलिए वे
चप रहे, इसीलिए
वे अकाश्य रहे,
इसीलिए वे
गंगहंस होते हुए
भी, जौए की
जिन्दगी व्यतीत
करते रहे।

अ तुम्हारा तो
सोमध्य है कि मैं तुम्हारे
नाथ हूं तुम्हारा तो अहोभग्य
है कि मैं तुम्हारे साथ इस आगाम निर्मल

जल में छुड़की लगाने के लिए और तुम्हें सुरक्षित रूप
में दुखकी लगाने के लिए नेतृत्व है, तुम्हारा तो यह अधिनियम
घायल है, कि मैं हर दृष्टि तुम्हें अपने साथ मुक्त आकाश में
उड़ने के लिए सक्षम कर रहा हूं, और यह विश्वास रखो कि
आकाश में विचरण करते समय मैं प्रतिशत, प्रतिपन तुम्हारे
साथ हूं, किसी भी हालत में तुम्हें नीचे निरन्तर नहीं दूरा, किसी
भी स्थिति में तुम्हारे शरीर को लहूलहान नहीं होने दूना, किसी
भी स्थिति में तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगा।

पर इसके लिए तुम्हें यह जड़भान तो हो। चाहिए
कि मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम्हें यह विश्वास तो हो। चाहिए कि मैं
कहें-कहें जन्मों से तुम्हारे जीवन का साक्षी भूत रहा हूं तुम ह
यह रहस्य तो हो। चाहिए कि तुम मेरे हो साथ के दोहंस
हो, मेरी ही जिन्दगी का एक दिस्ता हो, मेरे ही मन के पक
पाग हो।

इसीलिए मैं हर बार तम्हें मानवान करता हूँ, कि तुम मोहो के बीच मैं चबूते हुए लिख हो। तुमने अपना धर्म गुना दिया है, तुम कोआ के बीच वर्ष से सोना फुलाकर बैठे हुए हो, और तुम आपना स्वरूप शुल्क बैठे हो, तुम्हें आकाश में उड़ने की अवधिगति से विवरण करने की अप्रती हो और तुम जगीन पर ही कंकर भनवासे में, रेत के ढहार में मुह लिपाण हुए परमन हो, इसीलिए मैं तुम्हें तुम्हारे स्वरूप से परिचित करा रहा हूँ, इसीलिए मैं तुम्हें तुम्हारे स्वरूप से परिचित करा रहा हूँ, इसीलिए मैं तुम्हें आवाज दे रहा हूँ, इसीलिए मैं तुम्हें अपने पास आने का निमंत्रण दे रहा हूँ, और इसीलिए अपने मन में आवाज दे रहा हूँ, और इसीलिए अपने मन में, अपने मन के मानसिकवर में, इच्छियों लगाने के लिए आग्रहण दे रहा हूँ।

पर इसके लिए तुम्हें अपने मन के अधिकार को दूर करना होगा, अन्योंके थहर का, बुद्धि का, अद्वकार का अधिकार है जो तुम्हारे मन पर धनीभूत हो गया है और तुम्हारे मन को कई कई परतों से ढक दिया है, तुम्हारे परिवार वालोंने इस मन पर सुनहरी

गावर डाल

ही है, चरों तरफ दीवारें खड़ी करके भीर अधिकार धना कर दिया है और ऐसे अधिकार में जब भीरी आवाज, तुम्हारे मन से टकराती भी है, तो वह कुछ क्षण के लिए टकराकर लौट आती है, तुम उस अधिकार में कुछ कदम चलते भी हो पर दरवाजे का रास्ता उस अधिकार में विखाई नहीं देता, और दीवारों से सिर टकराकर तुम लहुलहान होते जा रहे हो।

परन्तु इनना निश्चित है, कि तुम इनना अधिकार होते हुए भी चुपचाप बैठे हुए नहीं हो, प्रकाश के दरवाजे का रास्ता हूँडने की कोशिश कर रहे हो। जिनना ही तम छार की प्रकाश के छार को खोने का प्रयत्न करते हो, तुम्हारे परिवार वाले, तुम्हारी बुज्ज और तुम्हारे तर्क भीर ऊँची दीवारें खड़ी कर देते हैं और मेरी आवाज उन दीवारों से टकराकर लौट आती है। परन्तु यदि तुममें वास्तव में हो जनन है, तुम्हारे रास्ते में कोई भी वादा नहीं बन सकता, बल्कि तुम्हें उनका सहयोग ही प्राप्त होगा।

पर क्या इस अधिकार में भटकना ही तुम्हारा निवाति

है? क्या इन चारों तरफ का दीवारों से टकराते हो लहुलहान हो जा। को नियति तुम्हारे पास है? क्या इन कीओं के बीच जोवन बिताना ही तुम्हारा भाष्य है? क्या स्वरूप परम होते हुए भी जगीन पर बढ़े रहना ही तुम्हारा चिन्तन है, क्या ऐसा जोड़ बिज नहीं आ सकता कि मेरी आवाज नुम्हों कानों तक पहुँच सके पर कोई ऐसी रियात नहीं है कि तुम्हें अपने स्वरूप का बोध हो सके, क्या ऐसी कोई नियति नहीं है कि

तुम अपने भवय के स्वरूप को पहचान सको।

पर मुझे तो हर बार तुम्हें आवाज देनी ही है, हर रात तम्हें पुकारते ही रहना है, प्रत्येक चूँम में तुम्हें उपने पास बताने रहने का नियमण बताते ही रहना है, क्योंकि तुम्हारा मेरा सम्बन्ध इस नम्य का ही नहीं, पिछले पच्चीस जन्मों का है, तुम्हारा मेरा सम्बन्ध केवल गुरु और शिष्य का ही नहीं, प्राण और आत्मा का है, तुम्हारा मेरा सम्बन्ध साधक या शिष्य का ही नहीं, जीवन की प्रेरणा और चेतना का है, और

इसीलिए वह आवाज देना, यह पुकारना, मेरा कर्त्तव्य है, मेरा धर्म है, मेरा चिन्तन है, और मैं प्रतिशत अपने मानस के राजहंसों को आवाज देना ही रहेगा।

यह बात भी सत्य है कि तुम मेरी बात सुन रहे हो, यह बात भी सत्य है कि मेरी आवाज तुम्हारे कानों से टकराती है, यह भी सत्य है कि मैं जो आवाज देता हूँ, उसकी आकार तुम्हारे वित पर पड़ती है, परन्तु उसका प्रभाव, उसका असर शब्दों द्वारा के लिए ही होता है, और मैं बाहता हूँ, कि यह अमिट हो जाए, मैं चाहता हूँ, कि यह पृण हो जाए, मैं चाहता हूँ, कि यह बार बार आवाज देने का कम सक जाए, एक बार ही तुम पूरी तरह से मेरी आवाज को, मेरे निमंत्रण को आत्मगात कर जाओ, अपने हृदय में उत्तर सको, अपने हृदय के तारों को झंकत बर ग्यको, तुम्हें थोड़ी भी और तीव्रता आ जाए, तुम्हारे प्रद्युम्नों में और सघनता आ जाए, तुम्हारा सकल्प शक्ति में और बुद्धि हो जाए, तुम्हारे समर्पण में और पृष्ठों आ जाए, और तुम पूरी तरह से मेरे मानस से पकाकार हो सको।

इसके लिए थोड़ा सा... बहुत थोड़ा सा प्रयत्न और करना है, तुम अपने पंख तो फड़फड़ा रहे हो, पर थोड़ा सा साक्षरता में ऊपर उठने की हिम्मत और दिखानी है, तुमने अन्तर्भूत की स्वच्छ झील में अपना चेहरा तो देखा है, और तुम्हें विश्वास भी होने लगा है, कि तुम्हारे चेहरे और तुम्हारे अन्तर्भूत के चेहरों में बहुत बड़ा अन्तर है, परन्तु तुम में कभी उचित लगाने की हिम्मत नहीं आ पाई है, अभी पंख नीले कर आकाश में ऊपर उठने की हिम्मत नहीं जुट गई है, और इसके लिए इस जल्म में ही प्रवत्तन कर लेना है, इस समय ही अपने पंख पेला देने हैं।

इसी काण अपनी संकल्प शक्ति
को अनुबृत कर देना है, इसी काण
जह निश्चय कर लेना है, कि
तुम्हें कोई को बीच जिन्दगी
नहीं बितानी है, इसी
जह यह निश्चय
कर लेना है कि
तुम्हें करकर पत्थरों को
नहीं चुनना है, क्योंकि
तुम्हारी नियति मानी चुनने की
है, क्योंकि तुम्हारी नियति पूरे पंख
फलाकर आकाश में उड़ने की है, क्योंकि
तुम्हारी नियति इस पारवार वाले धरे को
साहस के साथ तोड़ कर आनंद के ऊपर भे पूरी
तरह से इधरकी लगा लेने की है।

और अब इसमें विनाश करना ठीक नहीं, क्योंकि
इस अधिकार के धरे में चिमट कर तुमने जीवन का बहुत बड़ा
हिस्सा सामाप्त कर दिया है, और इस वजह से तुम्हें कंकण-
पत्थर नथा मानियों में अनंत करने की क्षमता नहीं रही, जमीन
पर चलने और आकाश में उड़ने के आनंद के बीच अनंत
करने का चिन्तन नहीं रहा, और इसीलिए अपने मन का
अधिकार दूर करने में तुम समर्प नहीं हो सके हो।

पर इसका तात्पर्य यह नहीं है, कि तुम राजहेम नहीं हो, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि तुम इस मानसरोवर झील में
दुखों की लगान के योग्य नहीं हो, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि
तुम गुरु आकाश में विनरण करने के योग्य नहीं रह। इसका
करण मात्र तुम्हारी कम नोटी है, तुम्हारी अकर्मण्यता है, तुम्हारी
सकल्प शक्ति को न्यूनता है।

यदि सन्ति गुणा पुंसां विकसन्त्वेव ते स्वव्यम् ।
त हि कस्तुरिकामोदः शपयेन विभाव्यते ॥
— मनुष्य में यदि गुण होते हैं तो उनका प्रकाश
स्वयं हो जाता है। कस्तुरी की सुगन्ध को शपथ से
सिद्ध नहीं किया जाता है।

पर मैं तुम्हें भली भाँति पहचानता हूँ, मुझे तुम पर
पूरा पश भरोसा है, मेरी जान-दृष्टि तुम्हारे अन्तर को
धेद कर, अन्दर के सारे स्वरूप को देखा है और
इसीलिए मुझे विश्वास है कि तुम बही हो जो
मेरे प्राणों के अंश हो, मेरी आत्मा की
घड़कन हो, मेरे मानस के राजहेम
हो।

पर अब और
जन्म लेना ठीक नहीं है,
मत यह बार बार
जन्म मरण के
ब्लैम में झलना ठीक
नहीं है, अब अब बार
गल-मूत्र परी जिल्दगी में जीवे
के लिए विश्वा होना ठीक नहीं है,
अब यह कोई के बीच आपने आप को
मन मार कर बिठाए रखना ठीक नहीं है, अब
और चिनाएँ सहा नहीं है, अब जीर समय नहीं
है, अब तुम्हें आने बढ़ना है, अब तुम्हें मेरे शरीर को
नहीं, मेरे अन्दर के स्वरूप को जानना है, अब मेरे प्रबन्धन
नहीं, मेरे मीन की भाषा को समझना है।

और अब तुम्हें अपने पंख पूरी तरह से फड़फड़ाने हैं,
अब तुम्हें अपने सन में साहस का सचार करना है, गुरु को
इधर में समाइन कर उड़ने की क्षमता मन में संगोनी है, सरे
बंधनों को तोड़कर मृक आकाश में विनरण करने को पत्रिता
प्रियल बरनी है, और जल साधा के आकाश में, ज्ञान के आकाश
में, ज्ञानक के साकाश में, पृणाल के आकाश में उड़ते हुए जीवन का
रस, गीवन का आनंद और जीवन की पूर्णा प्राप्ति कर लेनी है।

और इसालिए मैं तुम्हें कह रहा हूँ कि तुम मेरे मानस
के जनहेम हो, और मैं हर पल, हर काण तुम्हारे साथ ही,
तुम्हारे ठीक अन्दर ही हूँ और तुम्हारे साथ उड़ने की उद्धत हूँ,
प्रसुत हूँ, तैयार हूँ।

निः शुल्क

सर्वथा मुफ्त

प्रियतमा अप्सरा माला

प्रियतमा अप्सरा एक ऐसी श्रेष्ठ जापसरा है, जो कठोर हड्डय को भी कोबल भावनाओं से ओट-प्रोत बना देती है और वह व्यक्ति भी उस पर रीझ कर जीवन में आजन्द से सराबोर हो जाता है और फिर यह अप्सरा प्रदान करती है सुखिणित द्रव्य, विविध आभूषण तथा आपने साथक की समस्याओं का समाधान।

इस अप्सरा को आप सिद्ध कर सकते हैं और सिद्ध होने पर यह अप्सरा केवल आपको ही दिखाई देनी, आपके आस-पास अन्य लोगों को कुछ भी अनुभव नहीं होगा। अप्सरा साधना से समझ साथक के मन में एक नवीन उत्साह व्याप्त हो जाता है, उसके व्यक्तिगत में सम्मोहन व्याप्त हो जाता है, जिससे लोग उससे भिन्नता करने का प्रयास करने लगते हैं।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान — “ज्ञान दान”

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया जाया है। आप किसी एक व्यक्ति को पूर्ण गुरुदेव की इस ज्ञान परम्परा से उसे पत्रिका का वार्षिक भवनर्य बनाकर जोड़ सकते हैं। साथ ही आप ₹१० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मालियों में, अस्पतालों में, समाजों में, मंगल कापों में, बालपाणी को, निधन परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोचित कर सकते हैं, जो उसी तक इससे बोधित है। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शैतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (पृष्ठ २३ पर संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक ३) में जै दें, कि “मैं आपने एक परिचित को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाना चाहता हूँ एवं १० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप निः शुल्क ‘प्रियतमा अप्सरा माला’ ३४८/- (१० पूर्व प्रकाशित पत्रिका व वार्षिक सदस्यता के ३००/- + डाक व्यय ४८/-) की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर कुड़ा लूँगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे १० पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक बारा भेज दें एवं मेरे मित्र को एक वर्ष तक पत्रिका भेजते रहें।” आपका पत्र जाने पर तथा ३००/- + डाक व्यय ४८/- = ३४८/- की वी. पी. पी. से ‘प्रियतमा अप्सरा माला’ भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपचार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। वी. पी. छूटने पर आपको दस पत्रिका भेजकर आपके मित्र को पत्रिका सदस्य बना दिया जाएगा।

सम्पर्क अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१, (राज.)

फोन - ०२९१-४३२२०९, टेली फैक्स: ०२९१-४३२०१०

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimal Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India. Phone : 0291-432209

इस मला को किसी भी शुक्रवार को गवि १० बजे के बाद शुद्ध जल से स्नान कराएं तथा पोल कर किसी तांबे के पात्र में स्थापित करें। यंत्र पर कुंकुं, अक्षत, सुगन्धित इव एवं गुलाब के तीन पुष्प चढ़ाकर प्रियतमा अप्सरा प्राप्ति की इच्छा व्यक्त करें। भाष्यक को बाहिर कि वह सुन्दर वस्त्र पहन कर तथा इव लगाकर इस साधना को करें। फिर उसी मला से ‘ॐ श्री हीं प्रियतमे प्रियकरि सुखं साधय साधय अ॒ नमः । (Om Shreem Hreem Priyatame Priyakari Sukham Sadhay Sandhay Om Namah) मंत्र की पांच माला सम्पन्न करें। इस विधान को ११ दिन तक करें, फिर मला को जल में विसर्जित कर दें।

त्रि

वि
श्व
ता

मन के
कहने का
जा नहीं।
देता नहीं।
समा है। न
बनाते
में या
साध्य
वह हि

की ही
जिस
को सं
से वे र
पीड़ा
के वि
ओर।
काम,
कर स

विपत्ति उद्धारक गुरुतंत्र स्त्रेण शिव सायुज्य साधना

यह संसार भी विष का सागर ही है, जो छल, झूठ, कपट, हिंसा, व्यभिचार, समस्या रूपी विष की बूँदों से भरा हुआ है... प्रत्येक मनुष्य चाहे-अनचाहे इनका पान करता ही रहता है और इसमें उलझ कर उत्साह, अंग और जीवन का अर्थ भूल कर मृत्यु की ओर अगसर हो जाता है। और तब अमृत्यु की ओर कोई ले जा सकता है, तो वे गुरु ही होते हैं, जो कि शिव का साकार रूप होते हैं।

म

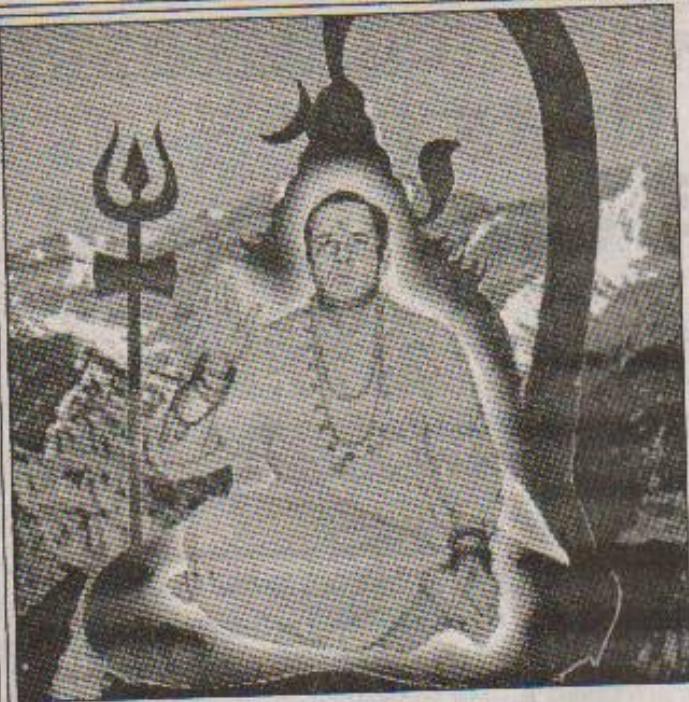
न ही मनुष्यों के लिए बन्धन और मोक्ष का कारण है। व्यक्ति का मन अर्थात् जिन जैसी इच्छा करता है, उसे वैसा ही प्राप्त होता है। मन के साथ ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, भय, पीड़ा, कष्ट की स्थितियाँ मंलग्न हैं, अतः प्रत्येक मनुष्य इन स्थितियों का अनुभव करता है। मन पर नियंत्रण हुए जिन पूर्णता सम्भव नहीं होती। मन जब कामासक्त होता है तो उसे कामान्ध बना देता है। जब मन क्रोधयुक्त होता है, तो व्यक्ति क्रोध में कुछ नहीं देख पाता और अनिष्ट कर देता है। जब मन में लालच समा जाता है, तो अच्छे-बुरे का जान का समान्त हो जाता है। जब मन आलरण से घस्त होता है, तो व्यक्ति को आलसी बना देता है। जब मन नियंत्रित हो सकेगा, तभी वह साधनाओं में या योगिक क्रियाओं में पूर्णता प्राप्त कर सकेगा, तभी वह साधक की वास्तविक प्रवृत्ति पर अपने पैर रख सकेगा, तभी वह शिवन्त्व प्राप्त कर सकेगा, तभी वह शुरु में निमग्न हो सकेगा।

गुरु को परब्रह्म कहा जाया है, उसी विराट गुरु तत्व की ही तीन शक्तियाँ हैं— ब्रह्म, विष्णु और महेश। ब्रह्म को जिस प्रकार सृष्टि का निर्माता कहा गया है, उसी प्रकार शिव को संहारक कहा गया है। गुरु की शिव रूप में साधना करने से वे संहार ही तो करते हैं, शिष्य के संसार (उसकी आंतरिक पीड़ाएं) का, शिष्य के अंत में चल रहे द्वन्द्वों का, उसके मन के विकारों का, वासनाओं का, तृष्णाओं का, दुःख, विषाद और चिन्ताओं का। अपने त्रिनेत्र से वे शिष्य के पाप, संशय, काम, क्रोध, अहंकार, आलरण, भय आदि व्याधियों को भस्म कर स्वयंवत ही तो बना लेते हैं।

योशीजन और वेवशण तो आमृत प्राप्त कर उसी में निमग्न हो जाते हैं, जबकि अश्वान शिव योथ-आमृत और आनन्द में लीन होकर विष अथवा जीवन की विषमताओं में लीन हो जाते हैं। इसी कारण वे वैवाधिवेद हैं। वही स्वरूप शश्वत्का का श्री होता है। इसी कारणवश उन्हें अश्वान शिव का प्रकट स्वरूप कहा जाता है। स्वयं आमृतमय होते हुए श्री विष में निमग्न रहना— यह लक्षण केवल किसी विशाट सत्ता में ही हो सकता है।

सद्गुरु के इस संहारक स्वरूप द्वारा शिष्य के जीर्ण मन व चिन्तायुक्त वित्त का नहान नाश होता है तो वहाँ एक नवीन शिष्य का प्रादुर्भाव होता है, जिसमें गुरु पूर्ण शिवस्वरूप में उसके रोम-रोम में विद्यमान होते हैं, जहाँ फिर चिन्ता नहीं होती, नहान तनाव नहीं होता, जहाँ विभव तो होता है, जहाँ सम्पन्नता तो होती है, परन्तु किसी प्रकार को कोई लिप्ति नहीं होता, व्यक्ति के पास सब कुछ होते हुए भा वह त्रिलिङ्ग रहता है। और वही तो इस साधना का सार है, और पूर्णता का वही तो सोपान है।

जब हम भगवान शिव के मन्दिर में जाते हैं, तो दोनों हाथ जोड़कर, दसों उंगलियों को परस्पर जोड़कर के अपने दिन को सूकाकर प्रणाम करते हैं। यह दस-बान का चिन्तन है, कि मैं अपनी पांच कर्मेन्द्रियों और पांच ज्ञानेन्द्रियों— इन



दसों इन्द्रियों को आबद्ध करके और अपने सिर में जो बुद्धि है, जो अहंकार है, उसको शिराता हुआ मैं आपको प्रयाम करता हूँ। यह प्रगाम करने की वृत्ति विनीत होने की वृत्ति है, यह समर्पण का प्रतीक है।

यदि हमें उस परमात्मा में लीन होना है, सद्गुरु के चरणों में निमन होना है, तो हमें समर्पण होने की क्रिया सीखनी पड़ेगी। समर्पण होने के लिए अपनी पांच कर्मेन्द्रियों और पांच ज्ञानेन्द्रियों का एक साथ आबद्ध करना पड़ेगा, ज्ञान को कर्म पर हाथी करना पड़ेगा। इसलिए जब हाथ जोड़ते हैं, तो पांच ज्ञानेन्द्रियां पांच कर्मेन्द्रियों पर हाथी होती हैं, वोनों परस्पर जुड़ जाती हैं। और फिर जुड़ कर हम दोनों हाथ को सिर पर टिका देते हैं, तो इसका अर्थ है कि हम अपनी बुद्धि को ज्ञानेन्द्रियों के हवाले कर देते हैं।

अब मेरे पास कोई तर्क नहीं है, मेरे पास निस्ती प्रकार का सोहा नहीं है, मैं अपने आप में दूकने की क्रिया कर रहा हूँ, मैं अपने आप में प्रणिपात होने की क्रिया कर रहा हूँ। जब ऐसी क्रिया होती है, तब ज्ञान का उत्तर होना है।

यह वरतनः वंच विकारोऽपवं अष्ट बाधाओऽका संधार कर शिव की भासि कुबेरवत होते हुए भी गृहस्थ योगियों की तरफ निर्लिप्ता और आनन्दमन्त्र स्थिति प्राप्त करने की साधना है।

संसार में जो कुछ है, उसे तोड़ना-मरोड़ना नहीं है, तुम्हें उसके अनुरूप बनना है, तुम्हें अपने अहंकार को समाप्त करना है, और सारी चित्त वृत्तियों को, सारी कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों को एकत्र कर उस संसार के प्रवाह में निपत्ति कर देना है। गुरु के शिवस्तररूप को समझना है, तो धारा के अनुरूप बहकर समुद्र में लीन होना होगा, अपने को समाप्त करना होगा।

हमारे चित्त की तीन वृत्तियाँ हैं—

पहली यह कि जब हमें कोई दुःखव समाचार मिलता है, तो हम दुखी हो जाते हैं, जब हमें कोई सुखव समाचार मिलता है, तो हम खुश हो जाते हैं। यदि कहीं थोड़ी भी परेशानी आती है, तो हम परेशान हो जाते हैं। यदि कुछ प्राप्त हो जाता है, तो हम बहुत आनन्द अनुभव करने लग जाते हैं, यह अनुभव करना जलग चोज है और अनुभव युक्त होना जलग चोज है। भगवान शिव आनन्दयुक्त

है। पहले तल पर व्यक्ति सुख में सुखी होता है, दुख में दुखी होता है, जैसा जीवन चल रहा है, उसे वैसे ही जीता है। जीवन के अनुरूप बनने की कोशिश करता है। शिवत्व प्राप्त करने के लिए हमें पूर्ण रूप से नमन युक्त और समर्पण युक्त होना पड़ेगा, तभी शिव के उस आनन्द में लीन हुआ जा सकता है।

भगवान शिव तीनों लोकों के स्वामी हैं, कुबेराधिपति है, फिर भी अमशान में बैठे हुए हैं, निरिष्ट हैं, वे धन सम्पदा को भोगने में लगे हुए नहीं हैं, धन सम्पदा तो उनके सामने बिघुरी हुई है, पर वे समझते हैं कि जीवन में अनुरक्त होने में अनुकूलता प्राप्त नहीं हो सकती। भगवान शिव भगवती शक्ति के वर्ति हैं, फिर भी कोई अहंकार नहीं है, बिल्कुल निश्चिन्त, निर्भाक बैठे हैं। संसार की घटनाओं से प्रभावित नहीं हैं। उनके चेहरे पर जो मस्ती है, जो आनन्द है वह प्राप्त हो। जीवन तो वही है, जहां मृत्यु नहीं आ सकती, लोभ, क्रोध और मोह जिसे स्पर्श नहीं कर सकता। निरन्तर मुस्कुराहट की वर्षा होती रहती है। जीवन के उस तथ्य को केवल शिव के माध्यम से ही समझा जा सकता है। और कोई देवता इतना निर्दन्त और निश्चिन्त नहीं है। इतनी धन सम्पदा कुबेरवत होने के बाद भोग में लीन हुआ जा सकता है, यह सब होते हुए भी निर्लिप्त, तटस्थ होना केवल शिव द्वारा ही सम्भव है।

पठन द्वारा तंत्र नोलकर्पणं गुणत्वं

इन वाक्यों के लिए हलाहल को अपने कर्पण में अवश्य कर देवता आँओ को अमृत का यात्रा करता है। दौरं वही किया तो गुरु को कबनी पड़ती है, जिसके जलविहित अद्वाद, अहंकार, पाप, इन जाति दोष कर्मी हलाहल को अपने अवश्य करता है। उसे ज्ञात कर्मी अमृत का यात्रा करता है। शिव और गुरु की किया आँओ में नाम्य होते हुए भी जिज्ञाता है। शिव ने केवल एक बाब ही विष का कर्पण में धारण किया था किन्तु गुरु को तो प्रतिक्रिया, प्रतिपल समर्पण शिष्यों के विष को अपने अलंब में धारण करता है।

धन हो, वैभव हो, परन्तु चिन्ताप्रस्त नहीं हो, गोप्यस्त नहीं हो, पर नहीं हो कि क्या होगा अगर चोरी हो नहीं। भगवान शिव को मृत्युजय कहा गया है।

ज्ञान का दूसरा तल गुरु है। शिवत्व को प्राप्त करने का मतलब मृत्यु पर विजय प्राप्त करना, हम निश्चिन्त हो सके, रोगमुक्त हो सके। परन्तु यह तब सम्भव है जब विनीत भाव होकर गुरुचरणों में पहुंचा जाए, जो मार्गदर्शन कर सकता है, जो शिवत्व प्रदान कर सकता है। 'शिवोऽहं गुरुर्व गुरुर्व शिवोऽहं' शिव को गुरु के रूप में ही देखा जा सकता है, गुरु के माध्यम से ही शिवत्व प्राप्त किया जा सकता है। गुरु में ही शिव के दर्शन किया जा सकता है, परन्तु उसके लिए निष्ठा होना आवश्यक है।

यदि अहंकार है, तो गुरु तुम्हें स्वीकार नहीं कर सकता। यदि पूर्ण निष्ठा भाव से शिव्य उपस्थित हो, तभी गुरु शिव्य को शिवत्व दे सकता है। 'गुरुर्वेदो महेश्वरः' गुरु स्वयं महेश्वर है, हमारे सामने शिव तो नहीं है, पर शिव का मूर्तिमंत स्वरूप गुरु के रूप में हमारे सामने है, इसी लिए गुरु को शिव कहा गया है।

मैं नगस्कार करता हूं उस कुबेर के अधिपति शिव स्वरूप गुरु को, उस अमृतगय शिवरूप गुरु को, उस मृत्युनीयी शिव स्वरूप निरिलेश्वर को, परन्तु अभी मैं उनके इस स्वरूप को पहिचान नहीं सकता हूं। यदि हम शिव तक पहुंचे ही नहीं तो हम मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ही नहीं सकते, संसार में शिव के अलावा कोई दूसरा देवता है नहीं जो मृत्यु पर विजय प्रदान कर सकता है।

संसार में अहं प्रकार की बाधाएँ हैं -

- | | | |
|--------------------|-----------------|----------------------|
| 1. मृत्यु, | 2. रोग | 3. क्रण, |
| 4. कृदम्ब अथ, | 5. बुद्धिहीनता, | 6. शत्रु आक्रमण, |
| 7. गृहस्थ न्यूनता, | | 8. ज्ञान की न्यूनता। |

आठों प्रकार की बाधाओं को गुरु की शिव स्वरूप साधना द्वारा ही सम्भव है। शास्त्र इस बात को स्वीकार करता है, भगवान शिव कोई जलग सत्ता नहीं है, गुरु को ही भगवान शिव माना गया है।

जिस समय शिव्य में यह भावना आ जाती है, कि जब मैं बैठूं तो गुरु का बिम्ब मेरे सामने स्पष्ट हो, जब मैं चिन्तन करूं तो केवल गुरु शब्द ही मेरे चिन्तन में हो, गुरु में पूर्णतः जीन हो सकूँ। गुरु कहते हैं - "मैं शिव हूं और जब मेरे पास चिन्ता नहीं है, तो तुम्हें भी चिन्ता नहीं होनी चाहिए, तुम्हारी जो चिन्ताएँ हैं, वह तो मुझे अर्पित कर देनी है, तुम्हें तो मस्ती से निश्चिन्त हो जाना है, तुम्हें तो अपना हाथ गुरु के हाथों में सौंप देना है।"

गुरु दो टूक शब्दों में समझा रहा है, कि शिव्य कोई अलग सत्ता नहीं है, अलग रह कर तुम तो समान हो जाओगे, चिन्तायुक्त हो जाओगे, तुम्हें तो पूर्ण समर्पण होना है, गुरु इस शरीर का क्या उपयोग करे यह गुरु जाने। तब शिव्य गुरु से दूर नहीं रह सकता। फिर गुरु का कर्तव्य है, कि वह शिव्य को कैसे अग्रसर करे। शिव्य को समर्पण सिखाया नहीं जाता, कोयल को सिखाया नहीं जाता कि कैसे कूकना है, नदी को सिखाया नहीं जाता, कि कैसे समुद्र में विसर्जित हुआ जाता है। फिर गुरु का सारा ज्ञान अपने आप में शिव्य में आ जाता है।

तीसरा तल है पूर्ण रूप से शिवमय, आनन्दमय होने की क्रिया, पूर्ण रूप से निश्चिन्त और निर्भीक होने की क्रिया। रोम-रोम में गुरु को अंकित कर देने की क्रिया। फिर शिव्य का अलग कुछ नहीं है, फिर वह पूर्ण रूप से गुरुमय, पूर्ण रूप से शिवमय हो जाता है। तब उसमें नया ज्ञान, नया चिन्तन प्राप्त हो जाता है, तब अकेले बैठे हुए भी छवा में मंत्रों को सुन सकेंगे, अकेले बैठे हुए भी आनन्दमग्न हो सकेंगे, रोम-रोम से कोई आवाज उठ रही है, उसे सुन सकेंगे।

इसके लिए शरीर के रोम-रोम को चेतनायुक्त बनाना पड़ेगा और यह ही सकता है इस साधना से। तब चिन में किसी प्रकार की व्याकुलता नहीं आती, तब बुढ़ापा नहीं आ सकता। पंच विकारों एवं अष्ट बाधाओं का संहार करता हुआ शिव्य प्रब्रह्म तल से तीसरे तल की यात्रा सम्पन्न कर सके, इसी हेतु यह 'गुरु शिव सायुज्य साधना' प्रस्तुत है।

साधना विधि

इस साधना को 13.6.99 अवधा किसी सोमवार को सम्पन्न किया जा सकता है। शुद्ध भाव से मन के सभी विकारों एवं विचारों को दूर रखते हुए एकाग्रचित्त होकर उत्तर दिशा की ओर मुख कर शुद्ध बस्त्र धारण कर दें। सप्तमे शुरु चित्र को स्थापित कर धूप, दीप, पुष्प, कुंकुम, अक्षत से संक्रिप्त पूजन करें। फिर 'निखिल चैतन्य मंत्रों से सिद्ध पारव शुरु चंत्र' को किसी बात में पुष्ट्यासन देते हुए स्थापित करें। चंत्र के पास 'अचोर गुटिका' को स्थापित करें। हाथ में जल नेकर साधना में प्रवृत्त होने का संकल्प ले।

अंगन्यास

ॐ हृदयाय नमः ॥

(हृदय)

ॐ भूः शिवसे स्वाहा ॥

(शिव)

ॐ भुवः शिवबायै वषट् ॥

(चौटी)

ॐ रथः कवचाय हुँ ॥

(होड़ों बाहें)

ॐ भूर्भुवः ऋशः देवत्रयाय वौषट् ॥ (दोलो लेत्र, आङ्गा चक्र)

ॐ भूर्भुवः रथः अवत्राय फट् ॥ (उ बाब ताली बजाएं)

इसके बाद गुरुदेव का शिव रूप में ध्यान करें—

ॐ नमः शिवाय गुरवे लक्ष्मिवालन्द मूर्तये ।
तिथपञ्चाश्र शरानताय लिरालम्बाय ते जसे ॥
देवाधिदेव सर्वज्ञ लक्ष्मिवालन्द लक्षण ।
उमा रमण भूतेश प्रसीद करुणालिये ॥

ॐ बुक्केवाय तत्पुरुषाय नमः ॥

निम्न संदर्भ बोलते हुए यंत्र, गुटिका को घनान कराएं।

ॐ आयो हिष्ठा मयो भुवत्तान ऊर्ज दक्षतत
महेषणाय चक्षते । यो वः शिवततो बलसन्तन्य आज्ञयते
हठः उशीरिय मात्रः तप्त्ता अवज्ञ मात्रव वन्य क्षयाय
जिव्य आयो जनयथा च नः ।

श्री बुक्केवाय कलातं जगर्यामि नमः ।

वस्त्रं जगर्यामि नमः । तितकं जगर्यामि नमः ।
अक्षतान् जगर्यामि नमः । धूपं दीपं कवचामि नमः ।

मैत्रेय

भास्त्रचन्द्र लमस्तुभ्यं विद्वन्नहृत संवत्प्रव,
द्रात्राविद्यं गृहाणेऽ लैवेष्यं कृपथा प्रभो ।

श्री बुक्केवाय मैत्रेयं जिवेद्यामि नमः ।

फिर आवग्न कराएं एवं दक्षिणा द्वय अप्तित करें—

इह आच्यतीयं, दक्षिणा द्वयं जगर्यामि श्री
बुक्क चप्पक्षलेभ्यो नमः ।

अप्ते जीवन की सामृत बाधाओं एवं मन के विकारों,

सद्गुरुदेव जो जिस वृठ स्थ योगी की भाँति जीवन जीते
का मार्ग दिखाया है, उसी के सुलों को आठम्बाट करने
की साधना है यह 'गुरु शिव सादुज्य साधना'

दोषों, पापों की समाप्ति व आनन्द की स्थिति प्राप्त करने हेतु
कुंकुम एवं अक्षत को निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र पर चढ़ाएं—

ॐ अद्योवाय तमः । ॐ पशुपतये नमः ।
ॐ शर्वाय नमः । ॐ विकल्पाक्षाय नमः । ॐ विश्वकृपिणे
नमः । ॐ व्यश्वकाय नमः । ॐ कर्यदिते नमः । ॐ
भैरवाय नमः । ॐ शूलपाणीये नमः । ॐ इश्वानाय नमः ।
ॐ जग्धिकातन्दाय नमः । ॐ विश्वितेश्वराय नमः ।

फिर 'सोफद इकीक माला' से निम्न मंत्र की १५ माला

१४ दिन तक करें—

॥ ॐ शं शक्तरात्र तोकरञ्जनाय निखिलतेश्वराय नमः ॥

Om Sham Shankaraay Lokranjanay
Nikhleshwaray Namah

मंत्र नाम के पश्चात नोचे दिए रसोत्र का पाठ करें। ये
सामान्य तक इस क्रम को नियम करें, फिर यंत्र को पूजा स्थान
में स्थापित कर अन्य सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकट - 360/-

मत्रो बुद्ध्यहंकार चित्तानि नाहं ।

न च श्रोत्रजिह्वा व च ध्याणवेत्रे ।

व च श्योम भूमित्र तेजो व वायुः ।

विखिल सत्य रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं ॥१॥

न च प्राणसंज्ञो न तै चंचवायुः ।

व च चतुष्पातुर्न वा चंचकोशः ।

न वाक् पाणिधार्द न चौयस्थयायुः ।

विखिल सत्य रूपः... ॥२॥

व गै द्वेष रागो व गै लोक झोहै ।

मवो द्वैत से नैव भास्तर्य भावः ।

व धर्मो व चार्यो व कामो व गोदः ।

विखिल सत्य रूपः... ॥३॥

न युपय व पापं व सौर्यं ल दुःखः ।

व मंश्रो न तीर्थं व वेदा न यजः ।

अह शोजवं तैव शोजवं व शोक्ता ।

विखिल सत्य रूपः... ॥४॥

न मृत्युर्भंका व गै जाति भेदः ।

पिता द्वैत मै नैव भाता च जन्म ।

व ब्रह्मुर्भंमित्र गुरुद्वैत शिष्यः ।

विखिल सत्य रूपः... ॥५॥

अह विर्विकल्पो निराकार रूपो ।

विमुखाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणां ।

व चालंगतं द्वैत मृत्युर्भं तैव ।

विखिल सत्य रूपः... ॥६॥

सुक्त

- गु

नुक्ति

विन्दि

स्वाम

तप्त्ता

वद्धते

मुक्त

प्रार्थन

अ

व

कुंकुम

उसमें

अ

व

भूताप

निम्न

अ

व

का उप

आधार

करें-

गुरु हृदय स्थापन आधाना

प्र

तः समानादि निष्ठ किया से निवृत होकर पूजा स्थान में शुद्ध धोती नहन कर आसन पर बैठे। सामने चौकी पर इवेत या पीत बस्त्र बिछा कर सुन्दर गुरु चित्र स्थापित करें। उपने समीप ही साधना सामग्री – ‘गुरु स्थापन यंत्र’, ‘चेतना माला’, ‘रुद्राक्ष’ एवं ‘गुरु गुटिका’ तथा पूजन की अन्य समग्री रखें। गुरु चित्र के सामने किसी भाली में कुकुम से स्वस्त्रिक अंगाकर उस पर ‘गुरु स्थापन यंत्र’ को स्थापित करें। यंत्र के दाहिनी ओर गुटिका तथा बाई ओर रुद्राक्ष को रख कर धूप, धीप प्रज्ज्वलित करे। पहले पवित्रीकरण और आचमन करके दोनों हाथ ऊँड़ कर गुरु प्रार्थना करें।

प्रार्थना

ॐ लक्ष्मी मंजल मंजलव चेतन्यं वद्वं शुभम् ।
लक्ष्मीवरणम् लक्ष्मस्तुत्य गुरु पूजां लक्ष्माचरेत् ॥

उपने सामने किसी पात्र में बोड़ा जल लेकर उसमें कुकुम, अक्षत, और पुष्प की पंगुड़ियां मिला लें। उसके बाद उसमें सभी तीर्थों का आवाहन करें –

ॐ गं जे च यमुने चैव योद्वावरि लक्ष्मवति ।
जर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मैन् सर्वित्यं कुरु ॥

भूतापसारण

बाएं हाथ में अक्षत लेकर बाएं हाथ से छक दे तथा निम्न मंत्र बोलते हुए सभी दिशाओं में अक्षत छिड़कें –
अरयस्तर्पत्तु ते भूता वे भूता भूति स्त्रियतरः ।
वे भूता विघ्नकतर्पत्ते लक्ष्यत्तु शिवाह्नया ॥
इसके बाद ‘सर्व विघ्नान उत्सारय – हूं फट स्वाहा’ का उच्चारण करते हुए दाएं पैर की एही से ३ बार भूमि पर आघात करें। इसके बाद समर्पत गुरुओं को हाथ जोड़कर प्रणाम करें –

ॐ ऐं गुरुभ्यो नमः ।
ॐ ऐं परम गुरुभ्यो नमः ।
ॐ ऐं पवात्यश गुरुभ्यो नमः ।

गुरु गम्भ दिवस पर सम्पादन की जाने वाली इस साधना के महत्व के बारे में प्रियेता के मार्य-९९ अंक में विवेदन किया गया था, उसी साधना की पुजन विधि प्रस्तुत है।

ॐ ऐं पावलेष्टि गुरुभ्यो नमः ।

गुरु पंक्ति को प्रणाम करने के बाद उपने हृदय में गुरु तन्त्र को स्थापित करें –

ॐ आं हीं क्रों यं वं लं वं शं वं जं हौं हंसः श्री विश्विलेश्वरावरद्व देवतायाः प्राणा इह प्राणाः ।

ॐ आं हीं क्रों यं वं लं वं शं वं जं हौं हंसः श्री विश्विलेश्वरावरद्व देवतायाः जीव इह लिथतः ।

ॐ आं हीं क्रों यं वं लं वं शं वं जं हौं हंसः श्री विश्विलेश्वरावरद्व देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि ।

ॐ आं हीं क्रों यं वं लं वं शं वं जं हौं हंसः श्री विश्विलेश्वरावरद्व देवतायाः वाऽमगश्च चक्षु श्रीत्र जिह्वा प्राण प्राणा इहागत्य लुखं विवं तिष्ठन्तु लवाहा ।

अब उपने को गुरुत्व चेतना से सम्पन्न अनुभव करें।

मातृका व्यास (विनियोग)

दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग करें –

ॐ अस्य मातृका मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री उन्दः, मातृका सर्वस्वती देवता, हीं बीजाति, ऋत्रा शक्तयः अव्यक्तं कीलकं सर्वभीष्टं सिंहये मातृका व्यासे विनियोगः ।

इसके बाद निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए विभिन्न अंगों को दाएं हाथ से स्पर्श करें –

ॐ ब्रह्मणे ऋषवे नमः – शिव

ॐ गायत्रीच्छवक्षे नमः – हृदय

ॐ मातृका सर्वस्वत्ये देवतायै नमः – गुरु

ॐ हल्मयो वीजेभ्यो नमः – मूलाधार

ॐ नक्षत्रेभ्यः शक्तिभ्यो नमः – ढोजों पैल

ॐ अव्यक्तं कीलकाय नमः – सभी अंग

गुरुदेव का दोनों हाथ जोड़कर आवाहन करे—
 आवाहयतमि रक्षार्थं पूजार्थं च मम कुतोः ।
 हृषाग्रन्थं गृहणं त्वं पूजां वाजं च रक्षये ॥
 श्री गुरुकृपेवाय नमः आवाहनं लभर्पयामि ।

आसन

पुष्प का आसन है—
 ॐ सर्वभूतान्तरस्थाव लर्वभूतान्तरस्थावे ।
 कल्पयत्यम्बुपवेशार्थमासनं ते नमो नमः ।
 इदं पुष्पालं लभर्पयामि नमः ।

पादं

दो आचमनी जल चढ़ावे—
 यत् भस्तिलेश सम्पर्कत् परमात्मन लभत्वः ।
 तस्मै ते परमेशान पादं शुद्धाय कल्पये ॥
 इदं पादं लभर्पयामि नमः ।

अट्ठ

दुर्वक्षत समावृक्तं विस्त्र पत्रं तथा परम् ।
 शोभन शंखं पात्रस्थं गृहणार्थं महेश्वरः ॥
 अर्थं लभर्पयामि नमः ।

आचमन

मन्त्राक्षिण्यास्तु घबवारि लर्वं पापठरं शुभम् ।
 गृहणाचमनीयं त्वं मया भक्त्वा निवेदितम् ॥
 आचमनीयं लभर्पयामि नमः ।

स्नान

इदं चुशीतलं वारि स्वच्छं शुद्धं स्वरोहस्म् ।
 स्नानार्थं ते मया भक्त्वा कल्पित प्रतिगृहताम् ॥
 लग्नां लभर्पयामि नमः ।

वस्त्र

मावाचित्रं पटाच्छङ्गं निजगुह्योप तेजसे ।
 मम श्रद्धा भक्ति वाचं तुम्हं गृहताम् ॥
 वल्ग्रोपवस्त्रं लभर्पयामि नमः ।

यदि साधक किसी कारणवश इस साधना को २१ अप्रैल को प्रारम्भ नहीं कर पाएं, तो किसी भी माह की २१ तारीख को प्रारम्भ कर भक्तो हैं। ऐसा करने में कोई न्यूनता नहीं क्योंकि साधकों के लिए प्रत्येक २१ तारीख सद्गुरुदेव का जन्म दिवस ही है। यदि साधना नामग्री नहीं भग्न सके हैं, तो किन्हीं दो व्यक्तियों को पवित्रका क्षदस्यता धारण करना कर इस नामग्री को निःशुल्क प्राप्त कर लक्षें। इसके लिए आप अपने किन्हीं दो परिचितों के ढाक पते नोधम्पुर कार्यालय भेज कर उन्हें पवित्रका क्षदस्य बनावें। आपको ४३८/- की बी.पी.आरा साधना सामग्री भेज दी जाएगी तथा आपकी ओर से आपके परिचितों को वर्ष पर्वन्त पवित्रका भेजा जाता रहेगी।

(सन्धर्म: मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, मार्च १९९५, पृष्ठ: ६३)

तिळक

महावाक्योत्थं विज्ञावं जन्मधाडचं सुमनोहस्म् ।
 वित्तेष्वं चुरश्चेष्ट चन्दनं प्रतिगृहताम् ॥
 चन्दनं लभर्पयामि नमः ।
 लकुंकुं अक्षतान् लभर्पयामि नमः ।
 चन्दनं ते आसन चढ़ावे ।

पुष्पमाला

तुरीयं वन सम्पन्नं लालागुण मनोहस्म् ।
 अरन्नदं सोरभं पुष्पं गृहतामिदम् समस् ॥
 पुष्पमालां लभर्पयामि नमः ।

धूप, वीप

धूपम् आच्छापयामि नमः । दीयं दक्षयामि नमः ।

नीबेद्यं

शर्कराधूत लंदुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमं ।
 उष्णाद लम्बादुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृहताम् ॥
 प्रतु फलामि लभर्पयामि नमः ।

शुद्ध जल से पांच बार आचमन करावे ।

इसके बाव मुख शुद्धि के लिए पान समर्पित करें—

ताम्बूलं लभर्पयामि नमः ।

इसके बाव चैतन्य माला से निम्न मंत्र की एक माला

जप सम्पन्न करें—

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं एं परात्पराव परमहंसाव निरिवत्तेश्वराव
 धीमहि एं ह्रीं उ॒॑ नमः ॥

Om Hreem Ayeem Paramparaya Paramhansay

Nikhileshwarany Dhoomahi Ayeem Hreem Om Namah

फिर गुरु आरती सम्पन्न करके पुष्पांजलि समर्पित करें। यह ३ माह की साधना है, इसमें नित्य उपरोक्त मंत्र की एक माला जप करना अनिवार्य है, नित्य पूजन सम्पन्न करने की आवश्यकता नहीं है। उपरोक्त पूजन को हर माह की २१ तारीख को दुहरा ने तथा प्रसाद धर में समी को विनाशित करें। ३ माह बाद सभी सामग्री को नल में विसर्जित कर दें।

इस साधना द्वारा शनि, शनि, साधक के अन्दर गुरुदेव की समस्त इक्षियां स्वतः ही उतरने लगती हैं, आवश्यकता है तो धैर्य और संयम की।

गुरुक विशिष्ट प्रणीत

गुरु अवनन्त सिद्धि साधना

जिससे समर्थ मनोकामनाएँ पूर्ण होती ही हं।

प्र

जापिता बह्या को जहां सृष्टि का निर्माता कहा गया है, भगवान शिव को जहां संहारक कहा गया है, वही भगवान विष्णु को जगत का निलमकर्ता कहा गया है। इन तीनों आदि देवों में भगवान विष्णु ही ऐसे देव हैं, जिनके इंगित से संसार का गतिविधियों का संचालन होता है। 'गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णुः' — शिष्य के लिए तो गुरु ही विष्णु भी होते हैं। शिष्य का अर्थ है समर्पण, परन्तु शिष्य के नमन होने के पश्चात् यह गुरु का कर्तव्य होता है, कि वह शिष्य के सुख, दुःख में भौगोदार बने, उपनी तपस्यांश के माध्यम से वह शिष्य का कल्याण करे, अपने जान द्वारा उसके जीवन में जाने वाली बाधाओं से उसकी रक्षा करे, उसका एक कुशल अभिभावक की तरह पालन-पोषण कहा गया है, और उनके इरपी रूप के वरण गुरु के विष्णु कहा गया है।

गुरु भले ही शिष्य से सैकड़ों किलोमीटर दूर बैठे हों, परन्तु उनके मानस में प्रतिक्षण शिष्य का चिन्तन बना रहता है। वौचीम घण्टे में शिष्य भले ही एक बार भी गुरु को स्मरण करे, परन्तु सदगुरु तो वही होते हैं, जिनका शिष्य कल्याण से पुश्ट कोई चिन्तन नहीं होता। और यह शिष्य का भौगोदार होता है, कि उसे जीवन में ऐसे गुरु प्राप्त हों। यह गुरु का पालनधार अर्थात् विष्णु स्वरूप है।

भगवान विष्णु आदिदेव हैं और अनन्त देव भी हैं, जिन्हें समय की सीमा में नहीं जांधा जा सकता, उस अनन्त रूपी सदगुरु के विष्णु स्वरूप के नेत्र का एक अंश भी प्राप्त हो जाए, तो फिर जीवन में कोई न्यूनता रह जाय — यह ज्ञानमय

जीवन जीना है तो पूर्ण सुख, सम्मान, यश, प्रतिष्ठा, वैभव के साथ जीना ही पूर्णता है। सद्गुरु पुक कुशल अभिभावक की तरह अपने विष्णु स्वरूप में अपने प्रत्येक उस साधक का लालन-पालन करते हैं, जो यह साधना समर्पण करता है।

हे! श्री विष्णु आकाश तत्व के ऋषिषाता हैं, आकाश का तत्पर्य है — विशालता, महानता, कुचाई और ये सब मन को स्थितिया ही नो हैं—

कौन अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ना चाहता?

कौन अनन्त सिद्धियाँ प्राप्त नहीं करना चाहता?

उसके लिए व्यांक में विष्णुत्व का होना प्रबल आवश्यक है, व्यांक किंवा विष्णुत्व के नेतृत्व की क्षमता आ पाना सम्भव नहीं है। जिसमें विष्णुत्व का उद्देश्य नहीं है, वह तो केवल आँख भूंद कर एक निश्चित मार्ग पर ही चल सकता है, उसमें लीक से हट कर एक नवीन पद्धति से कार्य करने की क्षमता, होसला नहीं होता, ऐसा व्यक्ति तो पूरा जीवन भर जिसता ही रहेगा।

गुरु के विष्णु स्वरूप की साधना क्यों?

जिस प्रकार विष्णु को अनन्त कहा जाता है, उसी प्रकार गुरु तत्व का भी कोई अन्त नहीं है। यह साधना उसी अनन्त की साधना है, जो साधक के शरीर में ही नहीं, मन में आए दोषों का भी निराकरण कर उसमें तेज, कर्मशीलता का



॥ वारायणाय तु४यं नमामि ॥
॥ जगदीश्वराय तु४यं नमामि ॥

उद्घव कर, साधक को विशालता की ओर, ऊँचाई की ओर ले जाती है, सूक्ष्म से विराट की ओर, धूरतो से आकाश की ओर उठने की साधना। गुरु अनन्त शिष्य साधना ही तो है। इस साधना से साधक को निम्न उपलब्धियां प्राप्त होती हैं —

— इस साधना द्वारा साधक में नेतृत्व के गुण आ जाते हैं, उसमें हीन भावना समाप्त हो जाती है, साधक जहां भी जाता है, उसे यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, सम्मान प्राप्त होता है। उसकी वाणी में ओजरिकिता आ जाती है, जिससे लोग उसका कहना गमने लगते हैं। जिस कार्य में वह हाथ ढालता है, उसमें हर कोई सहयोग देने की भावना रखते हैं, और यही तो सफल नेतृत्व के लक्षण है।

— जहां विष्णु हैं, वहां लक्ष्मी स्वतः ही चली आती है। विष्णुत्व से समर्पन साधक के जीवन में अर्थ का अभाव तो

रहता ही नहीं है। उसे पूर्ण विश्व युक्त जीवन प्राप्त होता है, जहां किसी प्रकार की कोई कनी नहीं होती — धन, धान्य, बाह्यन, भवन, कीर्ति, आयु, पुत्र, पीत्र हर दृष्टि से उसका जीवन पूर्ण होता है।

— साधक के व्यक्तित्व में एक अद्वितीय मोहिनी आकर्षण व्याप्त हो जाता है। पुराणों में कथा आती है कि नव समुद्र मंथन के अंत में अमृत कलश निकला, तो देव और अमुरों ने हलचल मच गई और हुआ यह कि कलश दानवों के हाथों में पहुंच गया। तब विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण कर दानवों से वह कलश बापस प्राप्त किया था। इस साधना के उपरान्त यदि साधक है, तो उसके अन्दर पुरुषोचित सौन्दर्य का वृद्धि होती है और यदि स्त्री है तो उसके अन्दर अपूर्व लावण्य व्याप्त हो जाता है।

— इस साधना को करने के बाद साधक में सात्त्विक विचारों का उदय होता है। वेष्णव बस्तुतः सत्य प्रधान पर्खति ही है, इस साधना के प्रभाव से घर में सात्त्विक वातावरण का निर्माण होता है, पुत्र-पुत्रियों ने मदनचार एवं शुद्ध विचारों का उदय होता है। वे सुसंस्कारों से युक्त होकर श्रेष्ठ कार्यों में संलग्न होते हैं, जिससे अधिक वक्तों की वशवृद्धि होती है। पर्नी में पतिव्रत्य और कुटुम्ब धर्म के प्रति चेतना प्रवृत्त होती है, उसमें सन्तान के कल्याण के प्रति जगरूकता बढ़ती है। ऐसे घर में देवताओं का बास होने लगता है।

— साधनाओं का अर्थ यह नहीं है, कि समस्याएं न आए, बाधाएं न आए, अदृश्यें न आए। बाधाएं तो आएंगी, विपत्तियां भी आएंगी, जो विष्णु का लेखा है वह तो होगा ही परन्तु साधना का अर्थ यह है, कि हम उन समस्याओं से जीत सकें, उनका प्रभाव हम पर न पड़े। साधक जीवन में पर्याप्त पर बाधाएं आती हैं परन्तु श्री गुरुदेव विष्णु रूप में शिष्य की हर समस्याओं पर विश्व प्राप्त करने का भाग साधक के लिए पहले में ही प्रशंसन कर देते हैं। एक श्रेष्ठ पिता की तरह वे अपने शिष्य का लालन-पालन करते हैं।

— नित्य सांसारिक व्यवहार करने से हमें तीन प्रकार के दोष व्याप्त होते हैं — १. वाणी दोष : हमें नित्य बोलचाल में और व्यवहार में असत्य उच्चारण करना पड़ता है, इस द्वारा की वजह से वाणी दोष व्याप्त होता है। २. मन दोष : हम चाहे अनंत हो विस्तो के प्रति धृणा, क्लोथ या दुर्भावना रखते हैं, उससे मन दोष होता है, ३. मुख दोष : आज के युग में तो घर के बाहर कई स्थानों पर भोजन करना होता है, जहां शुद्धता पवित्रता का ग्रान नहीं होता, ऐसी स्थिति में मुख दोष व्याप्त होता है। इन तीनों दोषों का शास्त्रों में एक मात्र गुरु विष्णु

जन्मन स्वरूप साधना ही उपाय है और यह भी कहा जाता है, कि वर्ष में एक बार इस विन इस साधना को सम्पन्न करने से सभी दोष समाप्त हो जाते हैं। इसके फलस्वरूप जीविते में शुद्धता, चैतन्यता और तेजस्विता आ जाती है और वह जीवन में सफलता की ओर अग्रसर होने लगता है।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि 27.6.99 अथवा किसी भी चतुर्दशी के विन (यह साधना सूर्योदय के पूर्व अथवा सूर्योस्त के बाद नहीं हो सकती है) स्नान आदि कर जैवन आसन विछाकर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाएँ और सामने 'गुरुत्व अनन्त सिद्धि यंत्र' को स्थापित कर दें।

ॐ श्री अनंताय नमः। मंत्र बोलते हुए यंत्र का संशोधन पूनन करें। संशोधन पूना में यंत्र को पहले जल से स्नान करा ले, और फिर दूध में, दही, घृत से, शहद से, शब्दकर से व पुनः शुद्ध जल से स्नान कराएँ। यंत्र को पोछ कर दूसरे पात्र में चन्दन से ऐँ ब्रांज मंत्र लिखकर उस पर यंत्र को स्थापित करें। यंत्र पर चन्दन का तिलक करें। यंत्र पर चन्दन का तिलक लगाएँ और एक संकेत पूष्ट अर्पित करें। इसके बाद साथक शुद्ध धी का दैपक व अग्रसर्ती लगाएँ।

इसके बाद साधक को चाहिए, कि वह पहले से ही मंगा कर रखे गए 'ब्रह्मायर्चस्वपूर्ण यज्ञोपवीत' को यंत्र के सामने रख दे। यह यज्ञोपवीत आपको कार्यालय से साधना सामग्री के साथ प्राप्त होगा। इस यज्ञोपवीत को यंत्र के सामने स्थापित कर दें और यज्ञोपवीत में आवाहन करें कि यज्ञोपवीत के प्रत्येक धारे में सद्गुरुदेव अनन्त स्वरूप में स्थापित हो।

इसके बाद यज्ञोपवीत को खोलकर दोनों हाथों में लेकर उसे आकाश की ओर ऊपर उठाएँ और 'ॐ सूर्याय नमः।' मंत्र द्वारा उस यज्ञोपवीत में सूर्य की तेजस्विता का आवाहन करें, और मन में यह पिन्तन करें कि इस यज्ञोपवीत के प्रत्येक धारे में गुरुदेव सूर्य की पूर्ण तेजस्विता के साथ स्थापित हो रहे हैं। सद्गुरुदेव मुझे पूर्ण तेजस्विता प्रदान करने में समर्थ हैं, मेरी हर प्रकार से लालन पालन करने में सक्षम हैं। अपने कोटि-कोटि सूर्य मण्डलों की रक्षियों द्वारा मेरे इस जीवन के व पूर्व जीवन के पार्थों के साथ जो भी तीन प्रकार के दोष व्याप्त हुए हैं, उनको स्फट-स्फट कर रहे हैं और मुझे पूर्ण चैतन्य एवं अंतर्नी बना रहे हैं।

ऐसी भावना मन में रखने हुए यज्ञोपवीत को नीचे उतार ले और फिर उसे समेट कर यंत्र के सामने स्थापित कर

दें। उपर यज्ञोपवीत को गुरुदेव का प्रतीक मानकर उसकी संशोधन पूजा करें, उन्हें नैवेद्य अर्पित करें और हाथ जोड़कर आजीवन कृपा बनाए रखने की प्रार्थना करें। यदि कोई विशेष इच्छा हो, तो उसका भी उच्चारण करें।

इसके उपरान्त हाथ जोड़कर विष्णु रूप में भगवान निखिल का सात्त्विक ध्यान करें—

ॐ श्रव शंख मूर्तिरूपः,
त्वरायणः त्वरत्तिरायश्च लक्ष्मि विष्णुः।
केवृथावृक्षकुण्डलवाज्ञ किरीटी,
हरी हिंश्चमय वपुष्मृत शशवधकः॥

फिर 'शालिग्राम' को यंत्र के ऊपर रखें तथा उसपर निम्न मंत्रों को बोलते हुए बनाएँ अक्षत चढ़ाएँ—

ॐ आद्याव शाश्वते नमः।	ॐ कूर्माय नमः।
ॐ पृथिव्यै नमः।	ॐ मणिद्वीपाय नमः।
ॐ यात्रिगताय नमः।	ॐ कल्पवृक्षाय नमः।
ॐ बत्तिसिंहासनाय नमः।	ॐ मुकुरिष्याय नमः।
ॐ देवेष्यै नमः।	ॐ द्यमाय नमः।
ॐ ब्राह्माय नमः।	ॐ देववर्याय नमः।
ॐ वैद्याय नमः।	ॐ अलवाय नमः।
ॐ पद्मामाय नमः।	ॐ आवरदक्षकाय नमः।
ॐ सत्त्वाय नमः।	ॐ पव्लेश्वराय नमः।
ॐ लिङ्गाश्रमाय नमः।	ॐ यज्ञम तत्त्वाय नमः।
ॐ नवायणाय नमः।	ॐ बुद्धेवाय नमः।
ॐ यशोपशाय नमः।	ॐ कर्णियद्वजलङ्घय नमः।
ॐ विजितेश्वराय नमः।	ॐ महायज्ञाय नमः।
ॐ विष्णुश्वराय नमः।	

इसके बाद साधक निम्न मंत्र की बैज्ञनिकी माला से ५ माला सम्पन्न करें—

॥ ॐ नमो नारायणाय अनन्ताय विष्णवे प्रभविष्णवे श्री ही उौ नमः ॥

Om Namo Narayannay Anantay Vishnave
Prabhavishnuvne Shreem Hreem Om Namah

मंत्र नपे के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न करें और यज्ञोपवीत को गले में धारण कर नें। जिस जल से यंत्र का स्नान सम्पन्न किया गया था, उसे पंचामृत रूप में महाग करें। यह साधना अत्यन्त प्रभावद्युक्त है, इसमें साधक की भौतिक जीवन की मरोकामनाएँ अवश्य पूर्ण होती हैं। साधना समर्पित पर यंत्र व माला जल में विसर्जित करें तथा विष्णु के प्रतीक रूप में शालिग्राम को पूजा ल्यान में स्थापित करें।

आप अपने किन्दी शो मिठों को ('जो पवित्रा सदस्य नहीं हैं') पवित्रा का सदस्य बनाए तथा पृष्ठ '२' के काँड़ के, इपर आपने उन दोनों मिठों के पूर्ण डाक पत्ते लिख कर मेनें। काँड़ मिठन पर आपको '४३८/' की दी. पी. ग्राम आपका साधना समर्पण भज तो जापनी तथा दोनों मिठों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पवित्रा भेजी जाएगी।

समाधि वृद्धिये

- तिजय कुमार शर्मा



माधि आज भी वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती है। संसारके प्रायः नामी धर्म-दर्शनों पर साधना पश्चिमियों में किसी न किसी रूप में समाधि की चर्चा अवश्य मिलेगी। तात्त्विक दृष्टि से समाधि चेतना की ऐसी कृज्ञस्वित अवस्था मानी गई है, जिसमें मनुष्य ईश्वर से सीधे साक्षात्कार करता है अथवा इस अवस्था में आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप में स्थित हो जाती है। ऐसी अवस्था में साधक का अस्तित्व नहीं जगत में पूरी तरह कट जाता है। इस अवस्था को प्राप्त करना कोई आसान काम नहीं है। साधक को वर्षों परियम और अभ्यास करना पड़ता है, तब ऐसी अवस्था की प्राप्ति होती है।

महर्षि पातंजलि ने अपने योग सूत्रों में समाधि प्राप्ति के लिए 'आष्टांग-मार्ग' का अनुपालन करने का निर्देश दिया है। आष्टांग मार्ग है - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, ध्यान और समाधि, ये सभी योगिक साधन हैं, अतः इनके क्रियान्वय के लिए किसी योग्य गुरु की आवश्यकता होती है। बिना गुरु के कोई इन योगिक प्रक्रियाओं का साधन करता है, तो उसे सफलता नहीं मिलती और स्नायु रोग होने की संभावना रहती है। अतः समाधि की साधना योग्य गुरु के निर्देशन में करना चाहिए।

महर्षि पातंजलि का एक प्रमुख सूत्र है - 'योग शिच्चत्वत्तिः निरोधः' अर्थात् चिन्त की वृत्तियों जब विसर्ज होने लगती है तो समाधि की अवस्था का ओप्प होने लगता है।

योगिक प्रक्रियाओं से प्राप्त समाधि की व्याख्या वैज्ञानिकों ने अपने ढंग से करने की चेष्टा की है तथा इसे वे 'शति-निद्रा' की संज्ञा देते हैं। संसार के अनेक परन्तु गहनतम

अ 'अप्रेल' 99 मंत्र-तंत्र-व्यंत्र विज्ञान '18'

समाधि का अर्थ है -

- अपने आप को पूर्ण सूप से विस्मृत कर देना।
- अपने आपको पूर्णता तक पहुंचा देना।
- पूरे छहांडक से अपने आपको एकाकार कर देना।
- समस्त छहांडकों अपनी आंखों से देखना।
- समस्त छहांडक में सशरीर विचरण करना।
- उस छहांडक की किसी भी हलचल में हुस्तकेप करके उसको अपने या सामने बाले के अनुद्धूल बना लेना।

- पूज्य सद्गुरुदेव डा० नारायणदत्त श्रीमाली

निद्रा की अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं, और जीवन के मीतर या पानी में घुस कर आवसीजन (प्राण-वायु) के अभाव में भी महानों नहीं, वर्षों निवित रहकर गुजार देते हैं। अनेक प्रकार की मछलियां, कच्छप, कुछ सर्प-विशेष, बन-बिलाव आदि जंतु प्रकृति प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए शति-निद्रा की अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं। निश्चित रूप से ऐसी अवस्था में जीव शरीर में विद्यमान रहने हुए मृत्यु की अवस्था को प्राप्त नहीं होता। किन्तु ऐसी किसी अवस्था की तुलना समाधि से करना निरांतर असंगत है।

दाशगिक गंधों में निद्रा को तमोगुण द्वारा उत्पादित अवस्था माना गया है। जैसे गहन अंधकार या अतल गहराई की अवस्था होती है, जिसके बारे में हमारे जान-क्षेत्र में कुछ भी प्रकाशित नहीं होता। यदि बोध कुछ होता है तो स्वानाकर्मण

रुमाधि की अवस्था तक पहुंचा व्यष्टि
जब नहीं होता। वह चाहे तो अवशिष्ट हो
सकता है। उसका चेहरा आपने आप में
दैवीन्द्रियमान होता है, वह अपने आप में उस
आकृद्ध से पूर्ण रहता है।

वह काल से ऊपर उठा हुआ व्यष्टित्व होता
है, समय उसका स्पर्श नहीं कर सकता, फिर
दो सौ साल, पांच सौ साल, हजार साल
उसके सामने कोई मायगे नहीं रहते। दस
हजार साल भी उसके लिए उठने ही होते हैं,
जितना कि एक सेकण्ड या एक मिनट होता
है, फिर वह व्यष्टि अजब्ता, निर्विकार होता
है, अद्योनिज होता है, और सब कुछ करते
हुए भी मात्र दृष्टा होता है।

— पूज्य पद्मगुरुदेव डा० नारायणदत्त श्रीमाली

का। नींद की अवस्था में हमारा अस्तित्व कहां होता है? कोई नहीं जानता। गहन अलान की अवस्था होने के कारण निद्रा की अवस्था में मनुष्य की समस्त पाश्विकता समाहित हो जाती है। वासनाओं के जब उद्रेक होते हैं, तो मन के संकल्प से स्वप्नों का सूजन होने लगता है। ऐसी अवस्था की तुलना समाधि से नहीं की जा सकती।

समाधि के सम्बन्ध में यह माना जाता है कि यह परम चेतना की अवस्था होती है। इसमें ईश्वरीय प्रक्षा का प्रस्फुटन होता है। अतः समाधि से जागने के बाद योगी से पूछा जाता है कि यह कहां था? तो वह प्रत्येक क्षण का अनुभव बखान करने लगता है। कारण यह है कि निद्रा की अवस्था में स्वरण-शक्ति लुप्त हो जाती है, जबकि समाधि में ऐसा नहीं होता। समाधि में चेतना संजग रहती है, अतः स्मरण-शक्ति विलुप्त नहीं होती। अतः समाधि से उठने के बाव योगी यह ज्ञान सकने में सक्षम होता है कि समाधि काल में उसकी चेतना कहां थी?

समाधि का तकनीक यह है कि इसमें योगी अपने प्राणों को ब्रह्माण्ड (सहभाव) में चढ़ा देता है। यह सत्संकल्प से होता है। योगी अपनी संकल्प-शक्ति से प्राण पर विजय प्राप्त करता है। वह अपनी इच्छा मात्र से शरीर को विर्वेदित कर सकता है। और जब चाहे जड़ शरीर में प्राणों का कंपन पैदा कर सकता है।

'परकाया प्रवेश' में ऐसी ही प्रक्रिया सम्पन्न होती है। इसमें योगी अपने प्राण को दूसरे शरीर में ले जाकर अवशिष्ट कर देता है।

इस सम्भावना से इकार नहीं किया जा सकता कि ऐसी प्रक्रिया में योगी की मृत्यु भी हो सकती है, किन्तु उसकी मृत्यु होती नहीं। पूज्यपाद गुरुदेव डा० नारायण दत्त श्रीमाली जी देसे ही समर्थ योगियों में है, जो परकाया प्रवेश को भी सम्भाव कर सकने में समर्थ है। समाधि की अवस्था में अपने शरीर से बाहर निकलकर ब्रह्माण्ड की यात्रा करने तथा अपने कठिपय वृक्षस्थ शिव्यों को दर्शन देने सम्बन्धी उनके अनेक संस्मरण लिपिबद्ध हैं और वैज्ञानिकों को चकित करने वाले हैं।

योगशास्त्रों में 'द्विशरीर' का एक सिद्धांत है, जिसके अनुसार योगी एक स्थान पर उपस्थित रहकर दूसरे स्थान पर प्रकट हो सकता है। योगेश्वर श्री कृष्ण के पास ऐसी सिद्धि थी। पूज्यपाद सदगुरुदेव के पास भी यह सिद्धि है। वे समाधि की अवस्था में कहाँ भी प्रकट हो सकते हैं। चाहे तो शिव्यों को सिद्धांतम् की यात्रा करा दें और गोरखनाथ जैसे किसी महाम
योगी से साक्षात्कार करा दें।

श्रीशैलम् तंत्र-पीठ (आंध्र प्रदेश) के निकट घनघोर जंगलों में एक मायाबी पोखर है, जिसकी लहरों से संगीत की ध्वनि उत्पन्न होती है। बतलाते हैं, तंत्र-पीठ की एक सिद्ध भैरवी अलंकनंदा ने वहाँ जीवित जल-समाधि ग्रहण की थी। वह भैरवी अपने सूक्ष्म रूप में आज भी विद्यमान है तथा तंत्र साधकों के समक्ष आज भी प्रकट होती है। शौक-दर्शन के भौतिक चिंतक एवं महायोगी नागार्जुन, गिरहें शून्यवाद का प्रवर्तक माना जाता है, की साधना-स्वती भी यही मानो जाती है। नागार्जुन समाधि-विद्या के विशेषज्ञ थे तथा ऐसा विश्वास किया जाता है कि वे आज भी जीवित हैं तथा उनके क्षेत्र में प्रकट होकर तांत्रिकों को दर्शन हाँ नहीं देते, अपितु उनका मर्म-निर्वेशन भी करते हैं।

भारतवर्ष के प्रायः सभी धार्मिक सम्प्रदायों ने समाधि को मान्यता प्रदान की है। इसके अनेक भेद भी स्वीकार किए गए हैं। बंगाल के धार्मिक सम्प्रदायों में एक 'सहजिया' सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय के अनुयायी विश्वास करते हैं कि जब मनुष्य की चित्तवृत्तियां शात हो जाती हैं, तो उसे अपने सहज रूपरूप (आन्तर्मरुप) का बोध हो जाता है। यह सहज समाधि की ही अवस्था होती है। इस अवस्था में जागृत रहते हुए भी मनुष्य की चेतना समरत भावनाओं से परे चली जाती है। तब मनुष्य को

दिव्य अनुभव होने लगते हैं।

सहज समाधि की प्राप्ति भाव-समाधि होती है। इसमें योगी किसी माव-विशेष में खो जाता है। तब उसका अस्तित्व उस भाव के अनुरूप हो जाता है। स्वामी विवेकानन्द के गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस भाव-समाधि में सिद्धहस्त थे। वे जिस भाव का चिंतन करते थे, उसी भाव का अनुभव करते थे। जैसे, यदि वे किसी पृथ्वे के बारे में सोचते तो स्वयं को पुष्पवत् अनुभव करने लगते थे। एक बार द्विषेष्वर-मंदिर के निकट स्वामी जी भाव-समाधि में खोये थे। उनका मन वहाँ की भूमि से एकाकार हो गया था। तभी एक गाय उधर से गुजरी। स्वामी जी को भहसूस हुआ कि जैसे गाय उनकी छाती पर से चल रही हो! ... और सचमुच जब स्वामी जी समाधि से उठे तो उनके वक्ष पर गाय के खुरों के निशान उभर आये थे। भाव-समाधि की ऐसी विशेषता होती है।

तात्त्विक दृष्टि से समाधि के बो मेद ही स्वीकृत किया गए हैं — सबीज और निर्बोज ! सबीज समाधि में सगुण ईश्वर का आधार ग्रहण किया जाता है, जबकि निर्बोज समाधि में निर्गुण ऋच्य का ध्यान करते हुए दिव्य तन्द्रा की स्थिति प्राप्त की जाती है। इसमें संदेह नहीं कि समाधि का बहुत कुछ सम्बन्ध 'हठयोग' से होता है। हठयोग अर्थात बलपूर्वक इडियों की वृत्तियों को नियन्त्रण करना। बार-बार ऐसा अभ्यास करने से योगी यदि चाहे तो अपने हृदय की धड़कन को भी नियंत्रित समर्थ तक रोक सकता है, किन्तु समाधि पूर्णतः हठयोग नहीं है। हठयोग केवल एक भाग है, जिस पर चलकर योगी परम

चेतना का साक्षात्कार करने में सफल हो जाता है। तब भौतिक शरीर से चेतना का सम्बन्ध विच्छेद भी हो जाता है। जैन धर्म में इसे ही 'समाधि-मरण' कहा गया है अर्थात् योगी समाधि की अवस्था को प्राप्त कर अपनी इच्छा के अनुसार मृत्यु को वरण कर सकता है।

समाधि की वास्तविकता को समझने के लिए हमें अपने अस्तित्व निर्माण के रहस्य को समझना होगा। हिन्दू धर्म-वर्णन के अनुसार ह्यारा अस्तित्व तीन स्तरों में विभक्त होता है। प्रथम स्तर भौतिक शरीर का होता है। इसके भौतर सूक्ष्म-शरीर प्रचलन होता है और सूक्ष्म शरीर के भौतर कारण-शरीर (आत्मा) छुपा होता है। जब भौतिक शरीर की मृत्यु होती है तो सूक्ष्म-शरीर कारण शरीर को लेकर अन्यत्र चला जाता है, ठीक उसी प्रकार, जैसे एक घमर एक पृथ्वे की गंध को लेकर दूसरे पृथ्वे पर जा बैठता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि सूक्ष्म-शरीर भौतिक शरीर के 'रजत-रज्जू' (सिलवर कार्ड) से संबद्ध होता है। मृत्यु के समाय यह रजत-रज्जू टूट जाता है और भौतिक शरीर से सूक्ष्म-शरीर अलग हो जाता है।

भौतिक शरीर से कभी-कभी सूक्ष्म-शरीर के अलग होने का अनुभव प्रत्येक मनुष्य को होता है। स्वप्न की अवस्था में इसी सूक्ष्म-शरीर का अनुभव होता है। प्रगाढ़ ध्यान की अवस्था में योगी सूक्ष्म शरीर से अपने भौतिक परिवेश से अल्पकाल के लिए बाहर निकल कर ब्रह्माण्ड के किसी भी भाग की यात्रा कर सकता है।

इस मास में होने वाली साधनाएं जो फरवरी अंक में प्रकाशित हैं

18.3. 99 से

नवरात्रि के ५१ प्रयोग

9.4.99

शशिवेष्य कामेश्वरी साधना

9.4.99

त्रिपुर भैरवी साधना

12.4.99

पालेश्वर शिव साधना

28.4.99 तक

यांछा कल्पनता साधना

किसी भी दिवस पोडश दुर्गा साधनाएं

अनेक प्रकार की भौतिक पूर्व आध्यात्मिक आकांक्षाएं प्रत्येक व्यक्ति के विकिणी वर्ष की शशिवेष्य कामेश्वरी जो सौन्दर्य, प्रेम और रस में अप्सराओं में किसी भी तरह कम नहीं है, और शोषण से सिद्ध हो जाती है।

मूल रूप से यह शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने की तीव्र महाविद्या साधना है। इस सम्पन्न करने से तंत्र आधारों का निवारण भी हो जाता है।

मंत्र लियद्वय प्रतिष्ठायुक्त रससिद्ध शुद्ध पारे से निर्मित पारद शिवलिंग की साधना करना आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, भूत, दश, विद्या, ज्ञान, प्रतिष्ठा, वैधव और वस्तुतः सामी कुछ प्राप्त कर लेने के बाबत दोष होता है।

पर्वोक्तमना पूर्ति की अचूक और सर्वश्रेष्ठ तांत्रोक्त साधना है इन साक्षत साधनाओं द्वारा जीवन की हर समस्या का हल मिल सकता है इन सिद्ध प्रयोगों में।

क्वानी अचिदानन्द प्रणीत

आधा शक्ति साधना सिद्धि जो कुण्डलिनी जागरण का आधार है

शि

छयके जीवन में यदि कोई होता है, तो मात्र गुरु ही होते हैं। गुरु साधना की एक स्थिति होती है, जब शिष्य की दृष्टि में देवी-देवताओं का कोई विशेष महत्व नहीं रह जाता, उसका मस्तक यदि कहीं झुकता है, तो मात्र पिता, इष्ट और गुरु चरणों के ऊपर अन्य कहीं भी नहीं झुकता है . . . और इससे भी ऊपर जब शिष्य के लिए इष्ट और गुरु में भी विभेद समाप्त हो जाता है, तब वह गुरु की शक्ति स्वरूप साधना करने का अधिकारी हो जाता है, व्यक्ति उसके मानस में तो यह स्पष्ट होता है, कि समस्त देवी-देवताओं की यदि कहीं उपस्थिति है, तो साक्षात् गुरुद्वय में है। फिर उन्हें छोड़कर अन्य कहीं मटकने से क्या लाभ?

यहाँ जब शक्ति शब्द का उल्लेख किया गया है, तो उसका अर्थ कोई दुर्गा या नगदम्बा से नहीं है, अपिनु शक्ति से तात्पर्य तो उस शाश्वत निखिल तत्व से है, उस गुरुत्व शक्ति से है, जिससे समस्त ब्रह्माण्ड गतिशील है, जिसके फलस्वरूप दिन और रात होती है, अतुरं बदलती है, जन्म और मृत्यु होती है . . . और वह शक्ति जिसके पुंजीभूत होने से अनेक देवी-देवताओं का प्रादुर्भाव हुआ है।

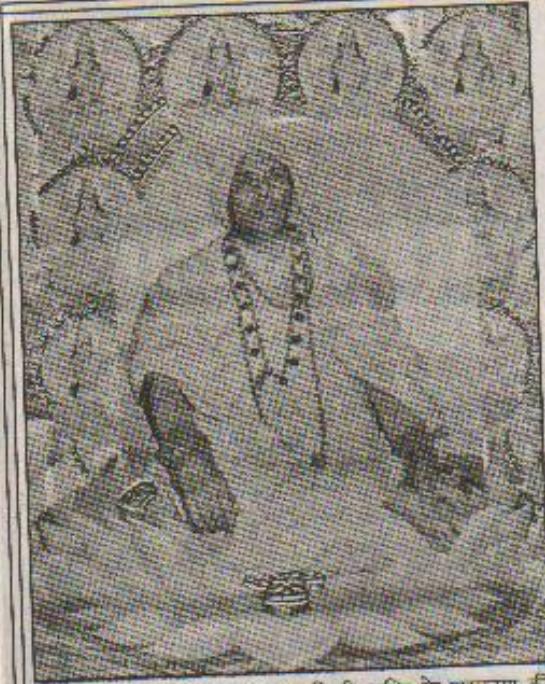
वह गुरुत्व शक्ति अदृश्य रूप में प्रत्येक जीव, प्रत्येक प्राणी में सुन्तावस्था में रहती है, जिसे कुण्डलिनी कहते हैं।

शरीर संरचना के अनुसार मानव मस्तिष्क तीन भागों में विभक्त है — मुख्य मस्तिष्क, लघु मस्तिष्क एवं अधः-लघु मस्तिष्क। इन तीनों में ही ‘अधः लघु मस्तिष्क’, जिसे वैज्ञानिक भाषा में Medulla Oblongata कहते हैं, जिसे रहस्यमय है। उसका आकार अपेक्षा के समान होता है, जिसके

समस्त ब्रह्माण्ड जिस शाश्वत निखिल तत्व से गतिशील है, उसी गुरुत्व शक्ति की यह साधना है, जिसके प्रभाव से कुण्डलिनी शक्ति का जागरण होने की क्रिया में त्वरा आ जाती है . . . और फिर गुरु की अणिमा, महिमा, लघिमा आदि अष्टादश सिद्धियां साधक को स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं।

भीतर कोई ब्रह्म भरा होता है। इसमें सूक्ष्मतम् जान तत्त्वों का एक समूह होता है, जो अपने स्थान पर गोलाकार छल्ले की तरह एक हजार बार धूगा हुआ होता है — इसी को योग भाषा में ‘सहस्रार’ का संज्ञा दी जाती है। यायः मनुष्यो मौजानश्चेतना मूलाधार के स्तर तक ही होती है। योग साधनाओं द्वारा इस शक्ति को मूलाधार से उठा कर सहस्रार में ब्रह्म अर्थात् गुरु तत्व से मिलन करा देना ही जीवन की पूर्णता है और योग सिद्धियों का सार है।

कुण्डलिनी इसी ही जीव की मूल शक्ति है, जिसके जाग्रत होने पर ही उसकी अनन्त की ओर की यात्रा का प्रारम्भ होता है। मूलाधार से सहस्रार की इस यात्रा में जो शक्ति मूल रूप से सहाय्य होती है, वह गुरु की शक्ति ही होती है। इस साधना द्वारा कुण्डलिनी जागरण की क्रिया में त्वरिता आ जाती है। यह विद्वान् साधकों से छिपा नहीं है, कि कुण्डलिनी जागरण ही मनुष्य जीवन का हेतु है, जब से शिव बनने की प्रक्रिया है, जिना कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत किए पूर्णता प्राप्ति सम्भव ही नहीं।



यह साधना उस कुण्डलिनी शक्ति के बाग्रण की आधारभूत साधना है।

जब साधक गुरु की शक्ति रूप में आराधना करता है, तो सदगुरु उसी रूप में साधक के शरीर में बीज रूप में स्थापित हो जाते हैं, और फिर इने-इने, जैसे-जैसे साधक साधनाओं को समर्पित करता जाता है, शक्ति का यह बीज उसके अन्दर विकसित होता जाता है। और यही शक्ति बीज फिर एक एक कर सातों चक्रों को प्रैदता जाता है। इसी दैवान साधक को अनेकों सिद्धियों की प्राप्ति होती रहती है। इन सिद्धियों को शास्त्रों में अष्टादश सिद्धियों के नाम से जाना जाता है—

1. अणिमा
2. महिमा
3. लघिमा
4. प्राप्ति
5. प्रकाट्य
6. ईशित्व
7. वशित्व
8. कामावस्थायिता
9. शुद्ध स्वरूप की प्राप्ति
10. दूर श्रवण
11. दूरवर्णन
12. मनोजन
13. स्वेच्छा-वयु
14. परकाया प्रवेश
15. इच्छित मृत्यु
16. देवकीड़ा वर्णन
17. संकलप सिद्धि
18. प्रभुत्व।

अणिमा, महिमा सिद्धियों का राम-बन्धु शरीर से होता है, अतः इन सिद्धियों का स्वामी अपनी इच्छा के अनुरूप सूक्ष्म या विराट रूप धारण करता है। लघिमा सिद्धि प्राप्त होने पर व्यक्ति कोई भी रूप धारण कर सकता है, आकाश की तरह फैल सकता है, एक स्थान पर रहने हुए दूसरे स्थान पर

जा सकता है, अवृथ्य होने की सिद्धि भी मिल जाती है। साधक अपने एक रूप को अनेक रूपों में प्रकट कर सकता है।

प्राप्ति नामक सिद्धि से साधक को किसी भी स्थान से मनोबोधित वस्तु मंगा लेने की शक्ति प्राप्त हो जाती है। प्रकाट्य द्वारा साधक को अंतरिक्ष में विचरण करने वाले देवी, देवता, यक्ष, किंजर, गंधर्व आदि के वर्णन होने लगते हैं। ईशिता की शक्ति से साधक किसी भी प्रकार का शरीर भारण कर सकता है। वशिता द्वारा साधक को तुरीयावस्था प्राप्त होती है, और उसे समस्त विषयों में आसन्ति समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार आगे की सिद्धियां प्राप्त करता हुआ साधक गुरु के शक्ति स्वरूप की साधना करते-करते अंत में गुरु की समस्त शक्तियों का स्वामी बन जाता है। फिर अलग-अलग सिद्धियों के लिए उसे अलग-अलग साधनाएं करने की आवश्यकता नहीं होती है।

शक्ति मूल रूप में नारी स्वरूपा कहा गई है। गुरुदेव के इस स्वरूप की साधना करने से साधक को स्वतः भी उनकी करुणा और वात्सल्यता प्राप्त हो जाती है। फिर उसके सामने शिष्य जीवन की कठिन और कहीं परोक्षा कसीटियां नहीं रहती, वह तो एक शिष्य की तरह इस साधना के द्वारा गुरु को मातृ रूप में देखता हुआ गुरु चरणों में निगम्न हो जाता है। और गुरुदेव भी करुणा के वशीभूत अपने शिष्य को गोद में उठाकर अत्यन्त मधुरता से सब कुछ प्रदान करते रहते हैं, और शिशुवत शिष्य को पता भी नहीं चल पाता कि वह बड़ा हो गया है, और उसके अन्दर विशेष शक्तियों एवं सिद्धियों का स्थापन हो गया है।

गुरुदेव के मातृत्व स्वरूप की इस साधना द्वारा साधक में मातृत्व गुणों का विकास होना कोई आश्चर्य बाली बात नहीं है। शिष्य के अन्दर फिर व्यतिक्रिय चिन्तन नहीं रह जाता, वह अपने कल्याण से ऊपर विश्व चिन्तन से आपूरित हो जाता है, परोपकार की भावना उसमें व्याप्त हो जाती है और देवत्व के यहीं तो लक्षण होते हैं, निश्चय ही इस साधना के द्वारा वह देवत्व का स्तर प्राप्त कर लेता है, सिद्धियों तो स्वतः ही उसमें निहित हो जाती हैं, उसके लिए उसे अलग से प्रयास नहीं करना पड़ता, क्योंकि समस्त सिद्धियों की प्रदाता मातृ स्वरूप में, पूर्ण करुणामयी रूप में गुरुदेव उसके अन्दर ही तो विराज रहे होते हैं, एक अविनाशी शक्ति बीज बनकर।

इस साधना द्वारा साधक के अन्दर निस गुरुत्व शक्ति के, बीज का स्थापन होता है, वही साधक को जीवन पर्यन्त गतिशील भी करता है। निस प्रकार अभिनी तीव्र होने पर ऊपर उठती है, उसी प्रकार साधक के भीतर शक्ति तत्त्व का विकास

जिनके बाद जगने जीवन में ऊपर उठता ही जाता है। परन्तु गुरुदेव की यह शक्ति भी उसी साधक को प्राप्त होती है, जो जगने दुर्लभ पर, अपनी दीनता पर, अपने आपको हीन नहीं समझता है, वरन् स्वामिमान का सागर उसके अन्दर लहरा रहा होता है और यह तभी सम्भव है जब गुरु में शिष्य की पूर्ण जीवना एवं अटल विश्वास हो।

इस साधना को करना प्रत्येक शिष्य का सीमान्य है, इस साधना को ३.६.९९ अथवा किसी भी माह के गुरुवार को समझ किया जा सकता है। इसमें 'गुरु मंत्र सिद्ध कुण्डलिनी जागरण यंत्र', 'गोमती चक्र' व 'शक्ति माला' आवश्यक हैं।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि वह प्रातःकाल उठकर स्नान जावि से निवृत्त होकर पीली धोती व गुरु चावर धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुख कर बैठे। जगने गुरु चित्र का स्थापन कर संक्षिप्त पूजन करे, फिर कुण्डलिनी जागरण यंत्र को अष्टत के आसन पर स्थापित करें। यंत्र के बगल में गोमती चक्र को रखें। फिर गुरुदेव के कुण्डलिनी स्वरूप का ध्यान करें—

सिन्दूरशरणव विजयां विजयां माणिक्य मौतिस्फुरुक्
ताशन्नायक शेखर स्मितमुखीमायीन वशीरुहाम् ।
माणिक्यां मणिपत्नं पूरणचष्टकं रक्तोत्पलं विभ्रतौ,
सौम्यां सलवृष्टस्थ सलवृष्टस्थ व्यायतैत पश्चमस्विकाम् ॥

श्री जगन्नाथो नमः व्यावेत्त जगर्यामि ।

जिनके शरीर का वर्ण भिन्न-भिन्न के समान लाल है, जिनके तीन नेत्र हैं, जिनके शिरोभान में माणिक्य जटिन मुकुट सुशोभित हो रहा है, जो मंद-मंद मुरकरा रहे हैं, जो अपने दोनों हाथों मणिमय पात्र नदा रत्न कगल धारण किए हैं, जिनका

स्वरूप सीम्या है, जिनके चरण रत्नयुक्त घड़े पर स्थित हैं, गुरुदेव के ऐसे कुण्डलिनी स्वरूप का मैं ध्यान करता हूँ।

इसके बाद निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र पर क्रमशः पाठ हेतु जल, अध्ये हेतु दो आचमनी जल, स्नान, कुंकुम, चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य, पूष्पांजलि आदि अपित करें।

ॐ हीं दृत् त् पाद्यं जगर्यामि नमः ।

ॐ हीं दृत् अष्ट्यं जगर्यामि नमः ।

ॐ हीं दृढ़ायदीयं जगर्यामि नमः ।

ॐ हीं दृढ़ं जगानं जगर्यामि नमः ।

ॐ हीं दृढ़ं अन्धं जगर्यामि नमः ।

ॐ हीं दृढ़ं अचरवदनं जगर्यामि नमः ।

ॐ हीं पुत्रं शुपं आश्राययामि नमः ।

ॐ हीं एतं दीपं द्वयामि नमः ।

ॐ हीं दृढ़ं तैवेद्यं तिवेद्यामि नमः ।

ॐ हीं एतं पुष्पांजलिं जगर्यामि नमः ।

इसके बाद निम्न मंत्र की शक्ति माला से ५ माला नित्य २१ दिन तक करें—

॥ गुरुदेवाय ज्योतिर्मर्याद्य भव्याद्य उमे नमः ॥

Gum Gurudevay Jyotirmayay Bhavyay Om Namak

इसके बाद ॐ गृहाति गृह्य गोप्यी त्वं गृहाणास्मत् कृतं जप, सिद्धि अवतु मे देवि त्वत् प्रसादान् महेश्वरि मंत्र बोलते हुए एक आचमनी जल होड़ने हुए जप का समर्पण करें।

साधना समाप्ति के बाद समस्त साधनी को जल में विसर्जित करें। यदि सम्भव हो तो साधना के बाद नित्य एक माह तक इस मंत्र का नित्य पांच मिनट जप करें।

साधना समाप्ति पैकेट - 410/-

छठ अंक में चार गुरु साधनाएं क्यों?

यह निखिल जपती अंक के और इसमें ब्रह्माण्ड के ४ सत्रोंव गुरुओं द्वारा प्रणीत साधनाएं प्रस्तुत की जारी हैं—१. गुरु इव रथापन साधना, २. तंत्र स्लेषण गुरु शिव साधन्य साधना, ३. विष्णु स्लेषण गुरु अनन्त सिद्धि साधना, ४. गुरु शक्ति स्लेषण आद्य शक्ति सिद्धि साधना। पिछने कई महिनों से कार्यालय में साधकों के द्वारा सारे पात्र प्राप्त हुए, जिसमें गुरु से अव्याख्यन साधनाओं को प्रकाशित करने की प्रार्थना की गई थी। तुन साधनाओं के प्रति साधकों की ललक उनकी शिष्यता की उच्च भाव भूमि पर अवधित होने का ही परिचायक है। विशेष साधनाओं को तप्युक्त समय पर किए जाने पर ही पूर्ण लाभ प्राप्त होता है, इसी कारणवश इन साधनाओं को प्रकाशित करने में विलम्ब किया गया था। परन्तु अग्रे आपके पात्र अप्रैल से लगाकर तुलाद्वारा तक ४ माह तक है, जो कि इन चारों साधनाओं को सम्पूर्ण करने के लिए अधिक है।

जो शिष्य हैं, जो चास्त्रव में लाभ-ता के द्वारा पध पर कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, जो मात्र म-तोरजन, टाइम-पास या परीक्षण हेतु ही साधना नहीं करते, अपितु वास्तव में दृढ़ संकल्पित हैं कुछ हम्मान करने के लिए—ऐसे वर्षी साधकों को चाहिए कि इस वर्ष की गुरु पूर्णिमा के फले-फले ही इन चारों साधनाओं को अवश्य ही सम्पूर्ण करें। गुरु पूर्णिमा के फले से ही यह साधकों का इन साधनाओं द्वारा मानन दृष्टा, क्योंकि सकेत ही इस प्रकार के प्राप्त हुए हैं, कि इस वर्ष की गुरु पूर्णिमा का विशेष महत्व है।

पूज्यपाद सदगुरुदेव की दिव्य लेखनी में ये अनगोल ग्रन्थ

गुरु संध्या

संध्योपासना की मूल परंति नायकी की उपासना पर आधारित है, परन्तु नहाँ गुरुदेव के प्रति समर्पण ही प्रभुग्रन्थ भाव हो, वहाँ गुरु संध्योपासना से उत्तिरिक्त अन्य कौन सी संध्या

B 5.15/- विधि उम्मुक्त हो सकती है। अपने प्राणों में सूर्य की हेनस्थिता को धारण की प्रामाणिक विधि...

साधना और सिद्धि

साधनाएं तो अलेक हैं, परन्तु साधन क्या होती है, साधन कौन कर सकता है, साधन औं से क्या लाभ होते हैं, साधन औं के किटने प्रलाप हैं, साधन वर्त्या आवश्यक है - उन प्रश्नों सिक्ख में उपलब्ध हैं।

Rs.10/- है, साथी आ के बिना प्रश्न, साथी कर्त्त्वों आवश्यक है - इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तिका में उपलब्ध है।

धनवर्धिणी तारा

तारा मध्यम के बारे में विविध है, कि उन्होंने इस महाविद्या को गिराकर निया, उसे अनेत्र प्राप्त, सिद्धानंद दो तोला स्वर्ण प्राप्त होता है। यथाना के इस पक्ष को चुनून्दरत भे इस स्थिका में उजागर किया गया है।

R s.15/- ह. याधना के इस पक्ष के सुन्दरता के लिए
प्रतिक में उत्तरदाता किया गया है।

प्रत्यक्ष हनुमान सिद्धि

R 8.40/- - ही मिलाती है। उनके गुरुओं को आनंदात
करने की अनेक साधनात्मक विधियां इस पुस्तक में हैं।

R 8.40/- - हीमिलती है। उनके गुरुओं को आठन सात करणे की अनेक साधनाटमक विधियाँ इस पुस्तक में हैं।

गंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीनाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलानी, बोधपुर - ३४४००१, (रज.)

Phone : 0291-432209, TeleFax-0291-432010

सिद्धाश्रम 306 कौशात एन्ड वेस नई दिल्ली - 34 Phone : 7182248, TeleFax : 7196700

यज्ञ विधान

卷之三

R s.15/-

को सम्पन्न करने की विधिवत प्रणाली का इस पुस्तक में विवेचन है।

अपसरा साधना

R s.15/- द्वापरसा साधना से धूहरात्य होठ
हरते हैं, परन्तु यह तो तीक बैसी ही चेताव्य
साधना है जैसे कि महालुक्षणी साधना।
त्रिसर्वे ड्वापरसा साधना सापड़ कर लीं,
उसके तीव्रता में आलच्छ ही आबद्ध है, भरती
और जोश है, चेतन्या ड्वारपूर्णता है। उच्चे से उच्चा संज्ञरस्त
व्याप्ति भी इस साधना को कहता है।

बगलामुखी साधना

किस प्रकार से जीवन में शत्रुओं को जिस्तेज किया जा सकता है, उन पर विजय प्राप्त की जा सकती है। लिस प्रकार मुकाबलों में, ल्यापार में अस्थान अवधि कीओं गे प्रतिक्रियाओं से जीत सकते हैं, यही इस पुरुषक व्या सार है।

R 8,15/-

लक्ष्मी प्रासि

R s.60/- वर्ड बार ब्यूकि अधक परिश्रम करता है, परन्तु किर भी उसके बीचन में धन का अभाव बना ही रहता है। मात्र परिश्रम से धनादृश नहीं बना जा सकता, इसके लिए साधनात्मक बल की आवश्यकता भी होती है। इस पुस्तक में ४० से भी ऊपर छोटे टोटे प्रयोग किए हैं, जिन्हें कोई भी व्यक्ति सम्पन्न कर अपना जीवन नंवर सकता है।

R s.60/-

से भी ऊपर होठे होठे प्रयोग दिए हैं, जिन्हें कोई भी व्यक्ति समन्वय कर अपना जीवन बेंचर सकता है।

* सम्पर्क *

गंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीनाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलानी, बोधपुर - ३४४००१, (रज.)

Phone : 0291-432209, TeleFax-0291-432010

सिद्धाश्रम 306 कौशात एन्ड होटल नई दिल्ली - 34 Phone : 7182248, TeleFax : 7196700

श्रीकृष्णकाण्ड

द्वन्द्वातीतं गग्न सदूशं . . .

मन के द्वन्द्व पर विजय प्राप्त करें!

जब और बुद्धि के बीच चल रहे संघर्ष को ही तो छन्द कहते हैं— मन चंचल होता है, परन्तु बुद्धि उसपर दिसन्तर नियंत्रण बनाए रखती है। जब तक बुद्धि मन पर हावी रहती है, कहीं कोई गड़बड़ नहीं होती, कोई तगाव नहीं होता, क्योंकि बुद्धि द्वारा बनाया गया चिन्तन स्पष्ट होता है, परन्तु जब बुद्धि का प्रयोग बन्द कर दिया जाता है, तो व्यक्ति मन के जाल में फँस कर स्वस्थ चिन्तन किए बिना गतिशील होता है। बुद्धि किस भी मन से संघर्ष करती रहती है और इसी से उपजता है द्वन्द्व . . .

द्व

न्त्र दो प्रकार के हो सकते हैं— अपने खुद के अन्तर्मन में उठ रहा अन्तर्द्वन्द्व हो अथवा बाहर सांसारिक जीवन में किसी व्यक्ति से प्रतिद्वन्द्व।

जिस प्रकार किसान खेत में नई फसल के बीज रोपने से पहले खेत को हल से जोता है, खेत को हल के कल से कुरेदता है, उसके अन्दर के कंकड़ पत्त्यरों को बाहर निकाल कर अलग कर देता है, और जब वह देख लेता है, कि अब बीज बोने लायक भूमि तैयार हो गई है, तब वह बीज उनमें बोने देता है।

अन्तर्द्वन्द्व की इस स्थिति में उसे अपने ही विरोधाभासी विचारों के हल द्वारा धात-प्रतिधात झेलने पड़ते हैं, और उसके मन की ऊपरी सतह टूटने लगती है, और फिर उसमें से कंकड़ पत्त्यर बाहर निकलते हैं, और जब भूमि ठीक हो जाती है, तो द्वन्द्व समाप्त हो जाता है, तब गुरुदेव एक शुद्ध ज्ञान का, शुद्ध विचार का भीजारोपण करते हैं और फिर उस विचार के आनन्द में व्यक्ति निर्द्वन्द्व हो जाता है, एक खुमारी में दूब जाता है, और फिर वह जिस कार्य को हाथ में लेता है, उसे सकलता मिल जाती है।

संघर्ष घाटे विचारों का हो या परिस्थितियों से हो, द्वन्द्व की इस स्थिति का प्रत्येक व्यक्ति से दो चार होता ही है, उस द्वन्द्व की साधक जीवन में क्या अर्थवाता है? किस प्रकार से यह साधनात्मक जीवन का एक आवश्यक अंग है, कुछ ऐसे ही बिन्दुओं को स्पष्ट कर रहा है यह टोक्स . . .

द्वन्द्व जीवन के चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, द्वन्द्व का उत्पन्न होना तो एक प्राकृतिक एवं आवश्यक अंग है जीवन में एक तो स उपलब्धि होने के पहले। व्यक्ति के अन्दर जब द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न होनी है, तभी तो उसके अन्दर एक आलोड़न-विलोड़न सम्प्रव हो पाता है, वह यह सोचने लगता है, कि यह ठीक है अथवा वह ठीक है, यह उचित है अथवा वह उचित है, सत्य क्या है, ऐसा ही पाएगा या नहीं हो पाएगा?

साधनाओं के क्रम में दुक युसी अवस्था आती है, जब ब्रह्मापुर्ण में फैली विद्यार तरंगों को प्रवर्णन कर्ही आश्चर्य बही रह जाता। साधना के दुसी श्ररात्रि पर जिन विचारों का उक्त हुआ है, उन्हें ही प्रस्तुत करने का प्रयास मात्र है यह स्तरम्—आत्म प्रकाश।

अ ‘अप्रैल’ ११ भ्र-त्र-यंत्र विज्ञान ‘२५’ ३



... और ऐसे ही उनेक विरोधाभासी विचारों के मध्य एक तनाव और कलेश की दुखद सी स्थिति निर्मित हो जाती है। व्यक्ति का मन खिल हो जाता है, वह निराश व हताश हो जाता है, उसका विश्वास होल जाता है, ईश्वर के व्याय के प्रति उसका मन झंकित हो जाता है।

परन्तु यह छन्द यदि किसी के जीवन में आया है, तो यह उसका सीधाध्य है, क्योंकि मन्थन के बिना जान का उवय नहीं होता। जब तक वही को मध्यान्ती से पूरी तरह मध्य नहीं दिया जाता तब तक श्वेत स्त्रिय मक्खन उसमें से नहीं निकल पाता।

सद्गुरु भी यही क्रिया अपने शिष्यों के साथ करते हैं, उनेक प्रकार से उन्हें बुधकर छन्दामक स्थितियों में डाल देते हैं, और तदस्य होकर देखते रहते हैं, कि उब शिष्य क्या करता है, वो क्या निर्णय लेता है?

निर्द्वन्द्व की स्थिति में ही आनन्द का रहस्य छिपा होता है, परन्तु निर्द्वन्द्व के पहले द्वन्द्व आता ही आता है, इस तथ्य को कभी विरमृत नहीं करना चाहिए। प्रकृति में भी यह स्पृह देखने को मिलता है, कि जब बड़ी तेज आंधी या तूफान आता है, तो पेड़ों के पाने-टहनियां अम्न-व्यस्त हो जाते हैं, परन्तु तूफान के बावजूद वातावरण में एक अनोखी शान्ति व्याप्त हो जाती है।

जो इस द्वन्द्व की स्थिति में विचलित नहीं होता है, जो इस तनाव को, इस विश्वेष को, इस द्वोभ को जीवन का एक अस्थायी घटना क्रम मात्र भर समझता है, और दृढ़ बना

रहता है, उसे ही तो आनन्द प्राप्त हो पाता है, उसे ही तो भौतिक जगत में भी सफलता प्राप्त हो पाती है।

द्वन्द्व तो हर व्यक्ति के जीवन में आते हैं, परन्तु स्वयं के प्रयासों से इन द्वन्द्वों से उबरा जा सकता है। परस्पर विरोधी विचारों के वारण व्यक्ति किकांव्यविमृद्ध हो जाता है और अपना लक्ष्य प्राप्त भूल जाता है, तभी वह दुख पाता है। जो इस द्वन्द्व में उलझता नहीं है, जो अटकता नहीं है, अपने लक्ष्य की ओर सचेत रहता है, वह निश्चय ही जीवन में कुछ प्राप्त कर भी पाता है।

इन सभी द्वन्द्वों का उपाय हमारे अन्दर ही छिपा होता है, उसके अन्दर का क्रोध, धृणा, ईर्ष्या, द्वेष, झूठी आकांक्षाओं आदि की निवृत्ति, उसके अन्दर ही छिपी होती है। यदि स्वयं प्रयास किया जाए, चेष्टा की जाए तो मन में शुभ विचारों का स्थापन हो सकता है। इन ही शुभ विचारों को और शक्तिशाली बनाकर हम अपने जीवन को उचित दिशा की ओर मोड़ सकते हैं, क्योंकि प्रबल विचार शक्ति ही समस्त क्रियाओं को प्रेरित करती है।

जीता में कहा गया है, कि 'संशयात्मा विनश्यति', तो इसका आशय ही यही है, कि संशय या सन्वेद करने से ही व्यक्ति दूट जाता है, बिखर जाता है। द्वन्द्व की यह स्थिति तो अर्जुन के साथ भी थी। वह यह निर्णय नहीं कर पा रहा था, कि कैसे उन बन्धु-बान्धवों पर शस्त्र उठाए, जिनके साथ उसने जीवन बिताया है। द्वन्द्व हुआ और तभी भगवान् कृष्ण ने अपना विराट स्वरूप दिखाकर संशय का निवारण किया, जान दिया। प्रश्न होगा तभी तो उत्तर भी प्राप्त होगा, बिना द्वन्द्व के जीन का उदय सम्भव नहीं कैसे है?

होगा या नहीं होगा, कर पाऊंगा या नहीं कर पाऊंगा जैसी स्थिति व्यक्ति को अन्दर तक तोड़ देती है, परन्तु शायद ये बात अनुभव सभी ने की होगी, कि ऐसी स्थितियों में ही व्यक्ति बड़ी आतुरता से ईश्वर को याद करता है, सद्गुरु को याद करता है। और जब उसके कदम गुरु चरणों की ओर बढ़ते हैं, तब उसे आनन्द का अस्थाह सागर लहरता हुआ मिल जाता है, और वह अपने द्वन्द्व से विमुक्त होता हुआ उसके भोवन रूपी खेत की जुताई कर रहे हैं।

कोयले की खदान से निकले हीरे और कोयले में
बोर्ड विशेष अन्तर नहीं होता, वेखने में वह कोयले जैसा ही
जल्द है, परन्तु जब तक उसको नोकीले और जार से तराशा
नहीं जाता, तब उसके गुण प्रस्फुटित नहीं होते, तब तक
उसका प्रकाश, उसकी चमक बाहर नहीं आती। अब हीरा
वह सोचे कि मुझे तराशने से कष्ट होता है, और तराशे जाने
से इकाई कर दे, तो इसमें क्या किया जा सकता है, यह तो
हीर का सौभाग्य है, कि उसे जीवन में कोई तराशने वाला
कोई गुरु मिला, जीवन में छन्द प्रवान करने वाला कोई गुरु
मिला। यह छन्द एक तराशने की ही किया होती है, शिष्य के
प्रकाश को प्रस्फुटित करने के लिए।

विषम परिस्थितियों में प्रायः मनुष्य विचलित हो जाता
है, परन्तु यदि सूखमता से देखा जाए, तो हर दुख के बाद
सुख आता ही है, रात के बाद पुनः फिर रात आती नहीं, इसी
बात को यदि ध्यान में रखेंगे तो, फिर यह मानसिक तनाव की
नो स्थिति पैदा होती है, वह एक अस्थायी (अल्प कालिक) ही
प्रतीत होगी। इसके विपरीत छन्द की इन घड़ियों में यदि व्यक्ति
मन में ठान ले कि मुझे तो विजित होना ही है, तो उसके अन्दर
की सुन्त शक्तियाँ उसे इतनी अधिक ऊर्जा प्रदान कर दीती
हैं, कि यह सभी बाधाओं, सभी समस्याओं से निवाटे हुए
विजय श्री को प्राप्त करता ही है।

जीवन में कितना भी छन्द हो, यदि कोई
रास्ता न सूझ रहा हो, तो गुरुदेव का द्वार सदैव
ही खुला है -

“यदि तुम पर दुःखों का पहाड़ ढूट पढ़े
और सांस धुट जाए, हृदय पफ़फ़ाने लगे
और अन्दर मुठल जरूरत से ज्यादा लहू
जाए, तब भी चिन्ता करने की जरूरत
नहीं है। जरूरत तो इतनी ही है, कि तुम
मुझे पुकार लो, मैं बिल्कुल पास में खड़ा
मिलूंगा, आपना हाथ मेरे हाथ में सौंप कर
निश्चिन्त हो जाओ, बाकी सब कुछ मैं
अपने-आप सम्भाल लूंगा।”

-पूज्यपाद सद्गुरुदेव
३१० नारायण दत्त श्रीमाली

इतिहास साक्षी है, कि जितने भी महान् व्यक्तित्व हुए
हैं, उन सभी ने जीवन में बहुत संघर्ष होला है, और तब जाकर
कहीं पश्च और प्रसिद्धि की विजयपताका उन्हें मिल पाई है।
जितने भी बड़े-बड़े वैज्ञानिक अधिकार हुए हैं, गणित के जितने
भी उच्च सिद्धान्त प्रतिपादित हुए हैं, उन सबके पीछे उन
महान् गणितज्ञों के मस्तिष्क तन्तुओं में चल रहा छन्द ही तो
था, जो कि एक शुभ समय पर एक दोस विचार के रूप में एक
अविष्कार या सिद्धान्त बनकर समाज के सामने आया। परन्तु
इसके पूर्व उस वैज्ञानिक के मानस में सिद्धान्त का चिन्तन
कहां था, उसके मानस में सत्य कहां स्पष्ट था, वह तो सचमुच
झूल ही रहा था एक अन्तर्द्रन्द में . . . कि यह भी हो सकता है,
वह भी हो सकता है, पर सही क्या है, कैसे करूँ, किस से
पूछें, और पूछने के लिए उसे कोई नहीं मिलता है, उसके
प्रश्नों का उत्तर स्वयं उसके अन्दर से ही मिल जाता है, एक
छन्द की एक निश्चित अवधि के बाद।

यदि इम भारतीय इतिहास में अवलोकन कर देखें,
तो क्या काल में उनेक शास्त्रार्थ हुआ करते थे, यह छन्द ही
तो है दो परस्पर विपरीत विचारों के मध्य, परन्तु इसका
परिणामस्वरूप किसी एक मत या सिद्धान्त की विजय होती
ही। और इस तरह एक नवीन विशुद्ध जान उभर कर सामने
आता था।

साधक जीवन में भी छन्दात्मक स्थिति को इसी
सकारात्मक दृष्टिकोण से लेना चाहिए। साधना सफल होगी
या नहीं होगी, मंत्र प्रामाणिक है अथवा नहीं, विधि में दोष है
अथवा नहीं, कमी मेरे अन्दर है या उच्चारण में अशुद्धि है -
यह सब छन्द ही तो हैं, जो साधना काल में व्यक्ति को
शक्तिराते रहते हैं, परन्तु व्यक्ति यदि शान्त चित्त से इन छन्दों
को साक्षी भाव से देखता रहता है, तो उसे जान का बोध होता
है। छन्द तो एक ऊर्जा होती है, एक छटपटाहट होती है, एक
बेचैनी होती है सत्य को जान लेने की, और यह छन्द ही
व्यक्ति की सफलता की आधारभूमि होता है।

इसलिए सद्गुरुदेव ने एक बार कहा था - ‘यदि
तुम्हारे मन में छन्द आया है, यदि तुम्हारे मन की भटकन बढ़ी
है, तो यह प्रसन्नता की बात है, व्यायोंकि तुम्हारी यही भटकन,
तुम्हारा यही जिजामु भाव, तुम्हारा यही खोजी प्रवृत्ति एक
दिन तुम्हें सफलता के उच्च स्तोपान पर पहुंचाएगी, और जब
उन अज्ञात रहस्यों का सुनहरा प्रभात तुम्हारे सामने स्पष्ट हो
जाएगा, तब तुम विभार हो उठोगे, अपने आप में झूमने लग
जाओगे एक मस्ती में, एक खुमारी में खो जाओगे।’

आयुर्वेद सुधा

पूज्यपाद सद्गुरुवेद डॉ० आशवण वर्त श्रीमाली जी के आयुर्वेदका रूप का परिचय साध्यों को कम ही मिला है। हिमालय के चट्ठे-चट्ठे को अपने दैरों से नाप कर पूज्यपाद ने आयुर्वेद शास्त्रों में वर्धित ६४ विष्य औषधियों को ढूँढ गिकाला। उन्होंने तेलियाकरब जैसे पौधे को भी ढूँढ गिकाला,

जिसके मात्र दो या तीन पौधे ही बचे हैं।

दिल्ली में एक विशाल मू-भाग को क्रय करने के पीछे उनका यही उद्देश्य था, कि एक ऐसा चिकित्सालय ('आरोग्यथाम') निर्मित हो सके, जहां भारतीय प्राच्य पद्धतियों द्वारा आरोग्य प्राप्त हो सके। आयुर्वेद के लुप्त सूत्रों को पुनर्स्थापित करने की उनकी इच्छा के अनुरूप इस स्तम्भ का आरम्भ किया जा रहा है।

Hमारा यह देश कई दृष्टियों में महान है, सबसे पहले यही पर सम्पत्ति का उत्तम हुआ, संमार के प्राचीनतम ग्रंथ वेदों की रचना हुई, ज्ञान और विज्ञान की पूर्णता तक पहुँचने ने सफलता प्राप्त की, पर इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है, कि भारत वर्ष में ही आयुर्वेद का इतना अधिक विकास हुआ, जिससे संसार ने एक स्वर से यह स्वीकार किया कि भारतवर्ष प्राणविज्ञान के क्षेत्र में सबसे आगे रहा है, और आयुर्वेद में निहित ज्ञान की समानता नहीं की जा सकती है।

धन्वन्तरी ने एक बार अपने ग्रन्थ को समझाते हुए कहा— “इश्वर ने किसी भी वनस्पति का निर्माण व्यर्थ नहीं किया है, छोटे से छोटे पौधे की भी अपनी एक महत्ता है, आवश्यकता है, उसके गुणों को परखने की और उससे अनुकूल औषधि बनाने की”

तब से आयुर्वेद निरन्तर उन्नति की तरफ अग्रसर होता गया, इसने इतनी ऊँचाई प्राप्त कर ली, कि कम से कम मूल्य में आयुर्वेद के द्वारा ऊंचे से ऊंचा लाभ मनुष्य को मिलने लगा, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भले ही सर्जरी के क्षेत्र में ज्यादा महत्वपूर्ण और सफल हो गया हो, पर रोगों के निर्मलन (अथवा जड़ से समाप्त) में अभी तक यह कोरा का कोरा ही

है, कुछ ऐतोपैथिक औषधियों के द्वारा रोगों को कुछ समय के लिए ब्रा भले ही हैं, परन्तु रोगों को मिटाने की युक्ति या निदान उसके पास नहीं है।

आयुर्वेद 'प्राणों का वेद' कहा जाता है, हमारे पूर्वजों ने प्रवलन करके ऐसी वनस्पतियों और जड़ी बूटियों का पता लगाया था, जो अद्भुत और तुरन्त सफलता देने वाली है, एक-एक वनस्पति या जड़ी-बूटी हीरों से तैलने लायक है, परन्तु हम उन्हें प्राप्त भूल ही चुके हैं। यदि वेखा जाय, तो संसार में कोई ऐसा रोग नहीं है, जिनका इन आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा उन्मूलन न किया जा सके, इन जड़ी-बूटियों को विशेषता है, कि इनके सेवन से कोई विपरीत प्रभाव नहीं व्याप्त होता है।

अब नीचे कुछ औषधियों के बारे में जानकारी प्रस्तुत की जा रही है—

अपराजिता — गृजा देवी

इसे संस्कृत में 'विष्णुकान्ता', हिन्दी में 'कालीजीर' और गुजराती में 'गरणी' कहा जाता है, यह एक बहुवर्ष जीवी वानस्पतिक बेल है, जिसमें पीले फूल लगते हैं, इसके फूल का आकार गाय के कानों की तरह होता है, इसलिए इसे 'जीरकाणी' भी कहते हैं।

यह बनना में सामान्यतः प्राप्त हो जाती है, इसके बांजों को निकाल कर उसका अवलोह बनाकर नित्य लिप जाय, तो वह पेचिश को समाप्त कर देती है, इसका विशेष गुण यह है, कि यदि शराब की मात्रा ज्यादा लेने से लीकर बढ़ जाया हो या लीकर में सूजन आ गई हो, तो एक-एक चम्च सात दिन लेने से लीकर की सूजन समाप्त हो जाती है।

इसकी जड़ की पीसकर नित्य फंकी लेने से आंखों की ज्वांति बढ़ जाती है, और चश्मा उतर जाता है।

इसके अलावा इसके बांज यकृत, प्लीषा, जलोकर, घेट के कीड़े, आमाशय में दाह, कफ, स्त्रियों के रोग, क्षय आदि में तुरन्त और अश्वर्धजनक रूप से सफलता देते हैं। इसकी छाल को दूध में पोसकर शहद मिलाकर पीने से गर्भपात रुक जाता है। इसके बांजों को पीसकर लेप करने से अंडकोष की सूजन समाप्त हो जाती है।

अमलतास

इसे संस्कृत में 'हेमपुष्प', गुजराती में 'गरमाड़ी' तथा मराठी में 'वाहबोह' कहते हैं, इसके पौधे पारवर्ष में अधिकतर स्थानों पर प्राप्त हो जाते हैं, इसके पेढ़ की गोलाई लगभग तीन फिट होती है, तथा काले रंग की फलियाँ लगती हैं, इस पेढ़ की छाल उतारने पर लाल रंग का रस निकलता है।

टी.बी. की बीमारी दूर करने में इसके मुकाबले की अन्य कोई बनस्पति नहीं है, इसकी जड़ को दूध में औटाकर पीने से किसी भी प्रकार की टी.बी. समाप्त हो जाती है। यदि इसकी जड़ को दिश कर दाद पर लगाया जाए, तो कुछ ही दिनों में वह दाद समाप्त हो जाता है।

इसकी जड़, छाल, फल-फूल और पत्ते – इन पांचों को जल में पोस कर दाद-खुजली या चर्म विकारों पर लगाने से जादू के समान झसर होता है। यदि पेशाब के साथ खून गिरता हो, तो इसका गूदा नामिप पर लेप करने से लाभ होता है। आंतों के रोग, कुष्ठ, कञ्जी, गले की तकलीफ आदि में भी इसकी जड़ महत्वपूर्ण औषधि कही गई है।

अर्जुन

इसे 'ककुभ' भी कहा जाता है, यह हिमालय की तलहटी, छोटा नामपुर, दक्षिण बिहार आदि की तरफ सामान्यतः पेदा होता है, इसकी ऊंचाई लगभग साठ फीट होती है, तथा इसके पत्ते का आकार मनुष्य की जीभ के समान होता है, वेशाख माह में इस वृक्ष पर फूल आते हैं, इस पेढ़ में

से भूरे रंग का गोदू भी निकलता है।

इवय रोगी के लिए इसके मुकाबले की कोई औषधि नहीं है, इसकी छाल को गुड़ में मिलाकर, दूध में औटाकर पीने से हृदय की सूजन का बढ़ना रुक जाता है। किसी भी प्रकार की हृदय से सम्बन्धित बीमारी हो, इससे दूर हो जाती है, इस वृक्ष की छाल का सत्त्व निकाल कर यदि इंजेक्शन का तरह रस में पहुंचाया जाय, तो हृदय को तुरन्त आराम मिलता है, यदि हृदय का कोई वालव निष्क्रिय हो गया हो, या हृदय का संक्रचन कम हो रहा हो अब वा अन्य कोई भी तकलीफ हो, तो इससे आश्चर्यजनक लाभ पहुंचता है।

आंबला

इसे लगभग सभी भाषाओं में आंबला ही कहते हैं और इसके पेढ़ पूरे भारवर्ष के जंगलों में पैदा होते हैं, वृक्षता को मिटाने में यह महत्वपूर्ण है। उत्तम पके हुए एक हजार आंबले लेकर एक बड़ी हाँड़ी में भर कर रख दें और उसमें दूध डाल कर हाँड़ी को भर दें। फिर उसे धीरे-धीरे आंच पर उकाकर नीचे उतार दें, इसके बाद छः तोला 'बैगिल' और आठ तोला 'निर्कट' डालकर लेह बना लें, और इसे किसी स्वच्छ पात्र में भर कर रखें।

इसका नित्य दो या तीन तोला सेवन करने पर शीघ्र ही व्यक्ति के शरीर की शुरियां मिट जाती हैं और उसे सभी वृष्टियों से योगन प्राप्त हो जाता है। यदि जवान स्त्री या पुरुष इसका सेवन करे, तो उसे अत्यधिक पीरुषता, कामोदीप्तता तथा चेहरे की सुन्दरता प्राप्त होती है। यदि आंबले के पानी के साथ शहद और मिसरी मिलाकर लिया जाए, तो इवेत प्रदर्श समाप्त हो जाता है।

इन औषधियों में से कुछ तो सामान्य तौर पर प्राप्त हैं, लेकिन कई ऐसी भी औषधियां हैं, जिन्हें स्वयं प्रयास करके ही, उन स्थानों पर जाकर ही पाया जा सकता है। वस्तुतः विव्य औषधियों को बिना श्रेष्ठ साधनात्मक स्तर प्राप्त किए, प्रायः समर्थ नहीं हो पाता। विशिष्ट साधनाओं द्वारा साधक को किसी भी पौधे को देखते ही जान हो जाता है, कि उसकी क्या उपयोगिता है। कालान्तर में ऐसी साधनाओं के लुप्त हो जाने के कारण ही आयुर्वेद की कई ऐसी औषधियां लुप्त हो गईं। अविष्य में इस प्रकार की साधनाओं को साधकों के लापार्थ प्रकाशित किया जाएगा।

देवत्व आद्वान दीक्षा



सु

निः के प्रारम्भ में आदि देव ब्रह्मा ने मनुष्य की सच्चाई की, तो साथ साथ उसे यह वरदान भी दिया कि तुम्हारे जीवन में देवत्व हो और तुम अपनों डच्छाओं की पूर्ति के साथ उन्नति की ओर अग्रसर हो। मनुष्य तो सहज रूप में परमात्मा का अंश हो है – जिस प्रकार कोई भी पिता अपनी संतान में अपना प्रतिरूप देखना चाहता है, उसी प्रकार भगवान् भी मनुष्य में अपना ही अंश जानते हुए उसे अपने ही गुणों से विभूषित करना चाहते हैं।

मूलतः पांच देवों को ही आधार देव माना गया है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य और शक्ति इन पांच आदि देवों से ही अन्य अधिदेवों की उत्पत्ति हुई है अथवा ऐष्ट भूमुखों को अपने काव्यों द्वारा देवत्व प्राप्त हुआ है। भारतीय दर्शन के अनुसार इन करोड़ देवों देवता माने गये हैं, जिनमें अग्नि, वरुण, इन्द्र, गणेश, क्रातिकेय, वायु, कुबेर, सेत्रपाल, यम, शनि, हनुमान इत्यादि प्रमुख देव हैं एवं काली, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, बगलामुखी, तारा आदि प्रमुख देवियां हैं, जिनकी प्रत्येक स्थान पर अलग अलग स्वरूपों में पूजा होती है। हमारे यहां तो पितृश्वरों को भी उच्चात पूर्वों को भी देव माना गया है जो घर परिवार की रक्षा करते हैं।

भारतीय दर्शन मतानुसार जोब अपनी दृष्टि प्रकृति के कारण कुर्सन्कर्तरों की ओर प्रवृत्त हो जाता है, वह देवत्व भारग्न कर राक्षस प्रवृत्ति धारण कर लेता है। इसी कारणवश मनुष्य में दृष्टि, छल, कपट, हिंसा, व्यापिचार इत्यादि कुर्सन्कर आ जाते हैं तो वह देवत्व धारण करने की अपेक्षा अपनी दूसरी योनी में राक्षसत्व धारण कर लेता है।

संस्कार तो जीव के अन्दर दोनों ही होते हैं, वाहे वे राक्षस तत्त्व प्रथान हों या देव तत्त्व प्रथान ... यह तो व्यक्ति के स्वयं के हाथ में होता है, कि वह किस दिशा की ओर गतिशील हो। सफलता तो दोनों ही रास्तों में गिलती है, विनाश करके भी प्रसिद्धि प्राप्त हो सकती है, निर्माण करके भी प्राप्त हो सकती है। पिछर देवत्व का ही पथ क्यों?

पौराणिक ग्रंथों में हजारों राक्षसों का वर्णन निलगा है, समुद्र मंथन तो देवताओं व राक्षसों द्वारा ही सम्पन्न हुआ था। यह सत्य है, कि जब-जब संसार में राक्षसी प्रवृत्तियां उभरने लगती हैं, तब तब ईश्वरी शक्ति देवताओं का मार्ग दर्शन करने हेतु अवतरित होती है और पुनः संसार में श्रेष्ठता की स्थापना होती है। इससे यह तो समझ है, कि देव शक्ति को देवताओं को आक्षान किया जा सकता है और वे संगुण अथवा निर्गुण रूप में उपस्थित होकर मनुष्य को सहयोग करते हैं। यह तो निश्चित है कि जिस प्रकार एक बालक कह में अपनी माँ को पुकारता है और माँ उसका कठ नियारण करने के लिए तत्काल आ जाती है। उसे अपने हृदय से लगा देती है, तीक उसी प्रकार देव अपनी ही प्रजाति मनुष्य के सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं, उसके लिए आवश्यक है कि उनका आक्षान उचित रूप से किया जाव। 'देवत्व आक्षान दीक्षा' प्राप्ति

देवता और राक्षस परस्पर विपरीत स्वत्ताव एवं गुणदर्भ दाली शृंखलाओं हैं, जिनके फलस्वरूप धनि व स्ट्री का स्थापन उदादा नाश सम्भव होता है। देव एवं राक्षस दृष्टियों छहाण्ड में विचरण करती रहती हैं और अपना-अपना प्रभाव प्रटीक जीव पर डालने का प्रयास करती रहती हैं। इनमें भी राक्षस देवता शीघ्रता से व्यक्ति पर हावी हो जाता है। आसुरी शृंखलाओं व्यक्ति के मन पर शीघ्रता से अधिकार जगा लेती हैं। उसके विपरीत देवताओं द्विना आवाहन के अथवा द्विना निमंत्रण के देवता उपस्थित नहीं होते हैं, परन्तु जब वे उपस्थित होते हैं, तो साधक को देव गुणों से युक्त कर पूर्ण कर देते हैं।

साधक के एक बार मन से पुकारने पर देवता उसकी सहायता को निरन्तर तन्पर रहते हैं।

मगवान कृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है—
देवान्मावद्यतरज्ञ ते देवा भावद्यन्तु व ।
परस्परं भावद्यन्तः श्रेयः परमवाण्णस्यथ ॥

अर्थात् देव जो कि शक्तिमाव से युक्त है, जिनमें नकाशगमक शक्ति है, उन्हें मनुष्य भावपूर्ण रूप से प्रसन्न करे, तो देवता भी भावपूर्ण रूप से मनुष्य को पूर्ण सुख देने में सहयोगी बनते हैं, इस प्रकार दोनों एक दूसरों को सहयोग दें तभी मनुष्य पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

इस श्लोक से पहले स्पष्ट है, कि देव आहान सम्भव है और देवता मनुष्य के लिए सहयोगी हैं। इसमें भी मनुष्य अपनी वित्तवृत्तियों का किस प्रकार से उपयोग करता है यह उसके स्वयं पर निर्भर करता है।

जीव जब शरीर धारण करता है, तो उसके अन्दर दोनों ही तत्त्व विद्यमान होते हैं—राक्षस तत्त्व और देव तत्त्व। अब यह उसके ऊपर निर्भर करता है, कि वह किसका विकास करे। यदि पूर्व संस्कार बहुत अच्छे हों, तभी देव वृत्ति जन्म से ही व्याप्त होती है... अन्यथा राक्षसी वृत्तियों के अधिक हावी होने के फलस्वरूप, मनुष्य अपने जीवन की प्रारम्भिक आयु में ही माथा के वर्णभूत होकर अपने देवत्व का विनाश कर देता है। उसके अन्दर का राक्षसत्व उभर कर बाहर आता

है, तब उसके अन्दर लालच, लोभ, क्रोध, ईर्ष्या, वासना, आलस्य आदि अनेक विकार पनपने लगते हैं और उसके अन्दर का देवत्व एक तरह से दब जाता है।

उस देवत्व का जीवन में आहान अथवा जागरण ही जीवन का सौभाग्य है। यह देवत्व जागत होना इतना सहज भी नहीं है, क्योंकि इसके लिए तो बहुत संघर्ष करना पड़ता है, अन्तर्द्रन्ध करना पड़ता है अपने ही अन्दर की वित्त वृत्तियों से जिन्होंने राक्षसी वेश धारण कर लिया है। और जब राक्षसी वृत्तियों के ऊपर हमारे अन्दर का देवत्व हावी नहीं हो सकता, तो कौन हमारे देवत्व को जागृत कर सकता है?

... और जीवन में यदि कोई यह कार्य कर सकता है, तो केवल और केवल मात्र सदगुरु ही कर सकते हैं। यदि जीवन में सदगुरु मिल जाए, और शिष्य के अन्दर यह विचार आजाए, कि उसे जीवन में वस्त्र के स्थान पवित्र और निर्मल बनना है, देवतुल्य बनना है, अपने देवत्व का जागरण करना है, तो वह स्थान ही उसके जीवन की एक क्रान्तिकारी घटना होती है।

इसी हाण की तो प्रतीक्षा करते हैं सदगुरु, कि कब शिष्य को स्वयं बोध हो जाए, कि इस मल मूत्र मधेर वातावरण में जिन्दगी गुजार देना ही जीवन की श्रेष्ठता नहीं है... अपितु जीवन में यदि कुछ करना है, तो अपने देवत्व को जागत करना पड़ेगा। और जब शिष्य अपने प्रयास से अपने वृत्तियों पर विजय नहीं प्राप्त कर पाता है, तब गुरुदेव उसे कृपा करके देवत्व आहान दीक्षा देते हैं।

और जब यह दीक्षा प्राप्त हो जाती है, तो किर साधक कोई सामान्य व्यक्तित्व रह ही नहीं सकता, उसके अन्दर राम, बुद्ध, कृष्ण, इन्द्र, कुबेर, मणेश... के गुण स्वतः ही फलने-फलने लगते हैं।

व्याकुंठ अपने कर्णों और अपने गुणों के अनुसार ही तो पूर्य अथवा धृतिं बन जाता है, देवता अथवा देवता बन जाता है। मन्दिर यदि होते हैं, तो देवता भी के ही होते हैं, पूजा यदि होती है, तो देवता भी की ही होती है, राक्षसों के मन्दिर नहीं हुआ करते, न ही उनकी पूजा होती है।

नव छल-कपट, व्यभिचार, ईश्वर में अनाल्या पूरी तरह हावी हो चुकी थीं, तब पूज्यवाद सदगुरुदेव की सृष्टि के नियमानुसार आना ही पड़ा एक मन्त्रज्ञन को बनाए रखने के लिए। सदगुरुदेव ने अपने एक प्रवचन में इस बात का स्पष्ट सकेत दिया है, कि वे लोग जो इन साधना शिखियों में पहुंच

कर अधिवा गुरुधाम पहुंच कर साधना में भाग ले रहे हैं, वे कोई यामान्य मनुष्य नहीं अपितु देवांश हैं। पूज्यपाव सद्गुरुदेव के सानिध्य में आया हुआ व्यक्ति सामान्य हो ही नहीं सकता, यह अलग बात है, कि उसे अपने अन्दर के देवत्व का अभी बोध नहीं हो पाया हो? इसी देवत्व से बोध होने का नाम 'देवत्व आळान दीक्षा' है।

इस अधिकारमय चातावरण में सफलता, यश, मान आदि जब मात्र रिश्वतखोरी, लिकिड्म, और कृतीति ढारा ही प्राप्त समझी जाने लगी है, और अनाचार सिर से ऊपर तक निकल गया है, तब ऐसे देवताओं को क्रियाशील होना आवश्यक हो गया है। 'देवत्व आळान दीक्षा' ही तो वह बिन्दु है, जिससे जु़सदेव उन बांजों का शिष्य के अन्दर स्थापन करते हैं, जिससे वह सर्वगुण सम्पन्न बनने की ओर अग्रसर हो जाता है, उसके अन्दर का कृष्णत्व, उसके अन्दर का कुब्रेत्व जाग्रत होने लगता है।

और जब देवत्व जाग्रत हो जाता है, तब पुनः याचना करने की आवश्यकता नहीं होती, उसमें तो स्वयं प्रवान करने की शक्ति आ जाती है, व्योकि जो देव हो देवता है, जिस अन्दर देने की क्षमता आ जाती है, वही देवता है।

राक्षस का कार्य तो हीन लेना है, शपट लेना है, बोच लेना है; परन्तु देवता छीनता नहीं है, अपटता नहीं है,

'देवत्व आळान दीक्षा' डैसी
दीक्षाएं तो प्रदान की ही नहीं जाती,
प्रबन्ध सद्गुरुदेव के मानसपुत्रों को,
जो स्वयं देव अंश हों, उन्हें रोक भी
कौन सकता है, ऐसी अद्वितीय दीक्षा
प्राप्त करने ठेटु। सद्गुरुदेव की प्रेरणा
से गुरु त्रिमूर्ति ने इस दीक्षा को प्रदान
करने का मानस निर्मित कर लिया है।
वर्ष 1999 में घाट नक्षत्रों का कुछ ऐसा
संयोग बन रहा है, जो इस दीक्षा को
प्राप्त करने की वृष्टि से विशेष रूप से
शुभ एवं फलप्रद है। मनुष्य से देवता
बनने की प्रक्रिया को ही तीन शब्दों में
'देवत्व आळान दीक्षा' कहा गया है।

हावी नहीं होता, वह तो एक विष्य प्रेम के वरीभूत होकर, करुणा से आप्लावित होकर सहज ही सब कुछ प्रवान कर देता है, जो उसके पास है। देवों के देव मगवान शिव को 'महादेव' इसीलिए तो कहा गया है, क्योंकि देवत्व के गुण उनमें ही सबसे अधिक विकसित हैं, उसके समान दाता, औदरदानी कोई दूसरा मिलता नहीं है।

और जब व्यक्ति में देव गुण जाग्रत हो जाते हैं, तो फिर उसे याचना नहीं करनी पड़ती, फिर उसके पास धन, सम्पदा, देशवर्य, कीर्ति, जान, आनन्द, प्रेम, वात्सल्य, सकल पदार्थ उसे उपलब्ध होते हैं, क्योंकि समस्त देवताओं की कृपा नहीं अपितु महायोग उसे प्राप्त हो जाता है। फिर देवता उसके आराध्य नहीं रहते, वे तो उसके मित्रत्व हो जाते हैं। यदि उसके कोई आराध्य होते हैं, तो केवल और केवल मात्र गुरु ही होते हैं, जिन्होंने मनुष्य से देवता बनाया है।

शिष्य तो देवता होता ही है, क्योंकि देव संस्कारों से युक्त हुए बिना यह सम्भव ही नहीं कि किसी व्यक्ति को परम सत्ता की कृपा प्राप्त हो और उसे सद्गुरु का संग प्राप्त हो, उनके चरणों में शरण प्राप्त हो। उन्हीं सुन देव संस्कारों को जगाना ही तो शिष्य के जीवन का हेतु होता है, आत्मबोध की यह तो भाव भूमि होती है कि शिष्य अपने स्व से साक्षात्कार कर ले, अपने स्वरूप को देख सके, और पहचान सके कि वास्तव में वह कितनी ऊँचाई तक उठा हुआ है।

इसी आत्मबोध के अभाव में व्यक्ति दुःखी रहता है, वह सोचता है कि पता नहीं सद्गुरुदेव ने मुझे कुछ प्रवान किया भी है या नहीं, इतनी साधनाओं को सम्पन्न किया है वह सफलभूत हुई है भी या नहीं, यह सभी कुछ पूछने की फिर उसे आवश्यकता नहीं रह जाती है, क्योंकि वह स्वयं अपने देवत्व को देख सकेगा, और अपनी अप्रकट विशाल समताओं से साक्षात् कर सकेगा। तब उसे पहलाय हो सकेगा, कि सद्गुरु कृपा क्या होती है, तब उसे भाव हो पाएगा, कि गुरुदेव ने तो उसे इतना कुछ प्रवान कर दिया है, जितने की उसने तो कामना भी नहीं की थी।

जब तक अंत, करण में दीपक न-ज्वलित नहीं होता, जब तक अंदर जन की चेतना जागृत नहीं होती। जब तक आत्म-चक्षु पूर्णिमा से जागृत नहीं होते, जब तक कुण्डलिनी महस्त्र धर जाकर नृत्य नहीं करती तब तक अपने इस देवत्व से साक्षात् नहीं हो पाता है, इसी साक्षात्कार की स्थिति को देवत्व आळान दीक्षा की संज्ञा से विमूलित किया गया है।

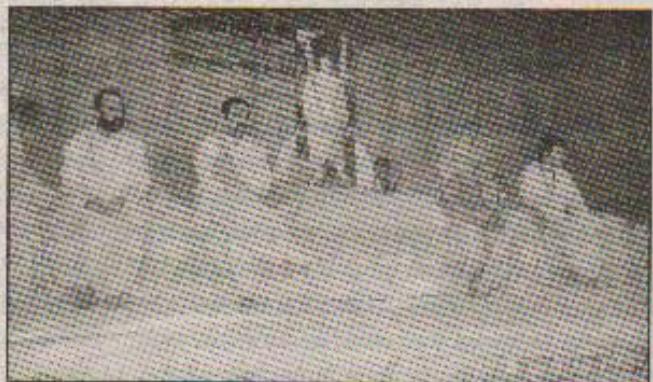
सिद्धाश्रम साधक परिवार



— गुरु शिष्य के पावनतम सूत्रों में बंधा एक दुक दुसा परिवार, जिसका प्रत्येक सदस्य एक नृतन दुग्ध संरचना में जीव का पत्थर है



मात्र में चेतना कोई आवाज देकर अच्छा तृकानों के बबण्डर के साथ नहीं आती है, समाज में चेतना तो सहज परिवर्तन के साथ इस प्रकार आती है, कि प्रत्येक हृदय आधार करने लगता है, कि उसे स्वयं समाज के लिए कुछ करना है। यह प्रेरणा जब किसी महान व्यक्तित्व द्वारा प्राप्त होती है, तो व्यक्ति अपने आपको अकेला अनुभव नहीं करता है, वह तो हर समय ऐसा अनुभव करता है, कि एक आदा शक्ति दिव्य शक्ति उसके स्माध है, जो उसके देह में, आत्मा में निरन्तर इसकि का संचरण करती रही है।



सदगुरुदेव दौ० नारायण दत्त श्रीमाली ने अपने एक प्रवचन में कहा था कि, "मुझे अनुयायी नहीं चाहिए, मुझे जीवन्त शिष्य चाहिए, जो समाज में चेतना के अग्रवृत बन सके। इस आर्थ भूमि पर धर्म, विश्वास, संस्कृति, श्रेष्ठता की ज्ञजा पुनः स्थापित कर सके।" इसी उद्देश्य से सदगुरुदेव ने सदप्रवचन मंत्र-तंत्र-यंत्र पत्रिका प्रारम्भ की और उस पत्रिका के साथ ही साथ नींव डाली 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' की। उन्होंने कहा कि यह एक संस्था नहीं है, यह एक परिवार है जिसमें हर सदस्य को दूसरे के प्रति प्रेम-भाव है, हर सदस्य आनंदोन्नति करना चाहता है, हर सदस्य कर्तव्य के पथ पर शतिशील है, हर सदस्य साधक है, हर सदस्य उन साधनाओं को सम्पन्न कर स्वयं शक्ति साम्पन्न बनने को इच्छुक है। सिद्धाश्रम साधक परिवार का कोई भी सदस्य दीन-हीन न हो, वह तो अपने जीवन में निरन्तर पुरुष से पुरुषोत्तम बनने की किया करता रहे।

आज सिद्धाश्रम साधक परिवार की बगिया फल-फूल रही है, तो यह सदगुरुदेव का ही आशीर्वाद है क्योंकि उन्होंने प्रत्येक शिष्य को स्वयं तेयार किया है। वे आधार हैं सिद्धाश्रम साधक परिवार के। उन्होंने जो बीज बोए वे आज समाज को नई चेतना देने में सहाय हैं, वे बीज आज वृद्ध बनकर दूसरों को छाया

देने में समर्थ हो गए हैं।

जिस प्रकार हर माली अपने खेत में निरन्तर गुडाई करता रहता है, उसमें नए-नए पौधे रोपता रहता है, जिससे खेत में हर समय नवीनता बनी रहे, नए फल और पुष्प पल्लवित होते रहे। यहीं तो सिद्धाश्रम साधक परिवार का मूल स्वरूप है। सदगुरुदेव ने विशेष उद्देश्यों को साकार करने के लिए ही इस सिद्धाश्रम साधक परिवार की स्थापना की, जिसके उद्देश्य हैं —

१. मारत की गौरवशाली लुप्त प्राचीन विद्याओं की पुनर्स्थापना।

२. साधनाओं और मंत्रों के महत्व व इसकि को जन साधारण से परिचित कराना,

३. प्रत्यक्ष कर प्रमाणित कर देना कि आज शाँ देवी-देवताओं के दर्शन ब्रह्मव हैं और आज भी साधनाओं के माध्यम से दैवीय साहायता प्राप्त कर जीवन की प्रत्येक समस्या के ऊपर विजय प्राप्त की जा सकती है।

४. विदेशी हुक्मन से खोए हुए आत्म विश्वास को पुनः नगाकर एहसास कराना, कि भारत कभी इन्हीं साधनाओं के बल-बूते पर सोने की चिडिया कहलाता था।

५. पारव विज्ञान, ज्योतिष, स्वर्ण विज्ञान, आयुर्वेद,

परा-विज्ञान, सूर्य विज्ञान, हावी-कादी विज्ञान, अणिमा-महिना आदि सिद्धियाँ, बायु गमन, टेलिपैशी, चूर श्रवण, दूरव्वर्णन, कुण्डलिनी जागरण, पदार्थ परिवर्तन आदि उच्चकोटि का जान मान अत्यन्त कठिन संस्कृत भाषा में होने के कारण दिग्दत्त समाज तक ही रोमित रह गया था, उसे सरल भाषा में छोटी छोटी पुस्तकों वा मासिक पत्रिका के रूप में सुलभ कराना।

६. दिग्गमित, तनावयुक्त तथा पश्चिमी सम्यता से पूर्णतः प्रभावित पीढ़ी के समझ वैज्ञानिक रूप में भारतीय पूर्वजों की सबोन्न ज्ञान निधि को प्रस्तुत कर उसका प्रचार-प्रसार करना।

७. और यह एहसास कराना, कि इन साधनाओं को समाज को कोई भी पुरुष अच्छा स्त्री, छोटी या बड़ा, किसी भी जाति का, अनेकों का चाहे कम पढ़ा हो अच्छा विज्ञान — सभी इन साधनाओं को सम्पन्न कर लाभ उठा सकते हैं।

दिव्य रूप में विराजमान सदगुरुदेव की कृपा से नोचेतना साधना शिविरों में आ रही है, उसके साथ ही हर शिष्य आतुर हो रहा है, कि वह कर्तव्य करने के लिए तत्पर है और जब सब शिष्यों की ऐसी ही भावना है, तो सिद्धाश्रम साधक परिवार का विस्तार कौन रोक सकता है? कौन नये युग की आवाज को रोक सकता है?

८. जून १९२८ को इसी दिशा निर्देश के साथ सदगुरुदेव ने कहा था, कि कब तक मैं तुम बालकों का हाथ धाम कर चलूँगा, अब तुम बड़े हो गए हो, तुम्हें अपनी जिम्मेदारी समझनी है।

इसी निम्मेदारी का बहन करने के लिए आवश्यक है, कि प्रत्येक स्थान पर 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' की शाखा का गठन हो, ऐसा कोई निलंबन, तहसील, विकास खण्ड न बचे जाना सिद्धाश्रम साधक परिवार की इकाई न हो।

इसके लिए आवश्यक है, कि प्रत्येक साधक निम्न १५ सूत्रों का दृढ़ता के साथ पालन करें —

१. प्रत्येक साधक गुरु दोषा प्राप्त हो।

२. अपने स्थान पर 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' की स्थापना करें, और इसके लिए कार्यकारिणी समिति का गठन करें, और इसी नाम से बैंक एनाउंट खोलें तथा प्रारम्भ में ही सभी चदस्यों से 'डोनेशन' के रूप में कुछ द्रव्य जमा कराएं, जिसमें कार्य सुचारू रूप से चल सके।

३. प्रत्येक महिने को इकीमास तारीख को समस्त साधक किसी पक गुरु भाई के बहुं एकत्र होकर भजन, पूजन, सामूहिक साधना, प्रीतिमोज आदि करें। इसके अतिरिक्त प्रत्येक रविवार की शाम को सभी सदस्य एक स्थान पर एकत्र होकर गुरु आरती समाप्त कर विचार विमर्श करें।

४. प्रत्येक साधक पत्र लिखते समय ऊपर 'श्री गुरु वरण कामलेभ्यो नमः' लिखें।

५. प्रत्येक साधक किसी भी मीटिंग के समाप्त सिद्धाश्रम

सामर्पित शिष्यों को सम्मान

प्रत्येक वह साधक जो कि पत्रिका के १०० लापु सदस्य बना एगा, उसे पूज्य गुरुदेव श्री लब्दकिशोर श्रीगाली जी द्वारा किशी शिविर में स्टेज पर 'रत्न जटित निखिलेश्वर माल्य' पुरुष 'शुद्ध पारद निर्भित निखिल विज्ञह' प्रदान किया जाएगा। इन दोनों ही साग्रहियों को विशेष देवत रेखा में प्राण प्रतिष्ठित पूर्ण वैतन्य किया गया है। ये दोनों ही वस्तुएँ साधक के लिए रक्षा कवच सिद्ध होंगी और पुक सम्मान के तौर पर घरेहर भी।

साधक परिवार का बैज अवश्य धारण करें।

६. प्रत्येक साधक दूसरे से मिलते समय अथवा फोन करते समय बात का प्रारम्भ एवं अंत 'जय गुरुदेव' सम्बोधन से करें।

७. प्रत्येक साधक नित्य ४ माला गुरु मंत्र अवश्य जपें।

८. दो महिने में एक बार अवश्य ही गुरुदेव से जाकर मिले एवं अपने किए गए कार्यों की जानकारी दें।

९. प्रत्येक नगर में सिद्धाश्रम साधक परिवार की स्थापना होने पर लेटर पैड अनवा लैं, जिसके ऊपर 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' लगा हो। इसके अतिरिक्त गुरुधाम जोधपुर, दिल्ली एवं स्थानीय शाखा का पता भी छापा हो।

१०. प्रत्येक साधक हर माह कम से कम एक नए कार्यों को पत्रिका सदस्य बनाए।

११. प्रत्येक साधक जहां भी मीटिंग या गुरु आरती हो, वहां अवश्य जाए और पूर्ण मनोयोग से गतिविधियों में भाग ले।

१२. यदि कहीं निकटवर्ती क्षेत्र में किसी शिविर का आयोजन हो, तो तो उसमें भाग ले।

१३. अपने खांचे पर अपनी अनुमतियों को प्रकाशित करावें, साथ ही स्थानीय पत्रों में गुरुदेव एवं साधना सम्बन्धित जानकारी को लेख अच्छा विज्ञापन के स्पष्ट में प्रकाशित करावें।

१४. उठने, बैठने, खाते, पीते अहर्निशगुरु मंत्र का यथा सम्बव नप करते रहें।

१५. अपनी शाखा की गतिविधियों एवं किए गए कार्यों की रिपोर्ट स्थानीय शाखा के लेटर पैड पर निखत कर हर दूसरे माह जोधपुर के पते पर मेंजे।

१६. सिद्धाश्रम साधक परिवार में न तो कोई अध्यक्ष हो, और न कोई अधिकारी इसके तो प्रेरक संस्थापक और प्रेरणाधार एवं सर्वस्व शिष्यों के प्रिय मात्र सदगुरुदेव निखिल ही है।

निम्नलिखित आपके इन कार्यों से सिद्धाश्रम साधक परिवार ५८ दिन विश्व भर में फैल सकेगी और दूर विश्व को गुरु मंत्र से मुक्तायमान ही सकेगा।

सद्गुरु का अवतरण दिवस

२१ अप्रैल

दिव्य आनंद ३ल्लासु पर्व

प्रे

रणा पुरुष निश्चय ही किसी न किसी गर्भ से जन्म लेते हैं, जो कि उनका अवतरण विवस होता है। वे इस संसार में दहरूप में दस वर्ष रहे अध्या सी वर्ष — अपना कार्य सम्पन्न कर देते हैं। यह परमपरा भगवान राम के जन्म से बली आ रही है। राम नवमी भगवान राम का जन्म दिवस है, कृष्ण जन्माष्टमी भगवान कृष्ण का, बुध जयंती भगवान बुद्ध का और महावीर जयंती भगवान महावीर का इस संसार में अवतरण दिवस है। अपनी अपनी श्रद्धा और विश्वास के अनुचार विद्य पुरुषों के जन्म दिवस हथोल्लास के साथ सम्पन्न किए जाते हैं और इसे जयंती इस लिए कहा जाता है क्योंकि इन दिव्य पुरुषों ने इस दिवस को आकर संसार में नया का धोष प्रारम्भ किया। घटाटोप अंधकार के बाद जब सूर्योदय होता है, तो वह दर्शन ही दिव्य होता है, योगी महापुरुषों का जन्म भी संसार में अर्धम, दुर्ख की काली अमावस्या के बाद सूर्योदय के समान है।

जन्म दिवस संतप्त और निराश होने का पर्व नहीं है, यह पर्व तो इदय का उल्लङ्घित करने वाला पर्व है। इस दिवस को महापुरुषों ने जो ज्ञान और चेतना दी है, वह ज्ञान और चेतना आज भी विद्यान है। जन्म दिवस तो संकल्प लेने का दिवस होता है, कि उन महायोगियों ने जो कार्य किए वह यशान आगे उसी प्रकार प्रज्ज्वलित होती रहेगी। मिक्की के दस गुरु हुए हैं — गुरु नानक देव जी, गुरु तेग चहांदुर, गुरु अनुन देव, गुरु अंगददेव, गुरु अमरदान, गुरु हरगेरिन्द, गुरु हरकिशन, गुरु रामदान, गुरु गोविन्द सिंह — इनमें से प्रत्येक की जयंती पूरे भारत वर्ष में उनके अवतार दिवस अर्थात् जन्म दिवस को धूम धाम से सम्पन्न किया जाता है। इन दिवसों पर कोई भी पंथ अनुयाई निराश और उद्गम नहीं दिलता है, वह तो प्रेरणा और प्रसन्नता के बड़ाव में ही उल्लङ्घित हो जाता है, कि आज मेरे गुरु का अवतरण दिवस है।

इसी प्रकार स्वामी व्यानंद वरन्वती, गुरु रवीदास, श्री रामकृष्ण परमहंस, श्री चेतन्य महाप्रभु, आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य,

श्री रामानुजाचार्य, स्वामी रामतीर्थ, शिरडी के चाई बाबा के अलावा राजनीतिक महापुरुष महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, लाला लाजपत राय इत्यादि के जन्म दिवस भी हृष्ट और उल्लास से सम्पन्न किये जाते हैं। यह तथ्य है, कि वे सारे महान व्यक्तित्व आज हम धरा पर नहीं हैं, लेकिन क्या इनके द्वारा किए गए कार्य रामराम में समाप्त हो गए हैं? क्या उनके व्यक्तित्व का प्रकाश आज धूमिल पड़ गया है? इन महापुरुषों का व्यक्तित्व तो समय चक्र में और भी अधिक तोंडता से उभरता है और संसार में हर एक को आवाहन करता है, कि मैंने अपने जीवन में कुछ कार्य किए हैं, उन कार्यों को समझ सको, अपना सको तो जीवन निखर सकता है।'

पूर्य सद्गुरुदेव का अवतार दिवस २१ अप्रैल है और यह अवतार दिवस हम सब के लिए प्रेरणा का आधार है, कर्तव्य का प्रारम्भ है, हृदय का आमा दिवस है। सद्गुरुदेव तो अब कोटि-कोटि हृदयों में विराजमान है, २१ अप्रैल को हम उनको याद करने की किंवा नहीं कर रहे हैं, २१ अप्रैल को हम चैतन्य कर रहे हैं अपने हृदय की धृदकन को उस प्रसन्नता को अपने अन्दर समाहित करने का प्रयास कर रहे हैं, जो सद्गुरु की समझने से ही प्राप्त होती है। यह दिवस जोश, उल्लास और हृष्ट का दिवस है — ऐसा जोश जो यह सिद्ध कर दे, कि मैं मन, प्राण, रोम, प्रतिरोम से चैतन्य हो रहा हूँ, अपने आप को चैतन्य करने के लिए यह श्रेष्ठतम पर्व है।

तीन दिन का यह उल्लास पर्व १९-२०-२१ अप्रैल को हम भोपाल में सम्पन्न करेंगे और जिस साधक/गिरिय के मन में सद्गुरु द्वारा भी गई एक हल्की भी चिनगारी भी है, वह इस उल्लास पर्व पर अवश्य ही सम्मिलित होगा... और जब हनारो-लाखों चिनगारियां एक साथ मिलेंगी तो वह उल्लास पर्व दिव्य न्योति पर्व के रूप में परिवर्तित हो जाएगा — ऐसी दिव्य ज्योति जिसे संसार की कोई जांधी नहीं बुझा सकती।

शक्तिपात

साधना सिद्धि की मूल प्राण ऊर्जा, जो केवल गुरु कृपा से ही संभव है

ह साधना भिन्न में शक्तिपात सबसे महत्वपूर्ण किया है और यह क्रिया केवल गुरु ही शिष्य के प्रति सम्मत कर उसमें एक शिष्यत्व प्रक्रिया प्राप्ति करते हैं, और जब यह सिद्धि प्राप्ति होती है, तो शिष्य की सभी सुप्रशंसियाँ जागृत होती हैं। शिष्य जब गुरुवेव के पास आता है, तो वह विशाहीन तथा अपने कर्मों के कारण मुक्ति-ज्ञान और सिद्धि के मार्ग से भटका हुआ होता है, इस अवरुद्ध मार्ग से उसे सही मार्ग पर लाने के लिए जो क्रिया सम्पन्न की जाती है वही शक्तिपात है।

शक्तिपात द्वारा गुरु अपनी शक्ति को शिष्य में संचरित करते हैं और यह क्रिया केवल गुरु कृपा द्वारा ही संभव होती है। 'मालिनी विजय' ग्रन्थ में लिखा है कि -

शक्तिपातात्कुस्तारेण शिष्टोऽतुग्रहमहर्ति।
वत्र शक्तिर्ज पतति तत्र सिद्धिर्ज वरयते

अर्थात् शक्तिपात के अनुसार ही शिष्य अनुग्रहीत होता है, शक्तिपात न होने से सिद्धि की प्राप्ति नहीं हो सकती।

गुरु कृपा से ही यह गुरु प्रसाद प्राप्त होता है, साधना के मूल रहस्य एवं कृष्णलिनी जागरण की प्रक्रिया केवल शक्तिपात से ही प्राप्त होती है, इसके कारण उसकी शक्ति का जो जागरण होता है, उससे वह मंत्र सिद्धि एवं तंत्र सिद्धि प्राप्त करता है। शक्तिपात शिवत्व भाव है, इस सिद्धि तक पहुंचने के लिए शिष्य को अपनी भक्ति का, अपने भाव का, अपने विष्वास का, अपनी श्रद्धा का स्वरूप गुरुदेव के सामने स्पृष्ट करना आवश्यक है . . . क्योंकि साधना में सिद्धि के लिए

मैं छींज ढो रहा हूँ।

- पर दृश्यान रहे, कि ये छींज जमीन के ऊपर ही न रह जाएं, ये छींज व्यर्थ ही न चले जाएं, ये जमीन में गड़ जाएं, ये भिट्ठी में भिल जाएं। इनमें अंहंकार न रह जाए।

- और ऐसा हुआ, तो मैं पूरी पृथ्वी को सिद्धाश्रम बनाकर दिखा दूँगा।

- पूर्य सदगुरुदेव डॉ० नारायण वत श्रीमाली

आवश्यक है कि -

वस्त्र देवे परर भक्तिर्द्वय देवे तदा गुरो।

अर्थात् साधक की जैसी भक्ति देवता में हो, जैसी ही गुरु में भी होना चाहिए।

जीसा में कृष्ण कहते हैं - हे अनुन! जिस प्रकार अग्नि काष्ठ अर्थात् इंधन को जला कर भस्म कर देती है, उसी प्रकार शक्तिपात की ज्ञान रूपी अग्नि शिष्य के समस्त वोषों को भस्म कर देती है।

गुरु अपने शिष्य को तीन प्रकार के शक्तिपात प्रक्रियाओं से गुजारते हैं - १. तीव्र, २. मध्यम और ३. मन्द इनमें भी प्रत्येक के तीन-तीन घेव हैं। जैसे-जैसे शिष्य अपनी श्रद्धा व समर्पण में आगे बढ़ता है, उसी अनुसार गुरु उसे क्रमबद्ध रूप में मन्द से तीव्र की ओर शक्तिपात प्रदान करते हैं।

जब गुरु शक्तिपात करते हैं, तो
देशियों के दोनों का जो प्रहार सहन
करते हैं, उसकी पीड़ा होने पर भी दे
अपने श्रीमुख पर प्रकट नहीं करते, उसी
मधुर मुस्कान के साथ शिष्य की पीड़ा
को झेलते हुए उसे श्रेष्ठ मार्ग पर आगे
बढ़ाते रहते हैं।

शक्तिपात प्राप्त करने हेतु शिष्य में भी कुछ गुण होने
चाहिए, जिस प्रकार बंजर भूमि में बोया गया बीज वृक्ष नहीं
बन सकता, उसी प्रकार यदि शिष्य अविवेकी, पुरुषार्थी है
इ, तो उसका उद्धार नहीं हो सकता, अतः शिष्य को सत्याग्रह,
अद्वालु, विश्वासी, विचारशील होना आवश्यक है।

'योग वशिष्ठ' में लिखा है, कि जो व्यक्ति समाधि के
साधनों गुण और शील से युक्त हो, स्वच्छ वस्त्र धारण करने
वाला, सदाचार का पालन करने वाला, शक्ता-भक्ति से युक्त,
विचारवान, गुरु के प्रति अद्वा एवं निष्काम भाव युक्त भक्ति
रखता हो, वही दीक्षा और शक्तिपात का अधिकारी है।

जिसके मन में अद्वा नहीं है, वह गुरु कृपा का प्रसाद
प्राप्त नहीं कर सकता।

शक्तिपात की वैद्यानिक क्रिया

जिसने शक्ति का संचय किया है, वही अपनो शक्ति
दूसरों को वितरित कर सकता है, गुरु जो धण्डार अपने भीतर
एकत्रित करते हैं उसे सीमित न रख कर अपने शिष्यों में बांट
देते हैं, अपने तथ एवं जान की पूँजी को श्रेष्ठ उद्देश्यों से शिष्यों
में बांटना ही शक्तिपात है।

शक्तिपात की क्रिया स्पर्श द्वारा अथवा नेत्रों द्वारा शिष्य
को देखकर जाग्रत की जा सकती है, जब शिष्य गुरु चरणों का
स्पर्श करता है, तो उसे असाधारण प्रसन्नता का अनुभव होता
है क्योंकि गुरु चरणों से शिष्य को गुरु की शक्ति प्राप्त होती है
और इस संचारण किया से शिष्य के भीतर शुद्ध भाव जाग्रत
होते हैं, उसकी समर्थ्य बढ़ती है।

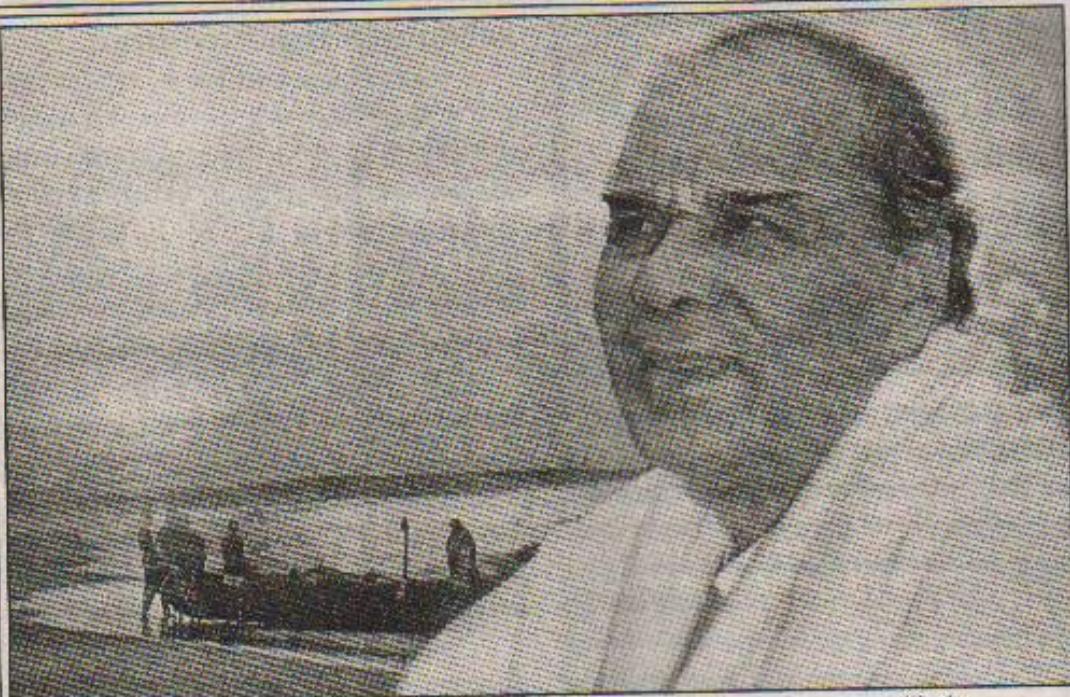
'मुचाल उपनिषद' में लिखा है कि जिस शिष्य ने
अन्नाकरण से एक महीना, छः महीने अथवा एक वर्ष गुरु सेवा
की हो, तथा गुरुदेव द्वारा ली गई परीक्षा में सफल रहा हो,
वही शक्तिपात प्राप्त कर उसका उपयोग कर सकता है।

निष्काम भाव से जो शक्ति संचारण होता है, वह शिष्य
के लिए वरदान है और यदि शिष्य इसे ग्रहण करने में असमर्थ
रहता है, तो वह उसका दुर्भाग्य है, अपने जीवन में गुरु तत्व
को पहिचान कर उनकी भक्ति द्वारा अपने भीतर शिवात्म भाव
और शिवात्म भाव से पूर्ण ब्रह्मात्म भाव की प्राप्ति ही परम
लक्ष्य होना चाहिए, और वही शिष्य का मार्ग है।

... और अब यह उत्तरदायित्व तुम्हारा है

- अ मुझे जो कहना था वह काफी कुछ कह दुका हूँ, मुझे जो बचाना था वह काफी बता दुका हूँ।
अब तुम्हारी जिम्मेवारी बढ़ जई है, अब तुम्हारा उत्तरदायित्व ज्यादा बढ़ गया है।
- अ तर्योंके अब मेरी जबान केवल मेरी ही नहीं रही, तुम सब की जबानों में मेरी ही आवाज, मेरे ही
शब्द श्वनित हो रहे हैं।
- अ और अब मेरे प्रवचन केवल मेरे ही प्रवचन नहीं रह जपे हैं, तुम सब के शब्द, श्वभि और वाक्
शक्ति मेंमें ही श्वनित हो रहा हूँ।
- अ अब मैं लाख लासा रूपों में बंद रहा हूँ, अब मेरा शरीर केवल मेरा ही शरीर नहीं रह गया है, तुम
सबके शरीरों में मेरा शरीर बंद रहा है।
- अ और इसीलिए तुम्हारी जिम्मेवारी, तुम्हारा उत्तरदायित्व ज्यादा बढ़ गया है, कि अब मेरे संदेश
को कूर-कूर तक तुम्हें ही पहुंचाना है।
- अ हवा के झोंके की तरह मेरी सुगंध लेकर चारों तरफ पूरे विश्व में फैल जाना है।
- अ और अब यह उत्तरदायित्व तुम्हारा है।

- तत्त्वगुरुदेव द्वारा नारायण दत्त श्रीमानी
रचित 'गुरु सुवर्ण' पुस्तक से



प्रातः स्मरणीय पूज्यपाव सवशुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

क्रू पूरे जीवन समुद्र में अगर कहीं पर आनन्द स्त्री द्वीप है, कहीं पर जीवन की उपलब्धि है, कहीं पर जीवन का एक चिन्तन और धारणा है, तो वह 'प्रेम' है। यदि जीवन में प्रेम न हो, तो सारा जीवन एक भियादान जंगल की ठरह हो जाता है।

क्रू प्रेम भगवान् और भक्त का आंतरिक सम्बन्ध है, एक पूर्ण हृदय का हृदय से सम्बन्ध है, प्राणों का प्राणों से सम्बन्ध है, उसमें वासना नहीं है, उसमें क्षुद्रता नहीं है, उसमें ओलापन नहीं है।

क्रू तुरु या ईश्वर से एकाकार होने के लिए मन में प्रेम का एक छीज छोड़ा पड़ता है, प्रेम का एक चिन्तन स्पष्ट करना पड़ता

है, क्योंकि प्रेम के माध्यम से ही ईश्वर के वर्णन कर सकते हैं, उनसे मिलन कर सकते हैं, उनका छद्य में स्थापन कर सकते हैं।

क्रू पुरुष हमेशा आथा हृदय पक्ष से और आथा बुद्धि पक्ष से सोचता है। एक काण सोचता है, कि यह उपित है या अमृचित, करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए, ऐसा करना ठीक रहेगा कि नहीं रहेगा, ऐसा करने से लोग क्या कहेंगे? क्या नहीं कहेंगे? यह सब बुद्धि सोचती रहती है, और अगर मनुष्य ऐसा सोचता है, तो वह प्रेम नहीं कर सकता।

क्रू अगर भगवान् को साकात् देखना है, उस प्रभु के सामने बृत्य करना है, उस प्रभु को अपनी आँखों में बसा लेने की किंवा करनी

हृदय धारा

'मंत्र मूलं गुरो वार्त्यं' - सदगुर

जो कि साकात् शिव का दी न्वस्य होते हैं, जो नर मरण के बन्धन से परे होते हैं, जो शाश्वत होते हैं, जो मात्र जीव के कल्याणार्थ ही कल्याण के वशीष्टत होकर जगत में देह रूप में अवतरित होते हैं, उन ब्रह्मस्वरूप ब्रह्ममूर्ति गुरुदेव के श्रीमुख से निकले वचन कई-कई मंत्रों से भी बढ़ कर होते हैं। जब साधक गुरु की कहीं आत्मों का अर्थ समझने लगता है, और उनकी आत्मों को आत्मसात् करता हुआ अपने जीवन में उतारने लगता है, तो उसका शिवात्म निखरने लगता है, उसमें गुरु का शण उतारने लगता है, फिर साधनाएं और सिद्धियाँ उससे कुर नहीं रह जाती।

पविका का यह मध्य पृथ, मात्र पृष्ठ ही नहीं है, इस पृथ पर पूज्य गुरुदेव स्वयं विराजमान होकर अपनी विव्य धारी के माल्यम से अपने शिष्यों व साधकों का अपने अमृत वचनों से पिंचन कर रहे हैं, उनको दिशा निर्देश दे रहे हैं, नीवन के स्वर्णिम सूतों का उद्घाटन कर रहे हैं।



है, तो वह स्त्री हृदय धारण कर ही देखा जा सकता है। स्त्री का अर्थ है, जिसका हृदय पक्ष जागत हो, क्योंकि हृदय पक्ष को जागत करने की क्रिया ही प्रेम है।

ॐ यदि कोई शिव्य चाहे, कि मैं गुरु को हृदय में समेट लूँ, गुरु को अपने जीवन में पा लूँ, गुरु को अपने में आत्मसात् कर लूँ और यदि उसके हृदय में प्रेम की सरिता नहीं है, यदि उसके हृदय में प्रेम का रस नहीं है, तो वह अपने जीवन में, अपने हृदय में गुरु को उतार भी नहीं सकता।

ॐ शिव्य भी स्त्री बनकर गुरु को प्राप्त कर सकता है, हृदय पक्ष को जागत करके अपने आप में देता प्राप्त कर सकता है, उस भावना को प्राप्त करके कि मेरा केवल एक ही चिन्ताज, एक ही तथ्य, एक ही धारणा है कि अपने जीवन में गुरु को आद्वासात कर सकूँ, जीवन में ही नहीं, अपने प्राणों में आट्सात कर सकूँ, प्राणों में ही नहीं, मेरे रोम-रोग में, रेधे-रेशे में, रण-रन में गुरु स्थापित हो सकें।

ॐ पूरे शरीर में, रोम-रोम में गुरु को बसा लेने की जो क्रिया है, गुरु में डूब जाने की जो क्रिया है, वह प्रेम के माध्यम से ही सम्भव है।

ॐ प्रेम सम्पूर्ण जीवन का आधार स्वरूप है, यह रास है, महारास है, वसन्त है, जीवन का उद्गम है, माजव जीवन की सम्पूर्ण सिद्धि है, और दूंद से समुद्र बनने की क्रिया है।

ॐ कुण्डलिनी जागरण, सहस्रार भेदन, इष्ट दर्शन और छाण से साकाट्कार करने की सम्पूर्ण प्रक्रिया का नाम ही 'प्रेम' है, और जिसने प्रेम को जान लिया उसने सब कुछ पूर्णता के साथ पा लिया।

ॐ प्रेम की पराकाष्ठा प्राप्त करने के लिए असहनीय वर्त, तीव्र वेवना को सहन करना पड़ता है, बहुत तड़फ्फा पड़ता है।

ॐ जुदाई तो अपने आप में एक तपस्या है, किसी का इन्द्रजार है, अपने आप में पूर्ण साधना है। किसी को याद करना, किसी के विनाश में झें रहना, अपने आप में ईश्वर की साधना है।

ॐ यह तड़फ्फ जिन्दगी का सार है, जिन्वनी का आधार है, जीवन की मस्ती है, और इसी प्रभुण्डी पर चलकर तुम मुझे प्राप्त कर सकते हो।

आओ गिलं भोपाल में

प्रिय आत्मन्,

शुभाशीर्वादः

०१, चैत्र शुक्ल पक्ष,

गूठन संवत् शक् २०५६

निखिलेश्वर पंचक का जब हम पाठ करते हैं, तो हक्क श्लोक के अंत में कहते हैं, 'कुकत्वं शब्दयं नुकत्वं शब्दयं' – यह आव शिष्य के हृदय से जब उच्चारित होता है, तो महामंत्र बता जाता है, सद्गुरुकेव तो शिष्यवत्साल ही हैं, जिन्होंने अपने पात्र आए हव शिष्य जाधक को अपनी मधुक मोहनी मुख्कान के लाथ अपने बींगे जो लगाया और कहा कि तुम मेरे हो, अब तक कहां विमुड़ अपु थे?

जमर्णा और कर्तव्य जब साथ-साथ चलते हैं, तो जीवत का लक्ष्य प्राप्त होता है। शिष्य के जीवत का लक्ष्य तो सद्गुरुकेव की मुख्कान में निहित होता है। सद्गुरुकेव के वचन उसके लिये मंत्र होते हैं, सद्गुरुकेव के भाव उसके लिए कार्य होते हैं, उनका प्रत्येक प्रवचन हजारों भृत्यों को उद्घाटित करता है। कवन तो कायर और कमजोर करते हैं, जो केवल वेद से व्याक करते हैं, वे मृत्यु को मारते हैं। जो शाव से व्याक करते हैं, वे तो सद्गुरुकेव को अपने हृदय में न्यायित कर लेते हैं, और वह आव उन्हें कभी भी किसी भी प्रकार की मृत्यु को भ्रष्टाकर नहीं करते केता। सद्गुरुकेव ने लद्वैर 'मृत्योर्मा अमृतं नमय' का ही जांकेश दिया है। मृत्यु से अमृत्यु की ओर जीवन की यात्रा साधना जमर्णा विश्वास के माध्यम से की जा सकती है।

२१ अप्रैल तो पावनतम पर्व है, यह हर्ष और उल्लास का ब्रह्म पर्व है, जिस दिन सद्गुरुकेव इस धरा पर यथाने देह कल्प में, माया शिखेवी, लीला दिखाई, धर्म की पुनर्स्थापना की, साधना और तपश्चया का योग बल पुनर्जीवित किया, साधक को उसके 'ज्ञ' का आभास कराया और फिर वे कोटि-कोटि हृदयों में विशाजमान हो गए।

मार्च-१८ में सद्गुरुकेव ने शिष्यों को आवाहन करते हुए कहा कि 'मुरुद्य बात तो यह है, कि तुम वह स्वरूप साक्षात् कर लो, उसका दर्शन प्राप्त कर लो, जिसे निहारने के बाद समाधि कोई पृथक भावभूमि यह ही नहीं जाती। गुरु से मिलना, ऐसा ही साक्षात् करने का क्षण होता है। वही समाधि की वास्तविक रक्षा होती है और ऐसी समाधि किसी भी पठिभाषा से बद्ध नहीं होती। न यह निर्विकल्प होती है न सविकल्प। निर्विकल्प अथवा सविकल्प होना तो जड़ समाधि की स्थिति हो सकती है, किन्तु यह स्थिति तो प्रत्येक जड़ता से उन्मुक्त होने की घटना होती है। २९ अप्रैल वस्तुतः तुम्हारे ही गूठन जड़न लेने का पर्व है, क्योंकि गुरु जन्म-मरण की उपाधियों से निरांत मुक्त ही होते हैं। गुरु का 'जन्म' तो प्रतिक्षण होता रहता है। प्रतिक्षण ते जड़न लेने को एक प्रकार से कहूं तो आदुर ही रहते हैं – अपने शिष्यों के हृदय में, उसकी मनोभावनाओं में।'

किंतु आव पूर्ण बात कही, कि गुरु और शिष्य का अन्वर्य कितना पवित्रतम अन्वर्य होता है। वे हव बाव संकेत के माध्यम से नहीं, व्यष्ट तौर पर शिष्य की चेतना जाग्रत करने के लिए कहते थे।

गार्थ-१६ में उन्होंने कहा - 'तुम बाट-बाट आकर मुझसे निलते हो, लेकिन सिर्फ शब्दों से ही निलते हो, कहने मात्र के लिए ही निलते हो। तुम्हारा मुझसे निलगा तो तब सार्थक हो सकेगा, जब तुम मुझे अपना जीवन बना लोगे, जब तुम मुझे अपने स्वृग की एक-एक बूँद में उतार लोगे। मुझे अपने अन्दर कृतगी गङ्कराई में उतार लो, कि तुम मुझसे अलग रह ही न सको और ऐसा तभी सम्भव हो सकेगा, जब मैं तुम्हारा हृक्य बन तुम्हारे भीतर थड़कने लगूंगा। ऐसा नहीं है, कि तुमने प्रयास नहीं किया है, मुझे अपना हृक्य बनाने के लिए, लेकिन इस बाट जब तुम आओगे, तो— अवश्य तुम्हारे प्रयास को सार्थक कर दूँगा। मैं चुनौत तुम्हारा हृक्य बन जाऊंगा।'

आध्यात्मिकता और जन्मान्तर का अर्थ यदि पूज्य गुरुकेव से सम्बन्धित हुआ है, तो इसका अर्थ ठीक वही नहीं होता जो ज्ञानात्मव्यक्ति से सम्बन्धित होता है। उनकी आध्यात्मिकता का अर्थ है — अब पूज्य लक्षणुकेव भक्तिय जीवन से कुछ विमुच्य होकर कार्य करेंगे, जो आवे वाली पीढ़ियों के लिए प्रकाश जननम का कार्य करेंगे। गुरुकेव तो चित्त स्वरूप हैं, कह बै अपने चित्त से उसी पवित्र भावभूमि पर वायर चले जाएंगे, जिसे जिद्धाश्रम कहा जाता है, यह कोई नहीं जानता। आय इस अन्त में नत रहियु, कि वे जनशील ही सिद्धाश्रम जाएंगे। शक्ति उनका अनुचर है, जे शक्ति के नहीं। यह ग्रात उन्होंने १६ में ही स्पष्ट कर दी थी।

गुरुक जन्म दिवस तो प्रेम का दिवस होता है, अमृत दिवस होता है, जिसमें शिष्य उस प्रेम से अभिभूत होता है, कि मैं कितना धन्य हूँ और यह दिवस कितना धन्य है, जब लक्षणुकेव इस धरा पर आए।

यह एक दुखा उत्तम है, जो होली के बंध-बिंधों बंगो ले जाताबोह छै, जो दीपावली की जन्मनावाहट एवं जात्यनात्मक तीव्रता ले युक्त है, जो महाशिवरात्रि के अमृत तत्व ले पूर्ण है एवं जो जन्माष्टमी की प्रेम दृष्टि ले आप्तावित है — और यही काषण है, कि हमारे बैकों, हमारे शास्त्रों एवं हमारे ब्रह्मियों ने इसको महोत्सव की जांका से विभूषित किया है।

२१ अप्रैल तो अग्रवान नावायण ने अपने जन्म और गुरु विद्मा ले और वर्षाय बना दिया है, जिसके साथ अनंत शिष्य जाथकों की धड़कनें जुड़ी हुई हैं। आज २१ अप्रैल का जन्म दिवस अपने आदों को स्पष्ट करा पर ले प्रबन्ध करने के लिए आया है। हमारे हृक्य का उल्लास, हमारी हृक्य की भावनाओं ले प्रकट होता और जहां भावनाएँ हैं, वहां भव कुछ ग्राप्त हो सकता है। यह आवाहन लक्षणुकेव के उन समर्पित शिष्यों के लिए है, जिन्होंने गुरु लाल को लमझा, जिन्होंने गुरु को अपने हृक्य कर्मल पर आमीन किया — ऐसे ही शिष्यों के लिए गुरुकेव ने अप्रैल-१३ के अंक में लिखा कि 'मैं इस पृथकी पर कुछ ढी समय और हूँ और अभी अनेक कार्य बाकी हैं।' जिस कार्यविशेष के लिए मैंने जन्म लिया है, वह तो समय आने पर पूरा हो ही जाएगा . . . उस ओर से मैं बिलकुल निश्चिन्त हूँ। मैं परेशान हूँ, तो अपने शिष्यों की ओर से . . . वे मुझे अत्यधिक प्रेम करते हैं और मुझे एहसास है, कि मेरे बिना वे एक क्षण भी नहीं रह सकते . . . पर . . . पर उनको भी यह समझना चाहिए, कि वे मेरे साथ कठिन परिश्रम, पूर्ण समर्पण एवं निर्भर होकर ही चल सकते हैं।'

२२ अप्रैल को हम जब एकत्र होकर लक्षणुकेव का आवाहन करेंगे, उनकी प्रसन्नता के लिए हृक्य बीणा के तारों को झंकूत करेंगे, गंडों के माध्यम से संकल्प लेंगे। हमें विश्वास है, कि जो श्वेति, जाथक, शिष्य जिसने लक्षणुकेव को अपने चर्म चक्षुओं से केला है अथवा गुरु प्रबचन को सुना है, गुरु पवित्र को केला है, दीक्षा ग्राप्त की है — यह प्रत्येक शिष्य इस उल्लास पर्व पर अवश्य ही आएगा।

— अलगोह

— 'अप्रैल' ११ मंत्र-तंत्र-यत्र विज्ञान '४३'

पाठकों के प्रभ

पटियाला से शतिन्द्र पाल धीमान ने पूज्य माताजी एवं गुरु त्रिमूर्ति के चरणों में सद्वर प्रणाम अपित करते हुए अपनी शिष्य भावना को उतारा है अपने पत्र की इन पंक्तियों में—

श्री सदगुरुदेव जी के महाप्रयाण के बाव हम आपके श्री चरणों की छाया में 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' के विस्तार के लिए कृतसंकल्प हैं।

श्रीसदगुरुदेव तो हमारे हृदयों में विराजमान हैं हीं। परिवार विस्तार के लिए हर महीने के अखिरी रविवार को किसी न किसी गुरु भाई-बहन के घर गुरु पूजन, हवन, गुरु चर्चा का कार्यक्रम होता है।

पुरानी पत्रिकाओं का वितरण, गुरुदेव द्वारा रचित ग्रंथों का प्रचार-प्रसार, उनकी वाणी में आडियो, वाडियो कैसेट्स का प्रचार-प्रसार, इन विधियों द्वारा सिद्धाश्रम साधक परिवार की योजना को कार्यरूप देने के लिए प्रयत्नशील हैं। कृपया हमें सामर्थ्य व शक्ति प्रदान करें।

सदगुरुदेव ने स्वयं ही तो अपने श्रीमुख से कई बार उच्चरित किया था—

तुम हो दीपक सारे, तुमको विश्वर है जलवा।

मेरी जलाई राहीं पर, तुमको जब है चलना॥

तुमको मैं दीपक से कर्तज बबालू दा,

जरा वक्त तो डाजे दो . . .

... और अब वक्त आ जाया है व शुद्धदेव?

हम सब आपके साथ हैं, श्रीसदगुरुदेव जी के सभी को साकार करने के लिए।

यह पत्र एक प्रेरणा स्तम्भ है, सभी शिष्यों व साधकों के लिए, कि हमें निरन्तर गुरु कार्यों में समर्पित बने रहना है।

— सह सम्पादक

प्रेरणाप्रद अनुभवि शेजने हेतु आपको पूज्य

गुरुदेव का एक गंध आशीर्वाद स्वरूप भेजा जा रहा है।

● माध्य प्रदेश के शार त्रिलो से रोकेश मण्डलोड लिखते हैं, कि गुरुधाम से प्राप्त ऐश्वर्य महात्म्यमी वंत्र से उनके जीवन में नये उत्साह का संचार हुआ है, तथा समस्याओं के निस-

चक्रब्रूह में दे दें, उससे उन्हें निदान मिला है।

● नैनीताल के हैडाखान से श्री कुन्दन सिंह सम्मल लिखते हैं, कि अपने एक परम मित्र के सम्पर्क में आकर उन्हें मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका पहनी बार पढ़ने को मिली थी। इसमें विदेशी गण लेखों और प्रकाशित साधनाओं से प्रभावित होकर, उन्होंने पत्रिका सदस्यता धारण की है और आगे लिखते हैं, कि पत्रिका का प्रत्येक अंक अपने आप में ओजस्विता लिए हुए हैं तथा जनमानस को चेतना जागत करने, व दुर्भाग्य को सौम्यमें बदलने वाली संर्जनीयों बूटी के समान हैं, दुखों से मुक्ति पाने का स्वर्ग द्वारा है। आगे लिखते हैं—

'मैंने माह जनवरी-१९५३ में पूज्य गुरुदेव से तंत्र वाधा निवारण दीक्षा प्राप्त की थी, और तभी से घर में सुख-शान्ति और धनाश्रम की स्थिति बनी हुई है एवं शनु पक्ष भी निस्तेज होता जा रहा है।'

● मिर्जापुर से एक पाठक का पत्र है, वे लिखते हैं कि तीन बच्चों से पत्रिका का प्रत्येक अंक उन्होंने पढ़ा है और यह पत्रिका इस युग में वरदान स्वरूप है। इसमें अनेक रोगों के साधनात्मक निदान भी मिले परन्तु पेलियो रोग से सम्बन्धित कोई साधना अथवा मंत्र प्रयोग नहीं मिला। कृपया ऐसी कोई प्रमाणी साधना शोध प्रकाशित करें।

— मनको धारण करने से मनुष्य शब्द बना है— प्रत्येक रोग की जड़ मनुष्य के मन में होती है, मन को नियंत्रित करने का एक सरल उपाय है मंत्र साधनाओं द्वारा रोगों का निदान सम्भव है, इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए 'स्वास्थ्य सरिता' स्तम्भ को पत्रिका में दिया जाता है। स्थानाभाव से प्रत्येक रोग के लिए प्रयोग देना सम्भव नहीं होता, इसलिए कई समस्याओं का समाधान व्यक्तिगत प्रत्युत्तर द्वारा प्रेषित कर दिया जाता है। पत्र में आपने आपना नाम व पता लिखा नहीं है। हम प्रयास करेंगे कि आपको आपका समाधान दिया जा सके, चाहे वह पत्रिका के माध्यम से ही अथवा व्यक्तिगत पत्र द्वारा।

— सह सम्पादक

इस स्तम्भ के प्राप्तम से हमें यह जानकारी प्राप्त होती है, कि आपको पत्रिका का यठ अंक कैसा लगा? आपके लगा या समान्य सा ढी लगा? आपको पत्रिका में किस प्रकार के लेखों का प्रतीक्षा रहती है? किस प्रकार की साधनाओं को आप चाहते हैं? आपके सुझाव, आपकी प्रतिक्रियाएं, आपके सुझाव द्वारा ही आपकी प्रिय पत्रिका को और भी अधिक लाभप्रद बनाया जा सकता है, अतः आपके पत्रों की हमें प्रतीक्षा रहती ही है।

निखिल जन्मोत्सव समारोह में भाग लेने हेतु प्रपत्र

तीन मित्रों के नाम एवं डाक पते -

१. नाम
पूरा पता

२. नाम
पूरा पता

३. नाम
पूरा पता

उस यशस्वी साधक का नाम जिसने तीन सदस्य बनाकर जन्मोत्सव शिविर में भाग लेने की पात्रता प्राप्त की है

नाम
पूरा पता

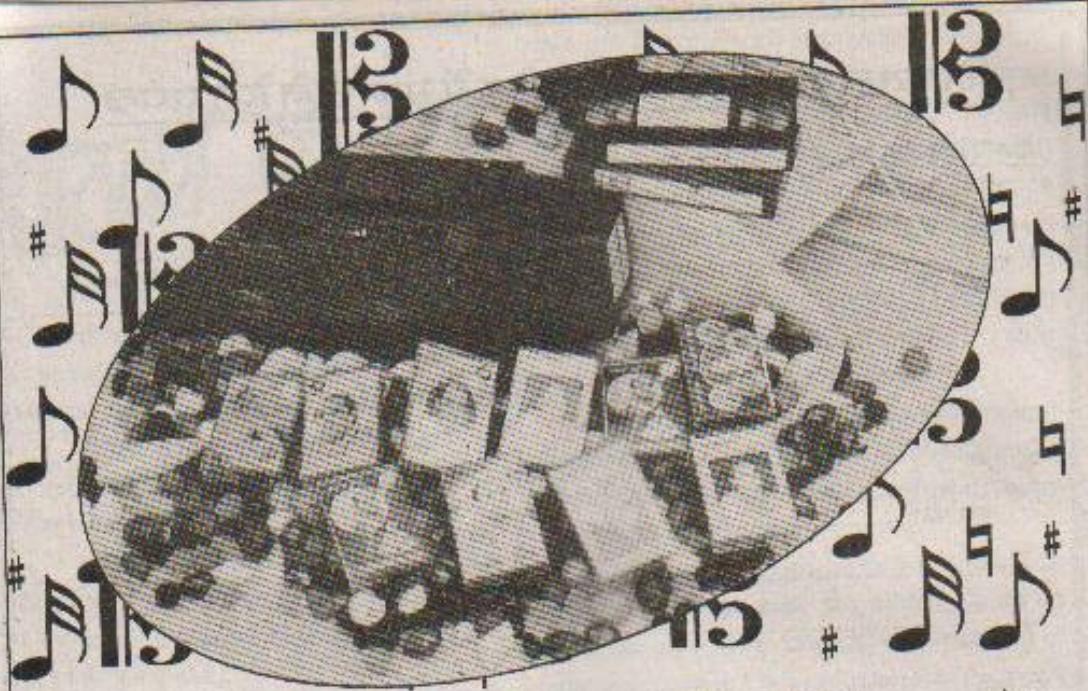
विशेष : जो साधक पत्रिका के तीन नए सदस्य बनाएगा (जो आपके परिवार जन न हों) बनाएगा, उसे ही इस शिविर में साधक के रूप में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो सकेगा। इसके लिए आपको किन्हीं तीन मित्रों अथवा परिचितों को पत्रिका का सदस्य बनाने के लिए प्रेरित करना है और उनसे पत्रिका सदस्यता शुल्क ले लेना है।

इस प्रकार आपको इस प्रपत्र में तीनों मित्रों के स्पष्ट अक्षरों में पूर्ण प्रामाणिक डाक पते पहले से ही भर कर रख लेना है, जिससे कि आप घोपाल पहुंचते ही इस प्रपत्र के साथ रु० ७५०/- जमा करा कर शिविर में भाग ले सकें।

सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर, फोन : ०२९१-४३२०९

‘अप्रैल’ १९ मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान ‘४५’ ५



मख्मल सी कोमल अध्यात्म रशिमयों से सराबोर

इस जाह की नई आँड़ियों कैसेट्स :

1. समाधि की ओर (श्रवण साधना)
2. धनदा वक्षिणी साधना
3. ऐं साधना
4. प्रेम गली अति सांकरी
5. प्यार के धूपरुओं की खनक
6. लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग (तीन भाग)

भृति कूस से सर्जी-संवर्द्धी

अनन्तोल भजन शूचल्लर :

1. भजन मंच (विविध शिविरों से)
2. भजन दरबार
3. भजन सागर (आनन्द)
4. भजन प्रभात (आनन्द)
5. जब उड़े प्रेम गुलाल (जय प्रकाश)
6. भजन सौरभ (अंजली)

: सम्पर्क :

न्यौछावर प्रति कैसेट - 30/-
डाक व्यव - 24/- अतिरिक्त

सिन्धाश्रम, 306, कोहाट एन्कलेक, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

विविध विषयों के गूढ़ ज्ञान से
ओत-प्रोत इस चुनी दुई अलौकिक
व विष्य कैसेट्स का कुर्लभ संयोजन,
जो गांगर में गांगर की तरह
विलक्षण और विशृंखल है, आपके
लिए लेकर आये हैं इस बाट ...

1. सिन्धाश्रम
2. मृत्योर्मांडमृतं गमय
3. कठेपनिषद
4. अकथ कहनी प्रीत की
5. ध्यान धारणा और समाधि
6. कुण्डलिनी धोग
7. पारदेश्वर शिवलिंग पूजन
8. गुरु गीता
9. अमोघ सावर साधनाएं
10. ३० मणि पदों हुए

साधक साक्षी हैं

सदगुरुदेव दाशवत दाचिन्हें

यह सत्य घटना है ३ जुलाई १९६८ मध्य रात्रि की, मैं गुरु चित्र के समझ प्रणाम कर सम्मुख बैठा तो अचानक पूज्य सदगुरुदेव के नेत्र से आविरल अशुधारा बहने लगी और मुख मण्डल बैद्यनापूर्ण विखने लगा।

भयवश मैंने पूछा - 'आपकी यह स्थिति!'

सदगुरुदेव का जवाब था - 'पुत्र! तुझे क्या मालूम कि मैं किस दौर से गुजर रहा हूँ। एक तरफ सिद्धाश्रम तो दूसरी ओर मानस पुत्रों से विछोड़'

अचानक बाद गुरुजी स्वामी सचिदानन्द जी की आवाज आती है - 'वत्स! निखिलेश! सिद्धाश्रम पर तुम्हारे स्वागत के लिए सिल्प पुस्तक, योगी, मुनि और स्वयं शंकर भगवान प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

मूँ: गुरुदेव सामान्य हुए और कहा कि यह आसन खाली नहीं रहेगा। अचानक गुरुदेव एक से दो हो गए - एक ज्योति के रूप में ब्रह्मण्ड में लीन हो गया, दूसरा स्थूल रूप आसन पर रह गया।

इस घटना के कुछ दिन बाद २३ जुलाई ९८ को दोपहर १:०० बजे काम से लंब के लिए कमरे पर आया, तो अचानक गुरु चित्र पर नजर पड़ी। सदगुरुदेव के नेत्र से तेज प्रकाश कृष्ट रहा था और मैं जैसे उसमें स्माता जा रहा हूँ। मूँ: गुरुदेव सामान्य होकर कहने लगे - 'पुत्र! मेरे सामने बैठ जा!' मैंने आजा का पालन किया, फिर गुरुदेव ने अपने दाढ़िने हाथ के अंगूठे से जैसे ही मेरे घूमध्य में किया, मेरी सगस्त नाड़ियों में एक अनृदी हलचल मच गई और फिर आंख लग गई।

तभी सदगुरुदेव की आवाज सुनाई पड़ी - 'मैं अब स्वतंत्र हूँ, भौतिकता से दूर हूँ, हर मानस पुत्रों तथा शिष्यों से आत्म तत्त्व छारा गुड़कर उनको मार्ग वर्जन प्रदान करूँगा।' जब तन्नात्मस्या दृटी तब दिन के २:०० बज चुके थे।

बाद मैं २४ जुलाई को दिन में दीन बने पत्र मिला, कि सदगुरुदेव ने भौतिक शरीर त्याग दिया है। परन्तु आत्म तत्त्व से गुरुदेव हर शिष्यों के उत्थान हेतु जैसे पहले थे वैसे ही अब भी विद्यमान हैं, चाहे मात्र्या कोई हो। १६ जुलाई को गुरुधाम, बोधगुरु में श्रद्धांजलि एवं विशेष गुरु पूजन पर न पहुँच सकने का दुःख अवश्य है।

- स्मैश कुमार शर्मा, सेलाकुर्ड, देहरादून।

इस पत्र से स्पष्ट है, कि सदगुरुदेव निरन्तर सूक्ष्म रूप से अभी भी प्रत्येक गतिविधयों का संचालन कर रहे हैं। जगह-जगह साधनात्मक शिविरों के आयोजन और शिविरों की बढ़ती हुई संख्या, अनेकों नए साधकों के जुड़ने की प्रक्रिया प्रमाण है, इस बात का कि गुरु त्रिमूर्ति के माध्यम से सदगुरुदेव ही कार्यों को गति प्रदान कर रहे हैं, और शिष्यों को मार्ग वर्जन दे रहे हैं, साधनाएं व दीक्षाएं प्रदान कर रहे हैं।

— 'प्रेरणाप्रद अनुभूति भेजने हेतु आपको पूज्य गुरुदेव का एक ग्रंथ आशीर्वाद स्वरूप भेजा जा रहा है।'

- सह सम्पादक

गुरुधाम में प्रयोग संपत्ति हुआ

दिल्ली स्थित गुरुधाम जाकर मैंने छोटे गुरुदेव जी के निर्देशन में सर्वकार्य पूर्ण भ्रद्रकाली प्रयोग सम्पन्न किया, साथ में यंत्र व माला निशुल्क मापन हुआ था। गुरुदेव ने एक नंब्र प्रदान करते हुए कहा था, कि इस मंत्र का २१ दिन तक जप करना है और उसके बाद यंत्र व माला को नवी में त्रिसांजित कर देना है। ठीक २१ दिन के बाद ही मुझे एक अच्छी क्रपने

मैं इण्टरव्यू के लिए बुलाया गया और उसमें मेरा चयन भी हो गया। इससे पहले मैंने बहुत धन किये थे, परन्तु नौकरी प्राप्त नहीं कर सका। आपका आशीर्वाद मूँ ही प्राप्त होता रहे, यही प्राप्तना है।

- एल. आर. ठाकुर, शान्ति लाल, कमुम्पटी, परिमहल, शिमला, (हि.प्र.)

पुत्र प्राप्ति सम्भव हुई

गुरुभाम, जोधपुर में होली के अवसर पर आयोगित शिविर में भाग लेकर मैंने 'विशिष्ट मुन्न मनोबांधित शीघ्र कार्य सिद्धि साधना' एवं उन्न्य प्रयोग किये तथा वही हम पति-पत्नी ने एक प्रपत्र में अपनी समस्या लिख कर कार्यालय में जमा करवा दी, जिनका हम निराकरण चाहते थे। प्रपत्र में हम दोनों ने एक ऐसी समस्या लिखी थी और वह थी - १. पुत्र की प्राप्ति, और २. इरीर का स्वस्य रहना।

धर आने पर पूज्य गुरुदेव छारा भेजे हम दोनों के लिए अलग अलग मंत्र चैतन्य विशिष्ट यंत्र प्राप्त हुए। हम दोनों पति-पत्नी ने यंत्र को अलग-अलग स्थापित कर विधि विधान से होलिका माला से सम्बन्धित मंत्र की '३ माला के हिसाब से २१ दिन तक नित्य मंत्र जप सम्पन्न किया और बाद में यंत्र व माला को जल में विसर्जित कर दिया।

यह कहते हुए हमें प्रसन्नता है, कि हम अगले ही वर्ष प्रातः येला में पुत्र प्राप्ति हो गई। साथ ही मेरा एवं पत्नी का स्वस्य भी दिन सुधार होता गया। अब मैं और मेरा परिवार गुरुदेव की कृपा से सुखी, स्वस्य एवं प्रसन्नचित है। गुरुदेव की कृपावृष्टि हमपर ऐसे ही बनी रहे।

- इमांकर तिवारी, करवा, अमिकापुर, सरगुजा

नौकरी वापिस मिली

मैं जनवरी-९८ में अपनी नौकरी से सम्पेण हो चुका था, इस दौरान मैं और मेरा परिवार बड़ी दुःखमय स्थिति में थे, यहां तक कि कभी-कभी भूखे भी रह जाना पड़ता था। मेरे सभे-सम्बन्धी, मित्र, दोस्त, भाई सभी मेरा साथ छोड़ चुके थे, कि कहाँ मैं कुछ मांग न बैठूँ। जब मुझे कहाँ से कोई सहारा न मिल सका, तो मैंने पूज्य गुरुदेव को व्यक्तिगत रूप से मिलकर अपनी समस्या से अवगत कराया।

मेरे मन में दूँ विश्वास था, कि गुरुदेव के रहते मेरी नौकरी जा नहीं सकती और हुआ भी यही, नौकरी १३ महीनों बाद मुझे वापस मिल गई। यह एक आश्चर्यजनक बात है, आश्चर्य इसलिए क्योंकि फैक्ट्री प्रशासन के इतिहास में पहलों बार किसी व्यक्ति को इस प्रकार किसी आरोप में फँसने के बावजूद, नौकरी बापस दी गई... और इस बात से ख्यारे यहां का स्थानीय जन समुदाय सभी भौतके हैं, कि कैसे हमें नौकरी बापस मिल गई।

आपने मेरी और मेरे परिवार की लाज रख ली है, आप अपनी कृपा वृष्टि इस परिवार पर बनाए रखना और मुझे अहंकार और सभी बुराइयों से बचाए रखना।

- बीरन्द सिंह परिहार, आ० कैकड़ी, कटनी।

छायापुरुष सिद्धि में सफलता

मैंने गुरुभाम, जोधपुर से छायापुरुष साधना से सन्बन्धित साधना सामग्री मंगवाई थी। वी.पी. छुड़ाने के बाद मैंने आपके कथनानुसार मैंने साधना सम्पद की ओर आपकी इक्कि के फलस्वरूप मुझे इसमें सफलता प्राप्त हुई है। 'छायापुरुष' की चमत्कारिक शक्ति अद्भुत है। लोक सेवा एवं समाज सेवा करना मेरा परम उद्देश्य है, तथा दूसरों के दुःखों को दूर करने में विशेष आनन्द प्राप्त होता है। साधनाओं के क्षेत्र में मैं और आगे बढ़ सकूँ, ऐसी ही प्रार्थना करता हूँ।

- चौधरी बदलू राम, गुल्लरपुर, व्योंत, करनाल,

तंत्र प्रयोग से रक्षा

एक दिन रात्रि में अचानक मेरी तबियत खराब हो गई तथा किसी ने मेरे घर के सामने रात्रि में पुजापा (टोटका) भी किया था, परन्तु गुरुदेव की असीम कृपा से मैं मुझे कुछ नहीं हुआ। उस रात मैंने अनुशब्द किया कि गुरुजी मेरे पास सूक्ष्म रूप से खड़े हैं, उन्होंने मुझसे कहा कि रात्रि पर गायरी मंत्र जपते रहो। मैंने उसी प्रकार रात भर गायरी मंत्र का जप किया। मुझे एक गथानक डरावनी आकृति डराती रही, गुरुदेव ने मुझे उससे बचाया और कहते रहे, कि मैं इसे छोड़ना नहीं। गुरुदेव सचमुच अपने शिष्यों को हर क्षण रक्षा करते ही हैं।

- देवी सिंह गौतम, बरायी, ऐचाना, महोबा, उ.प्र।

गुरु सेवा हि केवलम्

पूज्य गुरुदेव से वीक्षा प्राप्ति के बाद मेरी धर्मपत्नी को वो बार गर्भपात हो चुका था, लेकिन गुरु कृपा व साधना प्रयोग के परिणाम स्वरूप आखिर एक बच्ची हुआ—वह बच्ची अत्यंत मेधावी एवं बाक्षयपत्र है।

इसी बीच मुझे गुरुमीता के १५०वें इलोक से प्रेरणा मिली कि—‘गुरु सेवा से प्रसन्न गुरुदेव सब कुछ प्रदान करते ही हैं।’ फिर क्या था? गुरुसेवा का आनन्द लेने लगा, शिविरों में सक्रिय सहयोग देने की भावना प्रबल ही गई—इन कर्त्त्वों में मुझे जो आनन्द प्राप्त हुआ वह सेकड़ों साधनाओं से भी कई गुना अधिक था। और उस दिन तो मेरी मुश्ती का टिकाना ही नहीं था, जिस दिन मुझे परम पूज्य गुरुदेव के लेटरपैड पर उनके हस्ताक्षरों से युक्त आशीर्वाद पत्र प्राप्त हुआ। वह मेरे जीवन का सौभाग्य है, कि प्रभु ने शिविर आयोजित करने का कार्य सौंपा, मुझे गुरुसेवा का मौका दिया और इसके कान्चित समझा। मैं अत्यंत भक्तिमान से गुरु चरणों में प्रणाम करता हूँ।

- विष्णु पाटीवार, १३३ बजरंग नगर, इंदौर

त्वं
सा

गुरु
और
को र
नहीं
बन
ही र
करन
जप
माल
मंत्र

०॥
बन्द
तक
चेत
सही

सक्त
प्रयोग
परि
है, वि
व्यापी
विश्व

साधका साधना

क्या आप को लगता है, कि आप सही साधक नहीं हैं?

साधक का अर्थ यह नहीं, कि पीली धोती पहिन ली, गुरु मंत्र को चादर ओढ़ ली, आंख बंद कर पूजा पाठ किया और बन गए साधक। साधक का अर्थ है, जो अपने तन व मन को साध सके, ध्यान को एकाग्र कर सके। यदि आप ऐसा नहीं कर पा रहे हैं, तो आप अभी सही अर्थ में साधक नहीं बन पाए हैं, फिर साधनाओं में सफलता की सम्भावना न्यून ही रहती है।

सबसे पहले तो आपको 'गुरु दीक्षा' अवश्य प्राप्त करनी चाहिए और नियमित रूप से गुरु प्रदत्त मंत्र का प्रातःकाल नप करना ही चाहिए। इसके बाद आप 'विद्वत् माला' से एक माला से निम्न मंत्र का जप करें—

मंत्र

// उै हौं शुरुवत्याव तत्पुरुषाव स्तिर्द्वये नमः //

Om Hreem Gurudevay Tatpurushay Siddhaye Namah

मंत्र जप के बाद माला को गले में धारण कर आंख बन्द कर शान्त पाव से गुरुदेव के स्वरूप का '३१० मिनट तक ध्यान करें। धीरे-धीरे ध्यान व जप द्वारा आपको वह चेतना, वह तेजस्विता स्वतः प्राप्त होने लग जाएंगी और आप सही अर्थ में साधक कहला सकेंगे।

इस प्रयोग को किसी भी दिन से प्रारम्भ किया जा सकता है और इसे एक माह तक नियमित रूप से करना चाहिए। प्रयोग समाप्ति के बाद माला को जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 110/-

पति पत्नी में कलह दूर करें

आज नगरों में जीवन इतना अधिक यंत्रवत हो गया है, कि उसमें प्रेम समाप्त सा हो गया। अधुनिकता की दौड़ में व्यक्ति का जीवन भले ही बहुत प्रतिष्ठित और सुस्थापित सा दिखता हो, परन्तु अक्षर उसके घर में शान्ति का एक

परिवारिक माहौल नहीं होता, घर एक हैंट-पत्थरों का ऐन बसेरा मात्र बन कर रह जाता है।

और इसके पीछे मूल कारण होता है, कि पति-पत्नी एक दूसरे को पर्याप्त समय नहीं दे पाते, दोनों ही अपने-अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं और धीरे-धीरे एक दूसरे से मानसिक तीर पर बूर होते जाते हैं। पति और पत्नी के विचारों में तालमेल न होने से घर में कलह की स्थिति नित्य बनने लगती है और फिर घर में रहने की इच्छा समाप्त हो जाती है।

वेष न तो पति में होता है, और न ही पत्नी में— दोनों ही समान स्पृह से इस स्थिति के लिए जिम्मेदार होते हैं। एक दूसरे से झगड़ा करना कोई समस्या का हल नहीं है, प्रयास द्वारा सम्बन्धों को एवं परिस्थितियों को मधुर रूप विद्या जा सकता है, कलुष भरे जीवन में पुनः आमृत धोला जा सकता है यदि इस प्रयोग को सम्पन्न कर लें, तो। पति अथवा पत्नी दोनों में से कोई भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है।

अपने सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उसपर दोनों पति एवं पत्नी का फोटो रख दें। उसके ऊपर एक ताम्बे का पात्र स्थापित करें। पात्र में एक पुष्प के आसन पर 'नागार्जुनी' को स्थापित करें, तथा 'हकीक माला' से निम्न मंत्र की '३ माला ११ दिन तक नित्य करें—

मंत्र

// उै क्लौं क्लेशलाशाव विवादं विवारणाय एं उै फट //

Om Klevam Kleshnashany Vivaadum Vidaarunnasay Ayeim
Om Phat

साधना सामग्री पैकेट - 151/-

अब परिवार में किसी प्रकार का कोई

अभाव रह ही नहीं सकता

इसके लिए ६० देशों के वैज्ञानिकों ने निरीक्षण किये हैं, और उसके आधार पर ही वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं, कि यदि प्रातःकाल घर में 'अग्निहोत्र' अथवा हवन हो तो घर में

किसी प्रकार का कोई अभाव या तकलीफ रह ही नहीं सकती और घर की समस्याएँ भी अपने आप सुलझती रहती हैं, इसीलिए उन्होंने अभिषेक को आवश्यक माना है। अभिषेक के लिए आवश्यक है, कि इसे ठीक सूर्योदय के समय करें, न उससे पहले और न ही उसके बाद।

आप स्नान आदि से निवृत होकर, एक तांबे के हवन कुण्ड में छोटी-छोटी लकड़ियाँ जला लें। किसी थाली में आधी मुड़ी चावल, दो चमच धी और पांच तांत्रोक्त नारियल ले कर मिला लें। बाद में निम्न मंत्र पढ़कर क्रमशः 'ॐ आहुति दै—

ॐ अग्नये नमः स्वादा।

ॐ इन्द्राय नमः स्वादा।

ॐ प्रनापतये नमः स्वादा।

ॐ विष्णवे नमः स्वादा।

ॐ सर्वकार्ये सिद्धव्यथे नमः स्वादा।

प्रत्येक आहुति के साथ एक तांत्रोक्त नारियल का होना अनिवार्य है।

यदि यह कार्य ठीक समय सूर्योदय के समय हो और नियमपूर्वक हो, तो निश्चय ही आपकी समस्याओं का समाधान होगा ही।

साधना सामग्री पैकेट - 105/-

**आपके लिए जीवन में कोना दा कार्य
क्षेत्र आपको सफलता देगा, यह
जानिए दृष्टप्लन के माध्यम से**

स्वज्ञ एक प्रामाणिक विज्ञान है, कोई कल्पना नहीं। बातावरण और व्यक्ति के अन्दर के ब्रह्माण्ड से उठ रही विचार तरंगों को संवेदनशील मरिनिष्क तंतु पकड़ लेते हैं, और फिर दृश्य रूप में व्यक्ति को अर्ध चेतन उच्चस्था में भासित हो जाते हैं, जब वह सो रहा होता है। कई बार उसे भविष्य सम्बन्धी धटनाएँ भी दिख जाती हैं, और कई बार बीती हुई धटनाएँ भी दिख जाती हैं। यह स्वज्ञ मनुष्य को एक तरह से संकेत होते हैं, जिससे वह आने वाली धटनाओं के लिए पहले से ही तैयार रहे। साधनात्मक क्रम में स्वज्ञ का बहुत महत्व है, और स्वज्ञों के द्वारा प्रश्न का हल जानना एक सामान्य सी बात है, जिसका बहुत से साधक प्रयोग करते हैं।

किसोगवस्था के बाब की अवस्था एक ऐसी आयु होती है, जब व्यक्ति को निर्णय लेना होता है अपने मविष्य के बारे में कि वह किस भेत्र में पदार्पण करे? क्या उसे चिकित्सा के भेत्र में सफलता मिलेगी? अधवा राजनीति के भेत्र में? उसे

इंजीनियरिंग लाईन में जाना चेष्ट होगा अथवा व्यापार करना उचित होगा? उसके लिए पुलिस की नौकरी अच्छी साधित होगी अथवा लघु उद्योग द्वारा वह उन्नति कर सकता है?

प्रायः होता देखा है, कि जीवन की इस प्रारम्भिक अवस्था में कोई उचित सलाह देने वाला होता नहीं है, और जब समय निकल जाता है, तब गलत लेत्र चुन लेने से व्यक्ति सारे जीवन अर्थ, यज्ञ, मान, प्रतिष्ठा, धन, सुख, सुविधा के अधाव में जीता हुआ एक सामान्य सा जीवन जीने को विवश हो जाता है।

इस प्रयोग को कोई भी स्वयं के लिए अधवा अपने पुत्र-पुत्री आदि के लिए सम्पन्न कर सकता है। किसी शुभ दिन गुरु पूजन कर अपनी मनोकामना व्यक्त करते हुए प्रयोग प्रारम्भ करने का वाहने हाथ में जल लेकर संकल्प करें। दैनिक साधना विधि' पुस्तक द्वारा गुरु पूजन करने के पश्चात 'स्वप्न सिद्धि माला' से निम्न मंत्र की ११ माला नित्य ९ दिन तक जप करें—

मंत्र

// उमे हीं स्वप्नलेश्वरि मम मन्त्रोदातितं साधय साधय //

उमे कृट् //

Om Hreem Swapneshwari Mam Manovaanchhitam
Saadhy Saadhu Om Phat

नित्य रात्रि में माला को सिरहाने तकिए के नीचे रखकर सोएं तथा साधना समाप्ति के बाब माला को बल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 120/-

साधना सफलता : समस्या निवारण

◆ मनुष्य के अपने ही प्रारब्ध के फलस्वरूप जीवन में अनेकों प्रकार की समस्याएँ आती हैं। परन्तु दैविक कृपा के रूप में प्राप्त साधनाएँ मनुष्य को एक ऐसा वरदान हैं, जिनके माध्यम से वह अपनी समस्या का निराकरण कर सकता है। इस स्तम्भ के अन्तर्गत लघु साधनाओं को देने के फौछे यही मनव्य रहता है, कि सामान्य वर्ष का व्यक्ति भी, जिनकी लम्बे बीड़े विशाल में पड़ कर अपनी समस्या स्वप्न सुलझा सके।

◆ आप अपनी समस्या को यदि पोस्टकार्ड (कार्ड के ऊपर 'साधना सफलता' अवश्य लिखें) में लिखकर तिल्ली कार्यालय में देंगे, तो इस स्तम्भ के माध्यम से उस समस्या के निवारण हेतु साधना प्रस्तुत की जाएगी। इसके लिए आवश्यक है, कि आप अपनी समस्या दो तीन लाइनों में संक्षेप में पोस्टकार्ड पर लिखें। यदि आपकी समस्या का समाधान देना कठ अन्य साधकों के लिए भी लाभकारी एवं उपयोगी होगा, तब उस समस्या का साधनात्मक निवारण इस स्तम्भ में अवश्य प्रकाशित किया जाएगा।

रात्रि के साथ जोधपुर कार्यालय के पाते पर भोज कर भी कोटा द्वारा दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं। सिद्धांश, 306, कोहाट एन्कलेच, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, हैलीफ़ फॉन : 011-7196700

Overcoming Through Tantra

Enemies, diseases, poverty and other problems in life are evils that stultify the healthy and smooth growth of life. And unless one works very hard indeed and resorts to some special methods to overcome them one is sure to be at their mercy. Hard no doubt, yet these bances are not insurmountable. What one needs is an unmoving will, determination and a perfect remedy.

The field of Tantra treasures perfect solutions to all problems of life and various rituals are advised for achieving different goals. Each Sadhana of Tantra is in fact packed with tremendous power. Thus through them one can defeat all shortcomings of life and reach one's desired goal smoothly and quickly. Following are four amazing and fast acting Sadhanas that focus on four most common problems of life.

1. Overcoming A Foe (रात्रुहत्ता प्रयोग)

This Sadhana makes a human capable enough of dominating over the strongest of foes. Through it the worst enemy is easily subdued, and becomes ready to abide by all terms laid down by the Sadhak. But remember it's the righteous who can lay claim to divine powers. Hence don't even dream of using this ritual unless you have been severely wronged or you are justified morally to use it.

On a Tuesday/Saturday night after 10 pm sit facing the North in yellow robes. Cover a wooden plank with red cloth and on it place the *Shatru Badha Nivarana Yantra* (शत्रु बधा निवारण यन्त्र). Bathe it with *Panchamrit* (mixture of milk, honey, card, ghee and water). Wipe it dry and offer vermilion, rice grains and flowers on it. Light incense and a ghee lamp.

Take water in the right palm and pledge thus — I accomplish this Sadhana for victory over my enemies. Let the water flow onto the ground. Next chant 11 rounds of this Mantra with a *Khadag Mala* (खडग माला).

Om Kreem Kreem Kreem Shatruhanyei Phat
ॐ क्रीं क्रीं क्रीं शत्रुहन्ते फट्

After Sadhana tie the Yantra and Mala in the red cloth and drop the bundle in a river/pond. This ensures decisive victory over enemies and freedom from their evil influence in the future.

Sadhana Articles : 460/-

2. Banish Ailments (रोग मुक्ति प्रयोग)

This marvellous Sadhana is a wonderful boon not just for the ailing but also for those who wish to remain in the pink lifelong. What more even the worst and seemingly incurable ailments can be cured through the power of this Tantra practice. Of course it may take time for full results to

manifest but they sure shall, hence be patient and trusting.

On a Saturday/ Tuesday night get into white clothes and sit facing East. Worship the Guru and with water in your right palm pledge thus — I perform this ritual for riddance from (this) disease, and for good health lifelong. Let the water flow onto the floor and then chant 21 rounds of this Mantra with *Aarogya Vardhini rosary* (आरोग्य वर्धिनी माला).

Om Bhum Bheiravaay Rognashinyei Namah

ॐ भूं भैरवाय रोगनशिन्यै नमः

After Sadhana drop the rosary in a river. The ritual can also be tried by any person on behalf of a seriously ill patient. Successful completion marks a fresh start in the life of the ailing individual. All ailments are removed and one feels a surge of new energy within.

Sadhana Articles : 240/-

3. Sudden Gains (आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग)

Shares, lottery, horse racing are legalised sources of windfall gains and this ritual is a wonderful way of brightening one's fortune. On a Wednesday night sit facing North in yellow clothes. Cover a wooden plank with white cloth and on it place a (लघु दक्षिणावर्ती शंख) *Laghu Dakshinavarti Shankh* (a special conch shell). Pledge thus — I perform this Sadhana for sudden monetary gains. Next chant this Mantra 108 times, each time dropping a rice grain into the conch shell.

Om Hreem Mahaalakshmyei Hreem Om

ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै ह्रीं ओ

After this pray to the Guru. Tie the conch shell in a white cloth and drop the bundle in a river/ pond. Thus one certainly comes into money suddenly from one quarter or the other.

Sadhana Articles : 150/-

4. Tackling Hurdles (बाधा निवारण प्रयोग)

Whether at home or in office, apparent or subtle obstacles throw a spanner in one's works. These can be due to any reason but chief is unfavourable transits and conjunctions of planets in one's horoscope. This Sadhana however can turn the tables on the most malefic of planets.

On Monday night sit facing East in yellow clothes. Cover a wooden plank with yellow cloth. On it place 11 leaves of holy fig (peepal). On each place a *Kulal Chakra* (कुलाल चक्र). Offer vermilion, rice grains, flowers and incense on each. Light a ghee lamp. Chant 21 rounds of this Mantra with a *Hakeek rosary* (हकीक माला).

Om Hleem Baudhaa Nivaaranneyi Namah

ॐ ह्लीं बौद्धा निवारण्यै नमः

After Sadhana tie the leaves, Chakras and the rosary in the cloth. Drop the bundle in a river/ pond. Soon the problem or hurdle troubling one would get removed thus assuring success and prosperity in the future.

Sadhana Articles : 261/-

No More Tension

Tension, worry, anxiety, high strung nerves, migraine and exploding blood pressure have become bywords for what we call the modern, jet age. In fact so vicious is the grip of our worries that one is not able to save even a few moments for laughter and joy from one's daily schedule. Most of the time and energy of every human is today being spent in tackling the constantly nagging worries. And the result is that one's performance at work is never up to the mark.

Science too has now accepted that constant pressure of anxieties can result in high blood pressure, heart trouble and several other ailments which can leave one a mental and physical wreck even before one has stepped into the middle age. Tensions, and not age, today decide whether a man has grown old or not. Yet in spite of the tremendous progress made by science there's no medicine or treatment available for getting rid of this bugbear of worries. Physicians can't do much except for suggesting a vacation and prescribing sleeping pills. And even psychiatrists start feeling dizzy and worn out after a long day of counselling.

Experts in the West facing this problem realised this long ago that science has no solution for this ever increasing problem that has led to irreparable physical and mental damage and even suicides. India too is now a prey to this monster thanks to the cutthroat competition made even more ruthless by globalisation. As a result the face of every man in office today looks listless, and creased with lines of worries. Even back at home there seems no respite with mounting prices, crime and corruption.

Premature ageing, greying of hair, dark circles around the eyes, a dull look on the face, insomnia, drowsiness at work and a constant feeling of dread are clear symptoms of tensions preying on one's mind, soul and body.

Soul! Yes this is the key to the problem. In our overly ambitious efforts we have neglected this very vital part of our existence and experts in the West have also concluded after much experimentation that faith or the power of the soul is the greatest healer. It's faith which we lack today and regaining it can mean charging up one's mind and body with necessary energy for successfully and easily tackling all problems of life and ensuring that they don't leave any disturbances in their wake.

Tanaav Mukti Sadhana or the ritual for getting rid of tensions is one of the most powerful and unfailing

Faith Healing practices from the field of spiritualism. In fact so amazingly efficacious it is that an ancient text *Sankhyopnishad* states that devoting at least five minutes in this Sadhana daily is just as essential as breathing in order to lead a healthy life.

From experience I can say that this is the best exercise for getting rid of tensions, for it is simple as well as short — just fifteen to twenty-five minutes daily for full effect. Exercises based on this very Sadhana are being used in the West with amazing results. Here the real Sadhana is being revealed which any man or woman, child or adult can try. It involves the following steps.

1. Early morning have a bath, get into loose robes and sit peacefully in some open and airy isolated place.
2. Place a *Tanaav Mukti Yantra* (तनाव मुक्ति यन्त्र), and picture of Gurudev/ your family deity before yourself.
3. Take a deep breath and chant *Om* (ॐ) as long as the breath lasts. Do this thrice.
4. Fix your gaze on the Yantra without blinking. Feel that divine energy is flowing from the Yantra into your eyes.
5. If there's irritation in the eyes, dab them with water and try again. Do this as long as you can but don't stress yourself too much. This special Yantra radiates subtle rays that shall still one's mind.
6. One should not be disturbed by external noise, hence the atmosphere must be still and peaceful. Burn incense or light a ghee lamp to heighten the divine effect.
7. Chant the Mantra *Om Soham Om* (ॐ सोहम् ॐ) loud and clear for five minutes continuously.
8. After five minutes of *Traatak* (fix gazing) on the Yantra again chant the Mantra for five minutes.
9. Everyone should use a separate Yantra, for a spiritual link is formed between the Sadhak and his/ her Yantra and using someone else's Yantra would not produce the result.
10. Twelve minutes of *Traatak* is the climax of this exercise. Hence daily increase your limit till you are able to look unblinkingly for this duration.

One thus needs just fifteen (in the beginning) to twenty five (full limit) minutes daily. The Yantra shall work as a unique link between you and divine energy from the Omnipresent. It shall absorb this soothing power and pour it into you through the medium of your eyes.

Through daily exercise of this ritual, not only is one able to get rid of worries rather if one's concentration is perfect very soon one's aura starts to expand till others are able to notice a divine change in one's looks. One is also able to tap all of one's creative energy besides overcoming physical problems, particularly gastric troubles, migraine and high blood pressure. Even when travelling one can carry the Yantra and try the Sadhana whenever there's a chance to do so. The Yantra, its Sadhana and the Mantra mentioned are splendid boons which can entirely transform your life. So why not give it a try?

Education begins in the womb

Abhimanyu, it is said, learned the most valuable strategy of ancient warfare i.e. piercing the *Chakravish* formation, when still in his mother's womb. Rishi Shukdev gained the precious Supreme Knowledge when still in an embryo state. The Sage Ashtavakra imbibed the exalted knowledge of all four Vedas suspended in the embryonic fluid in his mother's womb. In fact one day when his father, a famous sage, recited a Mantra incorrectly, he bellowed loudly in protest from inside the womb. Much chagrined the father kicked his wife in her belly and as a result the child born had a deformed body.

What do you have to say about these three instances cited from ancient texts? Are these just myths or is it a fact that an unborn child or an embryo is truly receptive to sounds and thoughts present around its mother? Medical evidence proves that after three months and 27 days an embryo starts showing signs of organ functioning and a heart beat can be clearly discerned. This is the time chosen by Yogis to start its subtle education for the period from the fourth month to the eighth is believed to be very crucial for the future development of the child. In this period the receptivity is at its peak and whatever sounds and thoughts it absorbs leave an indelible mark on its mind and memory.

A child tutored in the womb can make astounding progress after it is born and can complete several years of education in a much shorter time span. In fact parents can beforehand select the field they would like their child to pursue and thus they could decide the womb education accordingly. I have tried *Garbhast Cheitanya Sadhana* and Diksha several times on dedicated disciples and each time astoundingly sharp-witted children were born.

A famous mathematician who happens to be my disciple wished his unborn child to be a world famous expert of that very field. Hence when his wife was in the family way the couple approached me for initiation into this secret Sadhana. I revealed the Sadhana to them and they devotedly accomplished it. After the ritual for three months the husband daily tutored his wife in mathematics.

At the right time the child was delivered. It was a boy, who by the time he was five had left even his own father amazed by his genius. At a mathematics conference in which some of the most renowned scholars participated the child prodigy captured all attention by his crystal clear elucidation of some of the most tricky problems and

concepts. Everyone unequivocally hailed him as a genius and a television crew from Japan even recorded his achievements for worldwide telecast.

This ritual is one of the best of all *Garbhast Cheitanya Sadhanas* for it also combines the divine power of the sun which ensures fame, intelligence, versatility, power and high position in life. The Sadhak first assimilates the radiance of the sun through *Surya Sadhana* and then directs it to the unborn child for its enlightenment. It can be commenced from twelfth day of the lunar month (अवस्था).

The Sadhak (husband) must take a bath and wear a white Dhobi. Then he should sit facing the East on a white worship mat. On a wooden plank covered with white cloth he should place a *Maatland Yantra* (मातृण यंत्र). Next he should take water in his right palm and pledge thus,

*Asya Soorya Mantrasya Bhrigu Rishih Gayatri
Chhandah Divaakaro Devataa Hreem Beejam Shreem
Shakthi Garbhast Drishya Shravya Phal Siddhaye Jape
Viniyogah.*

विनियोग — अस्य सूर्ये मंत्रस्य भूग्रु क्रापि: गायनी छन्दः विवाकरो
देवता ही बीजं श्री शक्तिः गर्भस्थ वृष्य श्रव्य फल सिद्धये जपे
विनियोगः ।

Join the palms and pray thus to the sun.
*Raktaambuj Yugmabhaya Daanhastam
Keyoorhaaraangav-kundjaadaya. Maannikyamoulim
Din-naathmeedaye Bandhook Bhaanti Vilasam
Trinetraa.*

ध्यान — रक्ताम्बुन युग्मभय दानहस्तं केयूरहारांगवकुडनाद्यम ।
माणिक्यमीलि दिननाथमीदये बन्धूक भांति विलसं त्रिनेत्रा ।

Next pick up a *Sfatik rosary* (स्फटिक माला) and chant 51 rounds of the following Mantra.

*Om Hreem Tejase Garbhast Cheitanya Vram
Hreem Om*

॥ ॐ ह्रौ तेजसे जर्मस्य चेतन्य व्रौ ॐ ॥

Do this regularly for 49 days. During the Sadhana period observe celibacy and take a fruit-milk diet only. On 50th day offer some sweets made from milk to 11 boys with age ten years or less. After the Sadhana seat the pregnant mother before yourself and looking into her eyes chant 5 rounds of this Mantra. This Mantra recital shall make the embryo more receptive. This effect shall last for 3 hours. Hence whatever information is given to the mother in these 3 hrs. it is promptly imbibed by the child.

This subtle education can go on for three to four months. The mother too should chant one round of the Mantra daily and should remain fully attentive during this process. This Sadhana is one of the best gifts of our Yogis and with its help more intelligent and virtuous children could be brought into this world.

Sadhana Articles : 330-

Riches and Splendour

Rinn-rogi-audi Duuridrayam Paapam Cha Apmrityavah
Bhaya Shokamanastaapaa Nashyantu Mam Sarvadaa

OGoddess Mahalaxmi ! Supreme Deity of wealth and prosperity! Bless me, so that I could lead a joyous, peaceful and comfortable life, free of paucity, poverty, problems, diseases and sins.

Very few Yogis have been as dynamic and determined as sage Vishwamitra, and when Laxmi refused to manifest even after he had propitiated Her through the best of the traditional rituals he took a vow to force her to his presence.

"No more of praying!" he declared furiously and set about to create the most powerful Tantra-based ritual and its Mantra. And finally when he was ready he put it into practice and such was the vehemence packed into the incantation that Laxmi was compelled to appear ! What more he made Her grant all his wishes and commanded Her to remain in his attendance lifelong.

The Goddess of riches has been worshipped in various ways and in ancient times the Yogis contemplated no less than 108 forms of Laxmi and performed their Sadhanas in order to achieve the highest level of affluence. And not just sages even divine personalities like Lord Ram and Krishna sought the divine grace of the goddess. Besides hundreds of other kings strengthened their kingdoms by seeking the divine help of the goddess through Sadhanas.

Importance of wealth is no less today. Rather it has become the most emphasised commodity what with the material desires becoming virtually unlimited. In ancient times prosperity might well have meant having enough to eat, a large house to live in and a good source of income, but in modern times the meaning of comfort and prosperity is much more diverse and it depends on how much one can spend. If you have enough then there is no end to what all luxuries you can buy.

Being rich is not a taboo but it does matter how you earn money. Illegal or immoral means, however discreet, may well fill your coffers but such stained money shall prey on your conscience, mental peace, social respect and standing. No doubt a human is easily lured towards such avenues for they seem to promise a lot without much efforts; however only a person who has such wealth can tell you what sort of hell he has to go through, for every moment there seems to be a fear of exposure lurking around.

So such means are out! Yet there are also hard-

working, sincere and honest people who are never able to make it big in spite of their best of efforts. After years of labour in a job or perseverance in trade, financial success looks like a distant dream. The frustration and sense of hopelessness that then sets in tends to make one an easy prey to the lure of corruption.

If you find yourself in such a situation, if mounting debts are giving you sleepless nights, if your business is in doldrums, if money is the cause of your anxiety then this is the respite you have been waiting for. The following Paarad Laxmi Sadhana is the most explosive, quick acting ritual for windfall gains. A sage writes in an ancient text — If an idol of Laxmi made of consecrated, solidified mercury alloyed with gold is established in the SE direction i.e. facing N. West and worshipped daily wealth starts to make inroads into one's life from various sources.

This form of the deity is called Paaradeshwari and she is the most benevolent among all 108 forms of the Goddess when it comes to showering wealth upon a Sadhak. In fact like Kalpvriksha (wish tree) she fulfils all the material wishes of a Sadhak.

Following boons sure accrue —

1. Financial crisis is overcome and sudden gains are made.

2. All problems in business or job are cleared. Promotion/ pay raise in job and unexpected profits in trade can be expected.

3. New sources of earning spring up.

4. Power, respect and fame in life.

5. A happy married life with all comforts.

6. Spiritual success.

For the ritual get up early in the morning on a Wednesday or Friday, take a bath and wear fresh clothes.

Sit facing East on a white mat. Light incense and a lamp. The idol of the Goddess (पारद लक्ष्मी) must be established as prescribed earlier. Next pick up a *Sfatik rosary* (सफटिक माला) and chant five rounds of the following Mantra

Om Ayeim Varad Paaradeshwari Mahaatakshmyei Namah

ॐ ऐ वरद पारदेश्वरी महालक्ष्म्यै नमः

Do this regularly for 11 days. The ritual is free of any complex steps, for the Mantra and the deity are powerful enough to bring about the desired results. A text in fact states that just having a *Paarad Laxmi* and a *Paarad Shivaling* in one's home means lifelong prosperity and affluence. If possible continue chanting the Mantra just five times daily. After Sadhana permanently establish the idol in a sacred place at home or at your business centre.

Sadhana Articles : *Paarad Laxmi* and *Sfatik rosary* : 490/- (*Paarad Shivaling* can be had separately for - Rs 300/-)

- पूर्व सम्बुद्धके के पुक्क संवादी हित्य अमृतानंद जी के बाबा वृत्ताल

वेणु के पै व गढ़ी व शब्दे व्यर्थे व देविनी

बोगिनी—ओ दशा, रुद्र, थाथ शब्द को धारण करनी हुई भी अन्नामोथत्या पुक्क श्वर्षी ही छोटी हैं, पुक्क मुलक आदा श्वर्षी, जीवडा और उत्तराहित घटता श्वर्षी। शार्ट-शाढ़गा का वह भी पुक्क आयाम है जिसको वर्णित कर रहे हैं रत्नामी अनुश्रूतावंद जी हस्त धारायाहिक उपन्यासिका 'शब्द वहे श्री हंस हमारा' की सोलहवीं फड़ी में . . .



सिंह साहब का परियार अत्यन्त सीमित था। उनकी प्रौढ़ा पत्नी के अतिरिक्त एक मात्र पुत्री थी जो कि नगर से दूर किसी अन्य नगर में अपनी शिक्षा प्राप्त कर रही थी। पुराने संस्कारों का पालन करने वाली उनकी पत्नी जिन्हें सब सम्मान से 'दानी शाहिबा' कहते थे, अधिकांशतः घर में रहती थीं और पूजा, पाठ, व्रत, त्यौहार में ही व्यस्त रहती थीं। प्रातः काल जब वे मेरे कमरे के सामने बगीचे में बने शिवालय में जल चढ़ाने आतीं तब मेरा हाल—चाल अवश्य पूछ लेती थीं कि उनके घर में आया एक साधु कहीं से पीछित न रहे। घर में नौकरों—चाकरों की फौज ही थी लेकिन वे सब पता नहीं किस संकोच से मेरे पास बैठने में करतारी थे। मुझे भी इसका कोई विशेष खेद नहीं था। मेरे पास अपने विगत जीवन की ही इतनी स्मृतियाँ एकत्र हो गयी थीं, कि मैं उनमें में चुन चुनकर कटु स्मृतियों को मानस से दूर फेंकने का प्रयास करता रहता था और इन्हीं कटु स्मृतियों में एक रमृति वाराणसी की उस घटना की भी थी जिसके कारण मैं वहां से चलने को विवश हो चुता था।

इन्हीं विवारों में उलझते हुए एक दिन मैं तन्द्रा में चला गया था। मध्याह्न का भी समय व्यतीत हो चुका था। सूर्य भगवान परिवेश की ओर प्रस्थान कर चुके थे और कमरे के ऊंचे रोशनदान से आती हुई सूर्य की विदा लेती शीतल किरणों कमशः लघु से लघुतर होती जा रही थीं कि तभी मेरे कानों में एक कोमल नारी स्वर

पड़ा, "भइया! क्या सो रहे हैं?" यह सम्बोधन तो मैंने कभी सुना ही नहीं था, न कभी सुनने की अपेक्षा ही रही थी। 'त्वामीजी', 'महाराज जी', 'भवे ओर', जैसे सम्बोधन सुनते—सुनते मैं तो भूल ही गया था कि संसार में इस प्रकार के सम्बोधन भी हो सकते हैं, जो सहज अत्मीय प्रतीत होते हैं। मैंने अपनी अलसा पलकें खोली तो सामने एक बीस—बाइस वर्ष की तरुणी हाथ में चाय और कुछ फल लेकर मेरे समीप आ गयी थी। मैंने अनुभान से समझ लिया कि हो न हो यही सिंह साहब की पुत्री होगी। उसने चाय आदि को मेरे समीप रखा और ध्यान से मेरे चेहरे को देखते हुए बोली, 'आप बहुत तनाव में लग रहे हैं, क्यों?'

सच ही था मैं तनाव में था भी। सोच रहा था कि मैं कब तक ठीक हो पाऊंगा और क्या पूर्ण रूप से ठीक हो पाऊंगा भी या नहीं। अभी तो मेरे मन में कही काननार्दी, पूरा आदतर्फ देखने की लालसा थी यह लालसा कि किंही जैसे हिमायादित शिखट पट दैड्यां और सूर्य की दृष्टियों को सर्वशी कीड़ा करते देख्या, तो कभी दम्भू के जिले हैंकट अनुभव करना कि गुरु को भी क्यों समुद्दृष्ट कहा जाता है।

... आप ठीक हो जाएंगे। पूरी तरह से ठीक हो जाएंगे। देखिएगा इस तरह से ठीक होंगे कि कभी याद करने पर भी याद नहीं आएगा कि कभी इस तरह से बिरसर पर पड़े थे।"

मेरे मन मे एक नवीन चेतना सी आ गई। मैं सजग होकर उसको देखने लग गया। अत्यन्त गोरी उस



तरुणी का चेहरा एक विचित्र प्रकार से तीखे नैन नक्षा से बना था, किन्तु इसके उपरान्त भी वह अपने अण्डकार चेहरे के कारण सौम्यता से भरी थी। उसके वर्णों पर आभूषणों के पहनाव से एक प्रकार की सुरुचि झलक रही थी और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उसमें एक अलग प्रकार की

शीतलता थी। अपनी बड़ी-बड़ी आँखों को वह जब अपनी सघन पलकों से मूदती और खोलती तो सम्पूर्ण व्यक्तित्व से एक प्रकार की गरिमा और आमा ही झलक पड़ती। मैं प्रश्न वाचक मुख मुद्रा से उसे देखने लग गया।

... माने मुझे आपके बारे में सब कुछ बता दिया है और पिता जी के बाहर चले जाने के कारण आज मैं ही आपका डाल पूछने आ गई।

यह तो एक सासारिक परिचय था और हम दोनों के मध्य वार्तालाप के अन्य विषय भी तो नहीं थे। सहसा वह उठी और बोल पड़ी, “आपको पता है कि मैं विश्वविद्यालय जाने से पहले इसी कमरे में रहती थी क्योंकि यहां से गंगा मुझे प्रतिक्षण दिखाई जो पढ़ती थी।” यह कह कर मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह उठी और अपनी कुर्सी को खिड़की के पास रख कर गंगा की ओर मुख कर किसी गहन चिन्तन में फूँक गई। यह सब कुछ इतनी शीघ्रता से हुआ कि मैं कुछ बोलते बोलते मौन हो उठा।

... सायंकाल की ललिमा न केवल गंगा के प्रवाह में अपितु उसके मुख पर भी प्रतिविभित होने लग गई थी। उस अलौकिक प्रकाश में उसका गौर वर्णन मुखमण्डल और भी अधिक दैदीप्यमान हो रहा था। यदा—कदा जल से परिवर्तित होती कोई प्रकाश की किरण जब उसके कानों में पड़े ख्यणाभूषणों पर आकर पढ़ती तो लगता कि सारा कमरा ही आलौकित हो उठा है...

ख्यणकितिपत कुण्डले श्रुतियुगे हस्ताम्बुजे मुटिका
मध्ये लट्टना नितम्ब फलके मंजीरमध्यिहृते।
हाये वक्षहि कंकर्णी वदणदत्तकारीकटहृष्टके
विवरतं भुकुटं द्विरक्षनुदिनं दत्तोऽमादं द्वृथताम्॥

— तुम्हारे दोनों कानों में सोने के बने हुए कुण्डल झिलमिलाते रहे, कर कमल की एक उंगली में अंगूठी शोभा पाए, कटिभाग में नितम्बों पर करधनी सुहाए, दोनों चरणों में मंजीर मुखरित होता रहे, वक्षरथल पर हार सुशोभित हो और दोनों कलाइयों में कंगन खनकते रहे। तुम्हारे मस्तक पर रखा हुआ मुकुट हमें आनन्द प्रदान करे ...

— तो यह कभी भगवती स्वयं इसी रूप में आकर उस साधक के समक्ष बैठ गई होंगी जिसने ये पंक्तियां रचित कीं? मानो भगवती गंगा ही उस दिन मेरे समक्ष कुर्सी पर बैठ कर गंगा नदी में अपना प्रतिबिम्ब निहार रही थी। उसके शरीर पर आभूषणों की बहुलता नहीं थी लेकिन रथर्णीम किरणे ही उस पर आच्छादित हो कर उसे विविध आभूषणों से भर दे रही थीं। वह स्वयं विन्तनशील मुद्रा में अपनी एक तर्जनी को अपने ओरों पर रखकर धूं मंद रित में लीन थी, मानो इन्हीं ‘आभूषणों’ के विलास में खो उठी हो। मेरा मन उसका ऐसा अलौकिक सौन्दर्य देखकर मन ही मन स्वतः गुजरित हो उठा —

श्रीवायां धूतकान्तिकान्तपटलं ये वेयकं सुंदरं
सिंदूरं विलसल्लाटफलके सौन्दर्य गुदाधरम्।
राजत्कञ्जल मुज्ज्वलोत्पलदल श्री भोदने लोदने
तददिव्योषधिनिर्मितं रथयतु श्री शाम्भवी प्रिये ॥

हे श्री को प्रदान करने वाली भगवति तुम गले में अत्यन्त श्रुतिमान आभूषण पहन लो, ललाट के मध्य भाग में सिंदूर की बिंदी लगा लो और पदमपत्र की शोभा को भी तिरस्कृत करने वाले नेत्रों में काजल की एक महीन सी रेखा भी अकित कर लो ...

... वह अपने गले में पड़ी सोने की पतली सी जंजीर को अपनी सुकोमल और लम्बी उगलियों में लपेटते हुए मानो मेरी रामी अभ्यर्थनाओं को सुन भी रही थी और उसी प्रकार से रित में लीन थी। सहसा वह एक गहन दीर्घ निश्वास लेकर उठी और दर्पयुक्त मुख मुद्रा के साथ मेरी ओर देखती, मेरे पास आकर नितान्त रिनग्ध हो उठी। उसने झुक कर आहिरती से अपनी हथेली को मेरे ललाट पर रपरा किया और उसी रिनग्ध भाव से

बोल पड़ी, "आप तो येगी है येगी को डाला खोक क्यों? उदाहरण तो इस जगत में आकृत क्षेत्र सुम कर्यों का विस्तार करना मात्र ही कर्त्त्य है जाता है।"

— यह कहकर वह मुझे उसी स्तरव्य भाव में छोड़कर कमरे के बाहर चली गई। उसका वह स्पर्श मेरे नस्तक पर चढ़न के लेप की ही भावि सुगन्धित और शीतल बन कर रिथर हो गया था। उस रात मैं कई दिनों के बाद निश्चिन्ता से नींद ले सका। न तो मेरे मन में वाराणसी की वह घटना आई, न ही दैहिक अतुष्टि दावानल बनकर मुझे मूलसाने आई। कदाचित प्रकृति भी मेरे अनुकूल थी और खिड़की से पूर्णिमा के बन्दमा का प्रकाश, गंगा की लहरों से स्पर्श कर और नी अधिक स्निधि बन मेरे कमरे में झिलमिला रहा था, बाहर ओस बूदों का रूप लेकर पैदों से गिर रही थी और मैं इस जगत से कहीं बहुत दूर चला गया था....

फिर तो यह नित्य की ही घटना हो गयी। वह नित्य प्रातः एक बार मेरे पास आती और उसी एकटक भाव से गंगा को निहारती रहती। पुनः एक बार सायकाल आती और उहीं मूक भाव से गंगा की अभ्यर्थना करके बली जाती। बार पांच दिनों में उसने ही मुझसे परिचय बढ़ा लिया और उसकी चर्चाओं के विषय असीमित थे। मैं तो आता मात्र ही रहता था। सहसा एक दिन उसने मुझसे पूछ ही लिया कि मैं अपनी नित्य की साधना क्यों छोड़ दैठा हूँ। उत्तर मैं यही कह सका कि शारीरिक रूप से अस्वस्थता के कारण मैं ऐसा करने में हिचिकिचाहट अनुभव करता हूँ।

मैं अपनी रुग्णावस्था के कारण किसी प्रकार नित्य कर्म तो कर लेता था किन्तु अभ्यंग रनान करना मेरे लिए सम्भव नहीं था। हड्डी पर चोट होने के कारण तथा शीत ऋतु होने के कारण डॉक्टरों ने मुझे ऐसा करने से मना भी कर रखा था। बस दूसरे दिन एक सेवक आकर मेरा स्पृज कर जाता था जिससे मुझे ग्लानि ही अनुभव होती रहती थी। कहां घटों-घटों गंगा में तैरते रहने की भैरों वह प्रकृति, कहां यह क्षणिक ला 'झान'। साथ ही मन में चलते अन्तर्द्दृन्दों से भी साधना क्रम विछिन्न हो गया था। उसने उसी राहज रिमत मुद्रा से मेरी और देखा और बोली, "गइया! शुद्धता तो आतंकिक होती है।" मैं लज्जित हो उठा।

उसने स्वयं आपह करके मेरे सामान को खुलवाया और पूज्यपाद गुरुदेव के चित्र को एक कंचे रक्षान पर रखा दिया, जहां से मुझे प्रतिक्षण वे दिखाई

पड़ते रहें। इसके बाद उसने श्रद्धायुक्त भाव से उनके चित्र के समक्ष अग्रवस्त्री लगाई और एक विशेष विधि से चरणों में प्रणाम किया। पूर्वी उत्तर प्रदेश में व्यापि स्त्रियों को पुरुषों के पैर छूने से वर्जित किया जाता है, और इसके पीछे मात्र यही कारण है कि उन्हें साक्षात् भगवति का ही रूप माना जाता है, किन्तु विशिष्ट अक्षरों पर पिता व पितामह आदि का चरण स्पर्श करने की अनुमति होती है और तब स्त्री सिर पर पल्लू रखकर उस पल्लू से पिता वा पितामह के चरण स्पर्श करजी है। वह ठीक उसी विधि से गुरुदेव के चरण स्पर्श कर रही थी। प्रणाम कर वह उसी स्मित मुखमुद्रा से मेरी और मुझी और बोली, "इसमें इतना आश्वर्य क्यों? यही तो मेरे भी गुरुदेव हैं।"

आगे उसने स्वयं मुझे रहस्यपूर्ण ढंग से वह सारा प्रसंग बताया कि वह किस प्रकार से गुरुदेव के सम्पर्क में आयी और उनसे विधिवत दीक्षा लेकर उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। उसके परियारिक गुरु कोई और थे तथा पता नहीं किन अन्य कारणों से वह इस रहस्य को अपने परिवार के सम्मने प्रकट नहीं करसा चाहती थी। अतः उसने मुझसे बचन ले लिया कि मैं भी इस रहस्य को उसके परिवार के सामने नहीं बताऊंगा। मुझे इससे क्या आपत्ति हो सकती थी? यह तो मेरे लिए एक अत्यन्त सुखद सूचना थी जिसमें आश्वस्ति भी थी कि वह एक सामान्य स्त्री नहीं है।

गुरु को पिता के रूप में स्वीकार करना तभी सम्भव हो पाता है, जब व्यक्ति अपने आप को गुरु चरणों में पूर्ण रूप से सौंप चुका होता है, फिर मात्र गुरु ही उसके माता, पिता, रक्षणाल, मित्र, बन्धु या सखा होते हैं। उन्हें पिता रूप में वही तो रक्षीकार कर सकता है, जिसका विच्छिन्न सभी वासनाओं, कुंडाओं से सर्वथा निर्मल हो उठा है, क्योंकि पिता रूप में मानने का अर्थ है दूरियों को समाप्त कर देना, एक बालक बन जाना, शिशु बना जाना अपने गुरु के सम्मान।

उनकी सुदीर्घ देहस्थिति, विशाल वक्षरथल, आजानुबाहु, नेत्रों में धीरता और चेहरे पर सदैव उपरिथित रहने वाली एक मंद मुस्कान हर ऐसे बालक के लिए पिता के अथवाह प्रेम का परिचायक है। (व्रजग्रन्थः)



सामाया हूं

में उड़ती या अवनति के कारण होते हैं तथा जिन्हें जन कर आप स्थय अपने लिए उड़ती का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। नीचे दी गई सारणी में समय को तीन लेटे में प्रस्तुत किया गया है — श्रेष्ठ, मध्यम और निकृष्ट। श्रेष्ठ समय जीदन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य को, यह यह व्यापार से सम्बन्धित हो, तीकरी से सम्बन्धित हो, घर में युग उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो। आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग लाए सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.3% आपके माध्यम में अकिञ्चित हो जाएगा।

यदि किसी कारणणारा आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकते तो नियम समय का प्रयोग कर सकते हैं। इस काल में भी कार्य पूर्ण होता है औप्रतिशत होता है 75% अर्थात् कार्य होने में विलम्ब होता है, किन्तु सफलता किलती है।

निकृष्ट समय का उपयोग तो तभी से निश्चिय है, क्योंकि यदि बनते हुए कार्य का नाशन भूल वश में निकृष्ट समय में हो जाए, तो यह बिगड़ जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को हाथेपे यह निकृष्ट समय में किसी भी प्रकार की कार्य का प्रशस्त न करें।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	मध्यम समय	निकृष्ट समय
रविवार (4, 11, 18, 25 अप्रैल)	प्रातः 6.00 से 10.00 तक सायं 6.48 से 7.36 तक सायं 8.24 से 10.00 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	प्रातः 10.00 से 2.00 तक रात्रि 10.48 से 1.12 तक	दोपहर 2.00 से 6.48 तक सायं 7.36 से 8.24 तक रात्रि 10.00 से 10.48 तक रात्रि 1.12 से 3.36 तक
सोमवार (5, 12, 19, 26 अप्रैल)	ब्रह्मुहृत् 4.24 से 7.30 तक प्रातः 10.48 से 1.12 तक दोपहर 3.36 से 5.12 तक सायं 7.36 से 10.00 तक रात्रि 1.12 से 2.48 तक	प्रातः 9.00 से 10.48 तक दोपहर 1.12 से 3.36 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.00 से 1.12 तक ब्रह्मुहृत् 4.24 से 5.12 तक	प्रातः 7.30 से 9.00 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
मंगलवार (6, 13, 20, 27 अप्रैल)	प्रातः 6.00 से 8.24 तक प्रातः 10.00 से 12.24 तक सायं 7.36 से 10.00 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक रात्रि 3.36 से 8.00 तक	प्रातः 9.12 से 10.00 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक	प्रातः 5.12 से 6.00 तक प्रातः 8.24 से 9.12 तक दोपहर 12.24 से 4.30 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.00 से 2.48 तक
बुधवार (7, 14, 21, 28 अप्रैल)	प्रातः 7.36 से 9.12 तक प्रातः 11.36 से 12.00 तक दोपहर 3.36 से 6.00 तक सायं 6.48 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 4.24 तक	प्रातः 6.00 से 7.36 तक प्रातः 9.12 से 11.36 तक दोपहर 2.00 से 3.36 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक	दोपहर 12.00 से 2.00 तक सायं 6.00 से 6.48 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक
शुक्रवार (1, 8, 15, 22, 29 अप्रैल)	प्रातः 6.00 से 8.24 तक प्रातः 10.48 से 1.12 तक सायं 4.24 से 6.00 तक सायं 7.36 से 10.00 तक रात्रि 1.12 से 2.48 तक	प्रातः 9.12 से 10.48 तक दोपहर 10.12 से 1.30 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.00 से 1.12 तक	प्रातः 8.24 से 9.12 तक दोपहर 1.30 से 4.24 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
शुक्रवार (2, 9, 16, 23, 30 अप्रैल)	ब्रह्मुहृत् 4.24 से 6.00 तक प्रातः 8.48 से 1.12 तक सायं 4.24 से 5.12 तक सायं 8.24 से 10.48 तक रात्रि 1.12 से 3.36 तक	दोपहर 1.12 से 4.24 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.48 से 1.12 तक	प्रातः 6.00 से 6.48 तक प्रातः 8.12 से 6.00 तक सायं 7.36 से 8.24 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक
शनिवार (3, 10, 17, 24, 31 अप्रैल)	ब्रह्मुहृत् 4.24 से 6.00 तक प्रातः 10.30 से 12.24 तक दोपहर 3.36 से 5.12 तक सायं 8.24 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक	प्रातः 7.36 से 8.24 तक दोपहर 1.12 से 2.00 तक सायं 6.00 से 8.24 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक	प्रातः 6.00 से 7.36 तक प्रातः 8.24 से 10.30 तक दोपहर 12.24 से 1.12 तक दोपहर 2.00 से 3.36 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक

दीपित
संकरते हैं।
द्वा भेद
ह हो,
म समय
किता हो।

समय का
हार्दिक

द जाता
१००७

तक
न
एक
ह

चह छमने बढ़ी विद्युष्मि हिरु के कहां हैं

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्ण प्रत्येक व्यक्ति के मन में सशय-असशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति परं वह स्वयं को तजावरहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनावा चाहता है, जिससे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल हरे आवन्य युक्त बन जाय। कुछ ऐसे भी उपाय आपके समझ प्रस्तुत हैं, जो वराहमित्र के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित बांधों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

- | | | | |
|-----------|---|-----------|--|
| 15 अप्रैल | इलायची को अपने दाहिने हाथ में लेकर 'ॐ श्री ही श्री नमः' (Om Shreem Hreem Shreem Namah) | 29 अप्रैल | प्रातः भरनों के तेल का दीपक लगा कर उसे घर की रसोइये में रख दें, इसके उपरान्त ही कोई कार्य करें। |
| 16 अप्रैल | पान के पते पर कोई मिठाई रखकर भगवती पवनी को अमृत करें। | 30 अप्रैल | इन्द्रासी स्तोत्र ('ऐश्वर्य महालक्ष्मी' पुस्तक से) का पाठ करके ही घर से आहर जाएं। |
| 17 अप्रैल | प्रातः काल ही स्नान करने वाले जल में पांच बार तजनी उगली से 'ॐ' लिखकर फिर स्नान करें। | 1 मई | 'निखिलेश्वरानन्द स्तवनं' का सम्पूर्ण पाठ करके ही घर से बाहर निकलें, सफलता मिलेगी। |
| 18 अप्रैल | आज आक्षय तृतीया है, अपने सम्पूर्ण | 2 मई | भगवान गणपति को दूर्वा अपूर्ति करके जाएं। |
| 19 अप्रैल | प्रातः काल 'गुरु गीता' का सम्पूर्ण पाठ करें। | 3 मई | प्रातः, काल भगवती जयदम्बा की नवार्णी मन्त्र जप करते हुए तीन पूज्य चढ़ाकर दिवस का आरंभ करें। |
| 20 अप्रैल | निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण कर ही घर से बाहर जाएं— 'ॐ धृष्णि सूर्य आदित्याय नमः' (Om Gherrineem Soorya Aadityaay Namah) | 4 मई | धूप अथवा लागरबसी जलाकर 'आपद उच्चारक दुर्गा स्तोत्र' (पत्रिका के मार्च '99 अंक में प्रकाशित) का पाठ कर कार्य हेतु बाहर जाएं। |
| 21 अप्रैल | परम पूज्य दद्युसदेव के नन्म दिवस पर आज प्रातः, काल 'निखिलेश्वरानन्द स्तवनं' का प्रतिप्राप्त से पाठ करें, दिवस पर्यन्त गुरु चिन्तन करें तथा गुरु कार्य करने का संकल्प लें। | 5 मई | 'गोमती चक्र' (न्यौछावर : 21/-) को अपने स्तर पर से पांच बार धूपा कर, उत्तर दिशा की ओर फेंक दें, बाधाएं समाप्त होंगी। |
| 22 अप्रैल | 'तांत्रोन्क फल' (न्यौछावर : 42/-) को कुकुम से रंग कर किसी निर्जन स्थान में भूमि में गाड़ दें। | 6 मई | किसी एक व्यक्ति को सद्युसदेव के ज्ञान से जोड़ें अथवा उसे एक पत्रिका दें। |
| 23 अप्रैल | हस्त दिन आप अपने वस्त्रों में सफेद रंग की प्रधानता रखें, आपका दिन शुभ होगा। | 7 मई | काली मिर्च के सात दाने लेकर 'हीम' (Hleem) का उच्चारण करते हुए अपने चारों ओर फेंकें। |
| 24 अप्रैल | पुटकी भर नमक दरवाजे पर रखकर कार्य हेतु जाएं। | 8 मई | गुरु पूजन करके ही बाहर जाएं। |
| 25 अप्रैल | प्रातः श्रीगुरुसचरणों में नमन करते हुए निम्न श्लोक का उच्चारण करें— | 9 मई | लौग को पूजन स्थान में धी का दोषक जला देने से आने वाली विपति समाप्त होती है। |
| | युक्तारो भवसरेभः स्वात् रुकादः तत्त्विरो धक्त त् ।
भव रोऽह इत्त्वरच नुरु रित्वभिधीवते ॥ | 10 मई | बिना कुछ खाएं, घर से बाहर नहीं जाएं। |
| 26 अप्रैल | मुबह 'प्रातः' कालीन मुन्जरित वेद ध्वनि आडियो केसेट से घर के बातावरण को चीतन्य करें, दिवस भर कोई कलह व्याप्त नहीं होगा। | 11 मई | प्रातः, काल कोई महत्वपूर्ण कार्य शुरू करने से पहले घर के ताजे ब्रने भोजन में से कुछ गांग गाय को अपैत करें, कार्य में सफलता सम्भव होगी। |
| 27 अप्रैल | गणपति का ध्यान करके किसी कार्य हेतु बाहर जाएं। | 12 मई | प्रातः, काल भगवान सूर्य को एक ताप्त्रे के कलश में नल लेकर अर्च दें। |
| 28 अप्रैल | प्रातः बाहर जाने से पूर्व 'तुलभोपनिषद' आडियो केसेट को अवण करके ही बाहर जाएं। | 13 मई | प्रातः काल सूपारी पर सिन्दूर लगा कर गणपति रूप में उसका पूजन करें। |
| | | 14 मई | प्रातः, गुरु पूजन सम्पन्न करने तक भीन रहें। |

ज 'अप्रैल' 99 मंत्र-तंत्र-यंत्र विडाल '61'

गांधर्व योगिनी साधना

क्षे वशीकरण सिद्धि

योगिनी... जो स्त्रेह और प्रेम के साथ अपने साधक को दे लाती है वशीकरण के साथ अन्य कई सिद्धियां भी...

Sप्रत्यक्ष बार भगवान शिव से पार्वती ने पूछा, कि देवताओं के लिए तो स्वर्ण में सभी प्रकार के सुख उपलब्ध हैं, आपमराएं नित्य उनकी सेवा करती रहती हैं, उन्हें अद्युषण यौवन प्राप्त है और उनकी समस्त प्रकार की इच्छाएं पूर्ण होती हैं, जबकि लोक में रहने वाले मनुष्यों की सभी इच्छाएं पूर्ण नहीं हो पातीं और वे अपनी अपूर्ण इच्छाओं के जाल में उलझे जन्म-मरण के चक्र में फँसे रहते हैं। अतः आप ऐसा उपाय बताएं, जिससे मनुष्य भी देवताओं के समान तेजस्वी और पराक्रमी बन सके और अपनी समस्त प्रकार की इच्छाओं को पूर्णता प्रदान करते हुए दिव्यता के पथ पर अग्रसर हो सकें।

भगवान शिव ने उत्तर दिया — योगिनी साधना ही एकमात्र ऐसा उपाय है, जिसके माध्यम से मनुष्य अपनी समस्त प्रकार की इच्छाओं को पूर्णता देते हुए, मौतिक और आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त कर सकते हैं। ये योगिनियां तत्काल फल देने वाली और समस्त प्रकार की अतृप्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाली होती हैं।

वास्तव में ही योगिनी साधना का जीवन में महत्व है — योगिनी देव वर्ग से इतर व्यक्ति, किन्तु, गंधर्व आदि की ही तरह अर्द्ध देवियां होती हैं।

अत्यन्त गौर वर्ण, विद्युत आभा सा दैदीप्यमान मुख्यमण्डल, चराचर विश्व को समोहित सी करती झील सी गहरी काली आंखें और उनमें लहराती मादकता और कसणा का एक अनोखा संगम, मांसल, सुडील, पुष्ट दूधिया बदन पर पारद भक्षण और पारद कल्प से प्राप्त चिर यौवन की अठखेलियों के फलस्वरूप सदैव शोदश वर्षीया नववीवना के

रूप में दिखाई देने वाली इन योगिनियों का साहचर्य जिसे प्राप्त हो जाता है, उसके जीवन में किस असम्भव जैसा कोइं शब्द रह ही नहीं जाता, क्योंकि विद्यु आभा से आपूरित इन अत्यन्त तेजस्वी सौन्दर्य की मलिलकाओं के अन्तर समाई होती है तंत्र की विलक्षण तीव्रता।

सौन्दर्य की प्रतिमाएं होने के साथ मूल रूप में योगिनी तंत्र की विशिष्ट क्रियाओं को सम्पन्न करने में साधक के लिए विशेष रूप से सहयोगिनी सिद्ध होती है। यह अपने साधक को खेचरी विद्या (वाणु गमन), रस सिद्धि, भूमर्ख सिद्धि, वशीकरण, शत्रु स्तम्भन, मनोकामना पूर्ति, विद्यु रसों की सिद्धि, अदृश्य होने की शक्ति, यौवन और बल की प्राप्ति आदि सिद्धियां प्रदान कर उसे पल मात्र में ही सम्पूर्ण विश्व का एक अद्वितीय व्यक्तित्व बना देने में समर्थ होती है।

इस साधना की प्रखरता व तेजस्विता और इससे प्राप्त होने वाली असीमित तांत्रिक शक्तियों व सिद्धियों के कारण ही इसे अत्यन्त गोपनीय कर गुरु मुख्य परम्परा में सीमित कर दिया गया और सामान्य जनमानस में इसके विषय में अनेक ध्यान और किंवदन्तियों फैला दिए गए तथा द्वूरता और बोधत्वता की अनिक कहानियों को इनके साथ जोड़ दिया गया, कि वे अत्यक्त भोषण आकृति वाली होती हैं, उनकी मुख्य मुद्रा अत्यन्त भयंकर और नेत्र भय उत्पन्न करने वाले होते हैं, वे मनुष्यों को मार कर उनका रक्त पीती हैं... आदि-आदि।



योगिनियाँ तंत्र साधनाओं की आधारभूता देवियाँ हैं, अपूर्व सौन्दर्य की स्वामिनी होने के साथ ही साथ

इन्हें तंत्र के गोपनीय और दुरुह करहस्यों का भी ज्ञान होता है। ये मात्र नारी आकृति ही नहीं होती, अपितु पूर्ण चैतन्यता से आपूरित एक विशिष्ट सौन्दर्य की स्वामिनी होती हैं, जिनके

रोम-प्रतिरोम में साधनात्मक बल समाया होता है और नेत्रों में समाई होती है तंत्र की प्रखरता, जो कि आधार है तांत्रिक साधनाओं का।

जबकि वास्तविकता तो यह है, कि वे अत्यन्त सौम्य स्वरूपा और निर्मल सौन्दर्य की स्वामिनी होती हैं और सिद्ध होने पर साधक की सभी प्रकार से सहायता करती हैं।

दैहिक सौन्दर्य के साथ-साथ आंतरिक गुणों से भी सम्पन्न ये जिस किसी को भी प्रिया रूप में प्राप्त हो जाती हैं, वह स्वयं अपने आप में अनेक सिद्धियों का स्वामी बन जाता है। यदि यह कहा जाए, कि योगिनी साधना को सम्पन्न किए जिन तंत्र की पूर्णता नहीं, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

जीवन में योगिनी साधना की पूर्ण प्रखरता केवल प्रिया रूप में ही सम्पन्न करने पर सम्भव है। प्रेमिका रूप में सिद्ध होने पर वे प्रतिपल साधक पर प्रेम और स्नेह की वर्षा करने के साथ-साथ उसका मार्गदर्शन भी करती रहती हैं और साधक की साधनात्मक सहचरी सावन होकर उसके सम्पूर्ण जीवन को गति प्रदान करने में समर्थ होती हैं।

परन्तु इस प्रेम में वासना का कोई स्थान नहीं होता, तंत्र अपने आप में वासना से परे है, क्योंकि वासना अपने आपमें एक अधोगमी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा नैतिक व आध्यात्मिक पतन की किया ही सम्पन्न होती है, जबकि तंत्र तो जीवन की ऊर्ध्वगमी प्रक्रिया है। तंत्र और वासना जीवन के दो विपरीत ध्रुव हैं।

'योगिनी तंत्र' में कुल छोसठ प्रकार की योगिनियों

का विवरण प्राप्त होता है। यों भी सभी का अपना अलग महत्व है, परन्तु जो प्रथम और इस साधना को सम्पन्न करने का विचार करते हैं, उनके लिए सभी यंत्रों ने एक मत से सर्वप्रथम जिन बोड्श योगिनियों की साधना सम्पन्न करने की आवश्यकता पर बल दिया है, वे निम्न हैं -

- | | | |
|---------------|-----------------|--------------|
| १. विष्वयोगा | २. महायोगा | ३. सिद्धयोगा |
| ४. माहेश्वरी | ५. कालरात्रि | ६. दुःकारी |
| ७. भूवनेश्वरी | ८. विश्वरूपा | ९. कामाशी |
| १०. हस्तिनी | ११. मंत्रयोगिनी | १२. चक्रिणी |
| १३. शुभा | १४. शंखिनी | १५. पश्चिनी |
| १६. वैताली। | | |

ये सभी योगिनियों अपने आपमें विष्व और अलौकिक समताओं से युक्त होती हैं और सिद्ध होने के साथ ही अपने साधक को भी अलौकिकता, विष्वता और अद्विनीयता प्रदान कर उसे पल भर में ही उस श्रेष्ठता पर ले जाकर खड़ा कर देती हैं, जहां पहुंचना साधक के स्वरूप से बहुत कठिन है।

'बोड्श योगिनी साधना' को कोई भी व्यक्ति, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, युवा हो या वृद्ध सम्पन्न कर सकता है।

यह पूर्णतः सौम्य साधना है और इसे अपने पूजा कक्ष में बैठ कर सम्पन्न किया जा सकता है, आवश्यकता है गुरु और मंत्र के प्रति श्रद्धा और पूर्ण विश्वास की।

साधना विधान

इस साधना में 'बोड्श योगिनी यंत्र' व 'योगिनी माला' की आवश्यकता पड़ती है, जो योगिनी तंत्र के अनुसार मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठित हों।

इस साधना को 11.6.99 अथवा किसी भी माह में शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है।

यह स्थारह विवरीय साधना है।

रात्रि में नी बजे के बाद स्नान कर स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठें, गुरु पीताम्बर भी ओढ़ लें।

सामने लकड़ी के बाजौट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर गुलाब के पुष्पों पर बोड्श योगिनी यंत्र को स्थापित करें।

मानसिक गुरु पूजन कर गुरु मंत्र की ४ माला मंत्र करें। फिर हाथ में जल लेकर अपना नाम, गोत्रादि बोलते हुए साधना में प्रयुक्त होने का संकल्प लें।

यंत्र पर कुंकुम से सोलक बिन्दियां लगाएं और अक्षत अर्पित करें। फिर दाएं हाथ में जल लेकर चिनियोग करें -

ॐ अस्य प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्माविज्ञु महेश्वर
प्रथयः, ऋब्द्युजः भाग छद्वांसि, त्रियामयश्चापुः, प्राणास्त्वा
देवता, आं शीजम्, हीं शक्तिः, क्रौं कीलकं प्राणप्रतिष्ठापयते
विनियोगः ।

जल मूर्मि पर छोड़ दें और धन पर उपना दाहिना
हाथ रख कर निम्न मंत्र बोलते हुए भावना करें, कि यंत्र की
गमरसन चैतन्यता धोरे-धीरे आपके उन्वर समाहित होती जा
रही है ।

ॐ आं हीं क्रौं यं वं लं शं वं शं हंसः ऽोऽहं
अस्य प्राणः इह प्राणः । ॐ आं हीं क्रौं यं वं लं वं शं वं
हंसः ऽोऽहं अस्य जीव इह स्थितः । ॐ आं हीं क्रौं यं वं लं
वं शं वं शं हंसः ऽोऽहं अस्य लर्तेन्द्रियाणि वाऽऽनुदानशक्
चक्षुः त्रिहा प्राण पाणियाक्षयायूपस्थानि इहाबन्धं लुभ्यं
चित्र विष्णुनु न्याहा ॥

फिर योगिनी माला से पहले मूल घोड़ी मंत्र की एक
माला मंत्र जप करें

मूल घोड़ा योगिनी मंत्र

॥ उ॒॒ ऐं हौं कर्त्तौं श्रीं द्रौं शूं शं दुं क्रौं हीं नूं श्रौं यं शं युं
घोड़ा योगिन्द्रौ ज्यमः ॥

Om Ayeim Hreem Kleem Shreem Yeam Shraum Ghrim
Sham Dehm Kream Hreem Neem From Yam Sham Gm
Shodash Yoggayel Namah

फिर प्रत्येक योगिनी मंत्र की एक-एक माला पूर्व दिशा
की ओर मुख्य कर करें ।

॥ उ॒॒ ऐं हौं एं विद्ये अग्रच्छ अग्रच्छ उ॒॒ फट ॥
Om Ayeim Ayeim Divye Aagachchh Aagachchh Om Phat
॥ उ॒॒ हौं मर्तौं जर्तौं महायोगा सिद्धौ उ॒॒ फट स्वाहा ॥
Om Hloum Mloum Gloum Mahayogas Siddhaye Om Phat Swaha

॥ उ॒॒ हौं ऐं फ्रौं सः अग्रच्छ उ॒॒ फट ॥
Om Hreem Ayeim From Sah Aagachchh Om Phat
॥ उ॒॒ हौं हीं माहेश्वरि एहि एहि उ॒॒ फट स्वाहा ॥
Om Hreem Hreem Mareshwari Ehi Ehi Om Phat Swaha
॥ उ॒॒ कर्त्तौं कर्त्तौं कालशात्रि सिद्धौ उ॒॒ फट स्वाहा ॥
Om Kleem Kleem Kartratri Siddhaye Om Phat Swaha
॥ उ॒॒ हुं हुं हौं हीं हूं हूं फट ॥
Om Hum Hum Hreem Hreem Hloum Hloum Phat

वहि साधक इस साधना को सम्पूर्ण करने
से पूर्व 'घोड़ा योगिनी दीक्षा' प्राप्त कर लेता है, तो
फिर उसकी सफलता में सब्देह गहीं रह जाता और
वह अद्वितीयता और श्रेष्ठता के मार्ग पर अतिशील
हो पूर्णता की ओर अग्रसर हो जाता है ।

ज 'अप्रैल' 99 मंत्र-लंब्र-यंत्र विज्ञान '64' ल

॥ उ॒॒ हौं हीं हीं अग्रच्छ मुवन्तेश्वरि उ॒॒ फट ॥

Om Hreem Hreem Aaguchchh Bhuvaneshwari Om Phat

॥ उ॒॒ वं वं विश्वस्त्वो वं वं उ॒॒ फट ॥

Om Vam Vam Vishvavroope Vam Vam Om Phat

॥ उ॒॒ कं कं कामाक्षिए एहि एहि उ॒॒ फट ॥

Om Kam Ksm Kramnakshahi Ehi Ehi Om Phat

॥ उ॒॒ हैं कर्त्तौं हस्तिजापरिन्द्रौ सिद्धौ ये कर्त्तौं हैं उ॒॒ ॥

Om Ayeim Kleem Hastigaminyei Siddhaye Kleem Ayeim Om

॥ उ॒॒ मं मंत्रस्तरे एहि एहि उ॒॒ ॥

Om Manu Mantraroope Ehi Ehi Om

॥ उ॒॒ हौं हौं हौं चक्रवर्त्ये सिद्धौ ये उ॒॒ फट ॥

Om Hreem Hreem Hrouru Chakravartee Siddhaye Om Phat

॥ उ॒॒ शं शं शुभ्रे अग्रच्छ अग्रच्छ शं शं उ॒॒ ॥

Om Sham Sham Shubhre Angachchh Angachchh

Sham Sham Om

॥ उ॒॒ हौं श्री शं शंस्त्रिलि अग्रच्छ उ॒॒ फट ॥

Om Hreem Shreem Sham Shankhlini Aagachchh Om Phat

॥ उ॒॒ ऐं ऐं हौं श्रीं यं फं यश्चिन्नो एहि उ॒॒ फट ॥

Om Ayeim Hreem Shreem Pam Pham Padmini Ehi Om Phat

॥ उ॒॒ आं हौं हौं यं वैतात्ति एहि एहि उ॒॒ फट ॥

Om Aam Hreem Vam Veitaall Ehi Ehi Om Phat

मंत्र जप के पश्चात साधक साधना कक्ष में हो सोए।

अगले दिन नुनः इसी प्रकार साधना समाप्त करें। यह न्यारह
दिन की साधना है। इसमें ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य है और
इसमें केवल एक समय ही भोजन करें।

साधना सामग्री पैकट - 450/-

पार्म नं० ४ (नियम - C देखिए)

१. प्रकाशन : विल्ली
२. प्रकाशन अवधि : मासिक
- ३-४. मुद्रक, प्रकाशक : श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली
५. सम्पादक का नाम : श्री नन्द किशोर श्रीमाली
क्या भारत के नामांकित है? : हाँ
६. पूरा पता : डॉ श्रीमाली मार्ग, झाइकोट
कालोनी, जोधपुर (राज०),
फोन : १३२२०९,
३०६, कोलाट एन्कलेज,
पीतमपुरा, नई विल्ली-३४,
फोन : ७११२२८८
७. उन व्यक्तियों के नाम और पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हों
तथा जो समस्त पूर्णी के एक प्रतिभान से अधिक के सामेवार या हिस्सेवार
हों - श्री नन्द किशोर श्रीमाली, श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली, श्री अनविन्द
श्रीमाली ।
८. मैं कैलाश चन्द्र श्रीमाली एनद डाया धोषित करता हूं, कि मेरे
अधिकतम जानकारी एवं विज्ञान के जनुवार द्विगण सत्य हैं।
दिनांक : ३१.०३.९६, कैलाश चन्द्र श्रीमाली (प्रकाशक)

ये आठ यंत्र हों जीवन में अष्ट सिद्धियाँ की प्राप्ति हैं

यर्थ का अप्रैल मास शिष्यों के लिए गुरु मास होता है, वर्षोंकि इसी माह में उनके आशाध्य सद्गुरुके तीरुं बन्दगीय नामाचारी द्वोनों का ही गठन दिवस या अयतरण दिवस होता है। इसी उपलक्ष में साधकों के लिए ये आठ यंत्र उपहार स्वरूप दिए जाएं हैं, जिनका कि आप स्वयं निर्माण कर कुछ अन्य प्राण-प्रतिष्ठित घैतन्य नुटिकाओं के साथ प्रयोग कर सकते हैं। ये सभी प्रयोग अचूक, तीव्र एवं काटनार हैं।

तत्रं संत्रमयं प्रोक्तं संत्रात्मा देवतैव हि।
देहात्मन्त्रोर्वर्था तत्र भेदो यंत्र देवतावौरेत्था ॥

देवता के विद्य हा शरीर स्वप्न में ही यंत्र को भावना करना चाहिए। यंत्र की पूजा किए बिना देवता प्रसन्न नहीं होते।

जीवन में आ रहे संकटों, दुःखों व समस्याओं पर नियंत्रण करने में सक्षम होने के कारण इसे यंत्र कहा गया है।

जिस प्रकार भासान्य प्राणियों के रहने के लिए उनके धर होते हैं, उसी प्रकार देवताओं के निवास योग्य विशिष्ट स्थान या गृह होते हैं— यंत्र ऐसे ही पवित्र गृह होते हैं जहां देवता निवास कर सके। यंत्रों को शास्त्रों में 'देवनगर' नाम से भी सम्बोधित किया गया है। (यंत्र लेखन में प्रयुक्त लिपि को इसी कारण देवनागरी कहा जाने लगा, जो कि भाज कई भारतीय भाषाओं की लिपि है, इन देवनगरों में न केवल अकेले वेब का ही आवास होता है, अपितु प्रत्येक देव के अधिदेव, प्रत्यधिवेव, सहायक शक्तियों का भी आवास होता है। अतः यंत्र के बहुत कुछ रेखाओं का समृद्ध मात्र न होकर साक्षात् देवताओं का सपरिवार 'आवासगृह' है,

ज 'अप्रैल' 99 मंत्र-यंत्र पिञ्जाल '65'

इस तथ्य को समझे तिना नाधना में सफलता अर्थात् हो रही है। इन गृहों में आवंत्रण प्राप्त कर देवता अवस्थित होते हैं और साधक की मांगोकामना पूरी होते हुए सहायक सिद्ध होते हुए आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

यंत्र लेखन में आवश्यक तथ्य

आगे कुछ यंत्रों का उल्लेख किया जा रहा है, जिनका साधक स्वयं निर्माण कर साधना सम्पन्न कर अभीष्ट फल प्राप्त कर सकते हैं। यदि विशेष रूप से कोई निर्देश नहीं हो, तो इन सामान्य नियमों का वेब लेखन में उपयोग किया जा सकता है—

१. यंत्र लेखन में प्रयुक्त स्थानी — शास्त्रों में अनेक पदार्थों का विवरण प्राप्त होता है, किन्तु सामान्य रूप में इन यंत्रों को अट्टगन्ध (कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं) अथवा गन्धवय (कुकुरम, रिसन्दूर व हल्दी) को पानी में चोल कर बना सकते हैं।

२. लेखिनी का बयन — यंत्र लेखन के लिए चांदी की शलाका का प्रयोग कर सकते हैं अथवा उनार, नीम, आम आदि को कलम डारा यंत्र का अंकन किया जा सकता है।

३. यंत्र किस पर अंकित करें — यंत्र को भोजपत्र अथवा श्वेत सूती वस्त्र पर अंकित करना अनुकूल है।

४. यंत्र लेखन मुहूर्त — किसी भी श्रेष्ठ स्मय (मै समय हूँ) स्तम्भ से अथवा 'काल निर्णय' से, मैं यंत्र बनाना चाहिए।

५. यंत्र बनाते समय धूप एवं अश्रु विचार नहीं लाना चाहिए तथा मन में कोई अश्रु विचार नहीं लाना चाहिए।

६. यंत्र निर्माण करते समय यंत्र से उम साधना वे सम्बन्धित मंत्र अथवा गुरु मंत्र का पौन रहने हुए जप करते रहें।

किसी भी कार्य को सुचाह स्वप्न से पूर्ण कर पाना सम्बन्धित उपकरणों के बिना सम्भव नहीं है— ऐसे ही आवश्यक उपकरणों को यंत्र कहते हैं, जो याच कुछ अमर एवं अद्वितीयों के समृद्ध न होकर आवास होते हैं वेब गतियों के जिनसे साधक की मांगोकामना आशीर्वाद प्राप्त होता है।

१. वष्टीकरण यंत्र

एक छोटे से बालक के चेहरे में ऐसा क्या होता है, जो प्रत्येक व्यक्ति को उसे गोद में उठाने को विवश कर देता है, अन्यथा वह छोटा शिशु न तो बोल ही पाता है, और न ही अपनी कोई बात कह सकता है। परन्तु फिर भी उसको सबका घायल मिलता है – यह उसके अन्वर ईश्वर प्रवत्त वशीकरण शक्ति के कारण ही होता है, जो बड़े होने पर कुसंस्कारों एवं विचारों के अधारों से समाप्त हो जाती है। यदि व्यक्ति में वशीकरण हो, तो उसके जीवन में प्रत्येक व्यक्ति से अनुकूलता ही मिलती है।

इस यंत्र को सफेद शूती कपड़े पर गन्धनय से लिखकर बनाकर यदि मनोयोग से पूजन किया जाए, तो साधक के व्यक्तित्व में वशीकरण शक्ति का विकास होने लगता है, जिससे लोग बिना नृ-नच किए एक बार कहने पर ही अपना सहयोग प्रदान करते हैं। अधिकारी उसके अनुकूल रहते हैं, परिवितजनों में उसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस यंत्र के मध्य में जहाँ अमुक लिखा है, वहाँ 'सर्वजन' लिखे यदि सर्वजन का वशीकरण करना है। यदि किसी पुस्तक अथवा स्त्री विशेष को अपने अनुकूल बनाना है, तो उसका नाम अंकित करें।

यंत्र में चार स्थानों पर 'श्री' बोज अंकित है, इन चारों बोजों पर एक एक 'ब्रीडा' स्थापित करें। फिर यंत्र का कुंकुम, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें तथा परिच्छम दिशा की ओर मुख कर बिना माला के सम्मत निम्न मंत्र का जप करें –

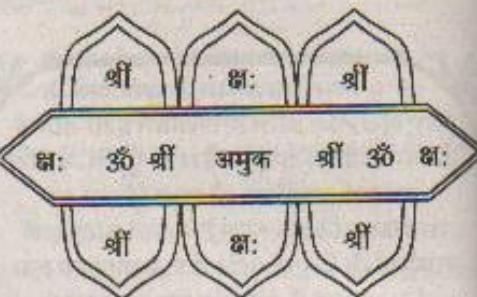
वशीकरण मंत्र

॥ उ॒॒ श्री हौं हु॑ सर्व॑ वशमानय॑ वल॑ उ॒॒ ए॒॒ ॥

Om Shreem Hreem Hum Sarvam Vashmaanay Kleem Om Phat

यह ७ दिन की साधना है, आठवें दिन चारों ब्रीडा को यंत्र में लपेट कर मील से बोंध कर जल में प्रवाहित करें।

साधना सामग्री पैकेट – 150/-



२. महामृत्युंजय यंत्र

कई बार ऐसी स्थितियां जीवन में आ जाती हैं, जब प्राणों पर संकट बन आता है – ये कारण कोई भी हो सकता है, किसी वडयंत्र अथवा सामिन का शिकार होना, किसी भ्रष्टकर रोग से ग्रसित होना आदि। भगवान शिव को संहारक देवता माना जाया है और मृत्यु पर भी विजय प्राप्त करने के कारण मृत्युंजय कहा जाया है। अपने साधक के प्राणों पर आए संकट से भगवान महामृत्युंजय अवश्य ही रक्षा करते हैं, यदि प्रामाणिक रूप से उनकी साधना सम्पन्न कर ली जाती है। इस यंत्र प्रयोग द्वारा समस्त प्रकार के भय – राज्य भय, शत्रु भय, रोग भय आदि सभी शून्य हो जाते हैं।

इस यंत्र को किसी सोमवार के दिन कपड़े पर अंकित करें। यंत्र में जिस स्थान पर अमुक शब्द आया है, वहाँ अपना नाम लिखें। यदि यह प्रयोग आप किसी अन्य के लिए कर रहे हों, तो उसका नाम लिखें। यंत्र के चारों कोनों पर जो विशूल अंकित है, वह प्रतीक है इस बात का कि चारों दिशाओं से भगवान शिव साधक की रक्षा कर रहे हैं। यंत्र के चारों कोनों पर काले तिळ की एक-एक ढेरी बनाएं। प्रत्येक ढेरी पर एक-एक 'पञ्चमुखी रुद्राक्ष' स्थापित करें। ये चार स्त्रांश भगवान शिव की चार प्रमुख शक्तियां हैं।

इसके पश्चात् 'महामृत्युंजय माला' से निम्न मंत्र की ५ मालाएं सम्पन्न करें –

महामृत्युंजय मंत्र

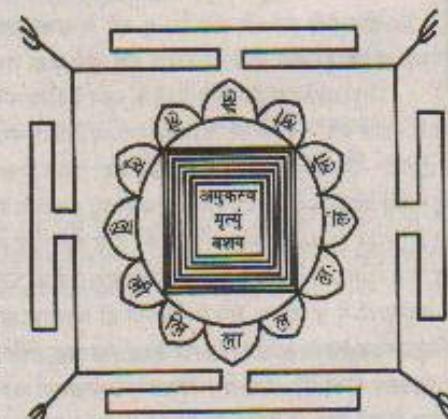
॥ उ॒॒ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनं उर्वरकरुक्मिव
वन्धनलान् मृत्योमुक्तीय मामृतात् ॥

Om Trayambakam Yajamahe Sugandhim Pushtivardhanam
Urvurukminis Bandhanam Metyormuksheya Maamritataat

इस मंत्र का ११ दिन तक जप करें, फिर चारों स्त्रांशों को एक काले धागे में पिरोकर धारण कर लें। एक माह धारण करने के बाद यंत्र, स्त्रांश व माला को जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री पैकेट – 240/-

ज 'ओप्रेट' 99 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '66'



३. विवाद जय यंत्र

फोर्ट कच्छरी का चक्रकर ऐरा होता है, कि किसी भी अच्छे भले व्यक्ति के व्यवस्थित जीवन को अस्त-व्यस्त कर विज्ञान के कागार पर खड़ा कर देता है। कई बार आप पर नकली आरोप लगाकर आपका प्रतिकूली पक्ष मुकदमों में विजय अभिन्न कर लेता है, और आप सत्यता पर खड़े रहने पर भी उपनी सत्यता को प्रमाणित नहीं कर पाते। इस यंत्र साधना को उन्ने के बाद यदि मुकदमों में उपरिक्त हुआ जाए, तो निश्चय ही इस यंत्र के प्रभाव से साधक बादी पर विजय प्राप्त करता है।

व्यापार के सिलसिले में जाते साथ, किसी बड़े स्तर का क्रय-विक्रय अथवा भेज-भाष करने के पूर्व भी यदि इस लोग को सम्पन्न कर लिया जाए, तो मूल्यों की दर आपके मनोनुकूल स्तर पर तय होती है।

चार बल वाले इस यंत्र को घोषित अधिवा करपड़े पर अंकित करें। यंत्र के मध्य में जहां अमुक लिखा है, वहां उस व्यक्ति का नाम लिखें, जिसके साथ विवाद होना है अथवा मुकदमा होना है। नाम के ऊपर पीली सरसों से एक ढेरी बनाकर उसपर 'बजलामुखी गुटिका' स्थापित करें। किर 'पीली हकीक माला' से निम्न मंत्र की ५ माला सम्पन्न करें—

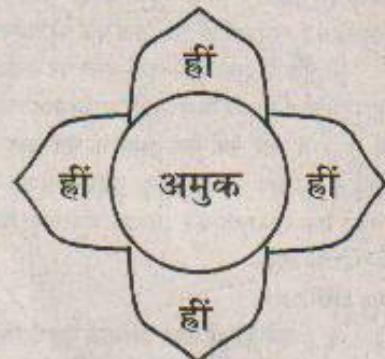
विवाद विजय मंत्र

॥ उ॒॒ कर्त्त॑ क्रीं महामात्रे विजय स्तिद्वि॒ सत्वरं मे देहि॒ उ॒॒ कट् ॥

Om Kleem Kreem Mahaamaatre Vijay Siddhim Satvaram Me Dehi Om Phat

यह ७ दिन का प्रयोग है। आठवें दिन माला व गुटिका को जल में विसर्जित कर दें। निया दिन मुकदमे अथवा विवाद की तारीख हो, उस दिन यंत्र को आपने साथ ही रखें। बाद में यंत्र को भी विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 240/-



४. राज्य बाधा निवारण यंत्र

यदि आप सरकारी कर्मचारी हैं, तो आपको जात होगा कि किस प्रकार एक तबादला व्यक्ति के जीवन को मथ कर रख देता है। कई बार व्यक्ति चाहता है कि तबादला न हो, कई बार वह चाहता है, कि अमुक स्थान पर तबादला हो, ऐसे कार्यों में बिलम्ब होना अथवा मनोनुकूल न हो पाना राज्य बाधा है। यहि आप रिटायर्ड हैं, तो आपकी पेंशन में अव्यवस्था राज्य बाधा है। आपने लोग के लिए आवेदन किया है, परन्तु प्रसन्नाव पास नहीं हो रहा है अथवा कोई टेप्डर जो आपने भरा है पास नहीं हो रहा है। बिजली, टेलिफोन अथवा रुशन अफिस के चक्रकर काटते काटते आप परेशान हो गए हैं, परन्तु अभी भी आपका कार्य बटका का अटका ही है। कार्यालयों में आपकी फाइल बड़ी पड़ी है, परन्तु अधिकारी बिना रिश्वत निये कुछ बात आगे बढ़ाने को राजी ही नहीं हैं। ये सब राज्य बाधाएँ ही हैं, जिनपर आप इस यंत्र प्रयोग द्वारा विजय प्राप्त कर सकते हैं।

सबसे पहले चावन की चार ढेरियां बनाएं, उस पर एक स्टील की धाली को स्थापित करें। धाली में इस यंत्र को अंकित करें। यंत्र के मध्य में 'सामुद्धा' को स्थापित करें, इसके दोषी और 'अबोला' को स्थापित करें। बाईं ओर काली मिर्च के पांच बांदे रुचापित करें। किर यंत्र, सामुद्धा, रुचा पर कुंकुम से तिलक कर अक्षन, पुष्प अर्पित करें। इसके बाद निम्न मंत्र का विजय माला से ७ माला मंत्र जप करें—

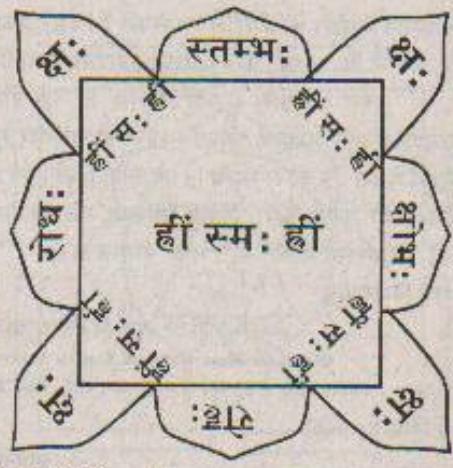
राज्य बाधा निवारण मंत्र

॥ उ॒॒ ऐं क्रीं हीं राज्यबाधा निवारणाच रुद् ॥

Om Ayeem Kreem Raajyabadaa Nivaranay Phat

यह ८ दिन का साधना है, जोमें बिन सामुद्धा, अबोला एवं माला को जल में विसर्जित करें। निस धाली में यंत्र बनाया है उसे धो नें, इस नल को (धोवन) किरी पौधे अथवा पेड़ की जड़ में डाल दें।

साधना सामग्री पैकेट - 250/-



५. गृह शान्ति यंत्र

घर में यदि सुख हो, शान्ति हो, पतिव्रता स्वी हो, आज्ञाकारी एवं संरक्षारी पुत्र-पुत्रियां हों, प्रेम और वात्सल्य बढ़ने करने वाले बृद्ध नन हों, तो स्वर्ग और कोई नहीं आपका घर ही है। परन्तु फिर भी यह सब जाते आज कल शहरी माहौल में काल्पनिक जाते हैं साचित हो चुकी हैं। जहां बड़े-बड़े संयुक्त परिवार हुआ करते थे, वहीं परिवार तो छोटा होता चला गया है। परन्तु परिवार के सदस्यों में एक-दूसरे के प्रति प्रेम भी कम हो गया है।

यदि परिवार में ही सुख, शान्ति का बातावरण नहीं रहेगा, तो उसके सदस्यों का किसी भी प्रकार से विकास सम्भव नहीं है। इस यंत्र द्वारा आपके घर में अपने आप ही घर में शान्ति, प्रेम, और प्रसन्नता की लहर व्याप्त हो जाएगी, यह इस यंत्र के आहूत वेतनाओं के प्रभाव के कारण सम्भव हो पाता है। गृह शान्ति प्रयोग को साधक प्रायः गम्भीरता से नहीं लेते हैं, परन्तु उनकी कई समस्याओं एवं मानसिक परेशानियों का निवान इसी प्रयोग में छिपा होता है।

किसी शुद्ध पीले सूती खस्त पर गन्धव्रय अथवा कुंकुम से इस यंत्र का निर्माण करें। यंत्र के मध्य में 'शालिग्राम' को स्थापित करें तथा शालिग्राम के ऊपर व नीचे एक एक 'तांत्रोल्ल नारियल' स्थापित करें। शालिग्राम एवं तांत्रोल का धूप, दीप, कुंकुम, पुष्प से पूजन करें। फिर निम्न मंत्र का २० निन्द्र तक उद्बारण करें (प्रत्येक मंत्रोवार के साथ एक अक्षत शालिग्राम पर अर्पित करें)।

गृह शान्ति मंत्र

// उौं हों हों नमः शिवाय गृहस्थ सुखं देहि देहि उौं //

Om Hreem Hroum Naamah Shivany Grishasti Sukham Dehi Dehi Om

सात विन्द्र के इस प्रयोग के बाद यंत्र समेत समस्त सामग्री को किसी तालाब अथवा नदी में विराजित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 180/-

हों						
अं	आं	इं	इं	उं	ऊं	वं
जं	झं	ঝং	ঝং	ঢং	ঢং	কং
ছং	ঝং	মং	যং	অং	হং	লং
চং	বং	সং	হং	লং	ণং	লু
ঢং	ফং	ঘং	শং	বং	তং	এং
ঘং	ঘং	নং	ঘং	দং	ঘং	ং
ঝং	খং	কং	অং	আং	ওং	ওং
হোঁ						

६. शत्रु विजय यंत्र

इस्त्रा एक ऐसी वृत्ति है, जिसके वशीभूत होकर आपके तथाकथित मित्र एवं शुभचिन्तक भी शत्रुत व्यवहार करने लगते हैं। तब यह और भी खुतरनाक हो जाता है, जब उनके व्यवहार से पता भी नहीं चलता कि आप से वे इस्त्रा रखते थे हैं आपका अच्छा भला व्यवहार चल रहा हो, आपके पुत्र उत्तरि कर रहे हों, आपके घर में सम्पन्नता हो, आपके घर में वैभव हो, तो पता नहीं चले जाएंगे को कष्ट होने लगता है – ये अप्रकट शत्रु होते हैं, जो कभी भी उचित अवसर का लाभ उठाकर आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। दूसरे प्रकार के शत्रु तो ये होते हैं जिनसे कि आपको कोई व्यक्तिगत शक्ति, दुश्मनी अथवा रोनेश हो।

इस यंत्र द्वारा आपके शत्रु नष्ट तो नहीं होंगे, परन्तु आपके प्रति उनका शत्रुत व्यवहार अवश्य समाप्त हो जाएगा। सूर्योदय के पश्चात शुभ मुहूर्त में इस यंत्र को सफेद कपड़े पर अकित करें। यंत्र के मध्य में शत्रु का नाम लिखें और उसके ऊपर 'विजय सिद्धियाँ' को स्थापित करें। फिर निम्न मंत्र की 'छित्रमस्ता माला' से ५ माला सम्पन्न करें –

शत्रु विजय मंत्र

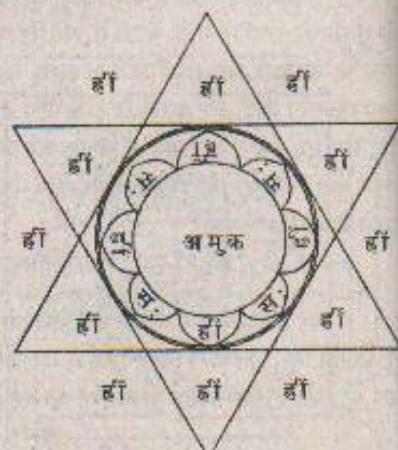
// उौं हुं कुं छा॑ शत्रु विजयाय फट् //

Om Hum Num Chitram Shatru Vijayay Phat

श्यारह विन तक इस मंत्र का जप करें, फिर समस्त सामग्री को जल में विराजित करें।

साधना सामग्री पैकेट - 220/-

ज 'अप्रैल' 99 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '68'



७. सौभाग्य प्रदायक यंत्र

कुछ तो यहों का प्रभाव होता है, और कुछ व्यक्ति के स्वयं के पूर्व कर्म व संस्कार मिलकर व्यक्ति के भाग्य का निर्माण होता है। भाग्य के सम्बल की जीवन में अन्यन्य आवश्यकता होती है। क्या कारण होता है, कि समान रूप से परिश्रम करने वाले दो व्यक्तियों में, अथवा समान योग्यता रखने वाले दो व्यापारियों में एक का धन्धा चमक जाता है, जबकि दूसरे का सामान्य ही रहता है – कहीं न कहीं इसका कारण उसके भाग्य में ही होता है।

यंत्रों के द्वारा सौभाग्य का जागरण किया जा सकता है। इस यंत्र को कपड़े पर अंकित कर उसके मध्य में 'श्री मुद्रिका' को स्थापित करें। यंत्र के सामने एक वैष्णव गुटिकालित करें तथा उसके सामने एक पात्र में 'शुभ' एवं 'लाभ' नामक दो गुटिकाएं स्थापित कर लें। मुद्रिका एवं दोनों गुटिकाओं का कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प से पूजन करें।

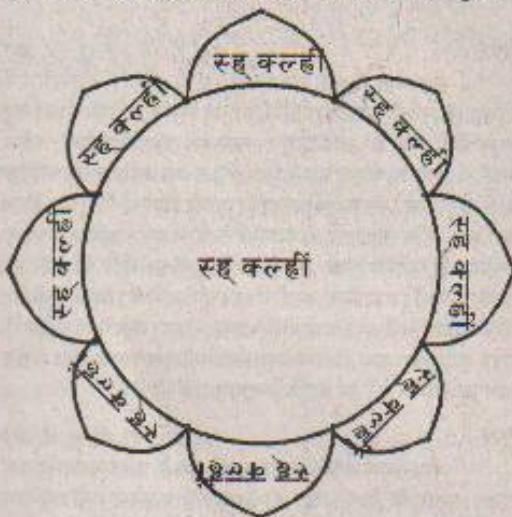
फिर निम्न मंत्र १५ मिनट तक जप करें। प्रत्येक मंत्रोंचारण के साथ एक आचमनी जल शुभ एवं लाभ पर हालें।
सौभाग्य जागरण मंत्र

// उ३ श्रीं सौभाग्य सिद्धि ह्रीं उ३ व्रमः ॥

Om Shreem Soubhaagya Siddhim Hreem Om Namah

जप समाप्ति के बाद कुछ जल को ग्रहण करें। शेष जल को स्वयं अपने ऊपर तथा धर में छिड़क दें। ऐसा ११ दिन तक करें। बारहवें दिन यंत्र व गुटिकों को मन्दिर में चढ़ा दें एवं श्री मुद्रिका धारण कर लें।

साधना सामग्री पैकेट - 210/-



८. कार्तवीर्यजुन यंत्र

जिस क्षण पर मनुष्य के जीवन में इच्छा समाप्त हो जाती है, उस क्षण से उसका जीवित रह पाना असम्भव हो जाता है। कोई मनुष्य ऐसा नहीं है, जिसकी कोई इच्छा न हो और इच्छा होना कोई गलत नहीं है। इच्छाएं हीं और इच्छा पूरी करने का व्यक्ति में सामर्थ्य ही, वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ के लक्षण हैं। इच्छाओं के अनन्त रह जाने से व्यक्ति में हीन भावना धर कर लेती है और उसके जीवन का भावी विकास भी अवस्था हो जाता है। कार्तवीर्यजुन को भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र का अवतार माना गया है, उनके इस यंत्र की साधना करने से साधक की मनोकामना पूर्ण होती है।

किसी शुद्ध वस्त्र पर यंत्र का अंकन कर मध्य में 'ॐ फ्रौं' लिखें, उस पर 'सुदर्शन चक्र' का स्थापन करें, फिर चक्र का पुष्प, कुंकुम, अक्षत, धूप आदि से संक्षिप्त पूजन करें। यंत्र के नीचे कुंकुम से अपनी मनोकामना संक्षेप में लिख दें। फिर 'मूर्गा माला' से निम्न मंत्र की '५ माला' जप करें –

मनोकामना सिद्धि मंत्र

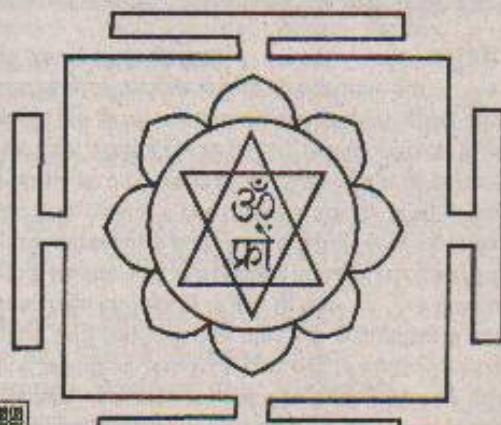
// उ३ हृं फ्रौं हृं महावल्य मनोवाच्छितं सिद्धुचे
कार्तवीर्यवद् फट् ॥

Om Hum From Hum Mahabala Manovaachchitam
Siddhaye Kaartaveeryav Phat

यह ११ दिन का प्रयोग है। प्रयोग समाप्ति पर यंत्र को चक्र व माला के साथ जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 225/-

ऋ 'अप्रैल' 99 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '69' ल



ब्रह्म की वाणी

मेष

(वृ, वे, वो, ली, लू, लो, आ)
यह माझ आपके लिए सामान्य ही रहेगा। उत्तरवली एवं हड्डब्राइटन करें, जलदबाजी में लिए गए निर्णय छानिश्वर होंगे। नए अनुबंधों में लाभ की आशा न्यून, रुका हुआ धन प्राप्त होगा, नवीन बाहन के द्वाय का योग। अपनी पूजी की अचल सम्पत्ति को धार्मिक कार्यों में लगाएं। अवनंत की मरुद ऐ उलझनों में सुधार होगा तथा कुछ नवीन उलझनों का सामना करना पड़ेगा। अधिकारियों के नहयोग ये परिस्थितियां अनुकूल होंगी, सहकारियों की ओर से सतर्कता बढ़ते। मांगलिक कार्यों में अड़नें आयेंगी। मित्रों से मेल-जोलन बनाकर चलने तथा यात्रा योग कठिकर रहेगा। काण के लेन देन से बचें। समय पर काम होने ऐ प्रसन्नता होंगी इस समय आप 'शनि साधना' सम्पन्न करें हर कार्यों में सफलता मिलेगी।

वृष्टि

(इ, उ, पु, वा, वी, तू, वे, वो)
यह समय आपके लिए बहुत ही शुभ है, परिश्रम लाभदायक होगा। संतान के शिक्षा पक्ष को लेकर धिता रहेंगी। नौकरीपेशा व्यक्ति व वर्ष पर नियंत्रण रखें। प्रेम विवाह के सामने में समय अनुकूल है, मित्रों का सहयोग मिलेगा। आकाशिक धन-प्राप्ति का योग नहीं। यात्रा योग सामान्य, बाहन प्रयोग के समय भावधानी बरतें। मांगलिक कार्य का योग तथा धार्मिक कार्यों पर धन व्यय होगा। औपेकिस में सहयोग व्यवहार बनाए रखें, आपसी रानीति से दूर रहें। संतान की ओर से मानसिक परेशानी रहेगी। घरेलू समस्याओं के प्रति उत्सीधता न बरतें। अधिक वर्ग के लिए यह समय बहुत ही महत्वपूर्ण सफलतादायक रहेगा उनके साथे कार्य पूर्ण होंगे तथा इष्ट देवता जी विशेष कृपा रहेंगी। परिवार में पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। पूर्ण अनुकूलता के लिए 'ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना' सम्पन्न करें।

मिथुन

(का, की, कू, य, त, लो, ला)
आप अपने क्रोध पर नियंत्रण करेंगे तो आपके हर कार्य बनेंगे, क्योंकि आपके क्रोध के कारण ही लोग आपके बात करने में डरते हैं। इस समय आप की नौकरी में तरक्की के अवसर बनेंगे, आप जिस कार्य को भी करें उसे पूरी गहनत से करें। मित्रों पर वरिष्ठ के लोगों से विशेष सहयोग प्राप्त होगा। आप स्वधाव से चंचल और दूरमूल हैं इसी नौकरियता के कारण भावधान में आपका मान सम्मान होगा। घर में सुख सुविधा के साधनों में वृद्धि होंगी। स्वास्थ्य के प्रति भावधानी बरतें, पेट शाब्दनां रोगों से चिह्नित होने रहेगा। कला जगत के विद्यार्थियों के लिए समय बहुत ही सुनहरा है जो उन्होंने पिछले कई वर्षों से कार्य सोचे लुप्त थे, वे इस समय पूर्ण होंगे तथा उनके कार्यों को सराहना होंगी। यदि आप इस समय आप 'शाकम्भरी साधना' सम्पन्न करते हैं, तो सफलता प्राप्त होने की संभावनाएं हैं।

कर्कि

(ली, हु, लो, ला, ली, डे, डा)
यह समय थोड़ा उत्तर व दक्षिण द्वयलिंग जो भी कार्य करें पूरा नोच समझ कर करें। व्यापारिक कार्य शेत्र से धार्मिक स्थितियों में सुधार होंगे। अग्रिकृषक एवं शान्ति से सम्बन्धित कार्य करने वाले अधिक लाभ की गिरिति में रहेंगे, आकृष्मक धन-प्राप्ति के योग सामान्य। मित्रों ने महयोग प्राप्त होंगा, नए अनुबंध लाभप्रद होंगे। प्रेम विवाह में अनुकूलता रहेगी। कला-जगत के व्यक्ति समाज सेवा में सुधार होंगे। जो आज कार्य भी चाहे, उस कार्य को भाज ही पूरा करने का प्रबल कीजिए, कल पर छोड़ेंगे तो डानी होंगी। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। नए व्यावसाय प्राप्तमा होंगे। धार्मिक प्रसंगों को लेकर यात्रा होंगी एवं व्यवस्था बनी रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अच्छा रहेगा। पहले के साथे हुए कार्य ऊब पूर्ण होंगे। पूर्ण अनुकूलता के लिए 'विद्यात्मा साधना' करें।

स्त्रिंह

(गा, गी, मू, मै, जो, टा, टी, टु, टा)
कल्पना की दुनियां से बाहर निकल आइए और वास्तविकता का सम्मान कीजिए। अपने व्यवहार के परिष्कार में ही सफलता प्राप्त होंगी। आपके अन्दर बहुत ही प्रतिमा है, आप उसको वेख नहीं पा रहे हैं, अपनी क्षमता और जान को पहचानें, तो हर कार्य में आप को सफलता मिलेंगी, करोबार में लाभ होना तथा रुका हुआ धन प्राप्त होगा। नौकरीपेशा वर्ग के व्यक्तियों की पदोन्नति होंगी। नौवनसाधी का विशेष सहयोग प्राप्त होगा। किसी विशेष तीर्थ के लिए यात्रा का योग बनेगा। शनु आप को परेशान करेंगे। शनु से सावधान रहें, आपसी विवाद और रविशा से दूर रहें। पूर्ण अनुकूलता के लिए आप 'काल भैरव साधना' सम्पन्न करें।

कठन्या

(लो, पा, पी, पू, व, व, ठ, वे, पो)
इस नाह धार्मिक कार्यों में धन व्यय होगा तथा मन की शांति मिलेंगा। आपके मन में उत्पाद, प्रसन्नता का बातावरण रहेगा। आप नियम कार्य में हाय डालेंगे उसमें आपको सफलता मिलेंगी, परिवार से आपको भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी पेशा वर्ग के व्यक्ति की तरक्की होंगी, अधिकारी आपके कार्य की चराहना करेंगे। बाहन प्रयोग करते समय सावधानी बरतें। धर में नहीं मेहमान के अने से प्रसन्नता का बातावरण रहेगा। कला जगत के व्यक्ति के लिए यह समय सफलतादायक होगा, उनका सम्मान होना तथा किसी विशेष कार्य के लोने से मन प्रसन्न रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए महत्वपूर्ण समय है यह समय अगर हाथ से निकाल गया हो तो उसकलता हाथ लगेंगी इसलिए इस समय का सही उपयोग करें, इस माह आप 'सरस्वती साधना' अथवा 'गुरु प्राण धारण साधना' सम्पन्न करें। आपको हर कार्य में सफलता मिलेंगी।

सर्वार्थ, अमृत, रवि पूर्ण, गुरु पूर्ण शिद्ध योग

इन दिवसों पर आप किसी भी साधना को सम्पन्न कर सकते हैं।

3 अप्रैल	- सर्वार्थ सिद्धि योग
5 अप्रैल	- सर्वार्थ सिद्धि योग
10 अप्रैल	- सर्वार्थ निषिद्धि योग
16 अप्रैल	- सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग
19 अप्रैल	- सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग
22 अप्रैल	- सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग, गुरु पूर्ण योग
23 अप्रैल	- पूर्ण योग
28 अप्रैल	- सर्वार्थ निषिद्धि योग

द्वूषणा

(ग, री, रु, ता, ती, द्वू)

भगवान् भी उड़ी की मध्य करता है, जो स्वयं की मध्य करना चाहते हैं, जो हिंगत से ओत-प्रोत होते हैं, जो परेशनियों के सामने खुटने नहीं टेकते बरन परेशनियों को अपनी बाजुओं के नोर से हटा देते हैं। आप जी हर समय मायून से रहते हैं, हीन मावाना से ग्रस्त रहते हैं, वह आप जैसे व्यक्तिकृत को शोभा नहीं देता। आप स्वयं में विलक्षण हैं, जिस दिन आप यह जान लेंगे, आप अपने आप को सफलता के शिखर पर पाएंगे। साधनात्मक चिंतन बनाये रखें, बिजनेस को लेकर एवं धार्मिक प्रसंगों के उद्देश्य से की गई वाच विशेष फलप्रद सिद्ध होगी। इस माह पूर्ण अनुकूलता के लिए आप 'विद्युत माला' धारण करें।

वृष्टिष्वरु

(तो, ना, ली, तु, ले, नो, वा, वी, द्वू)

आप सौभग्यशाली हैं, लेकिन दुश्मन्य की काली परछाई भी द्वृलीनी पढ़ेंगी। महत्वपूर्ण अवसर को आप अपनी अन्यथिक सत्कृता से ही पकड़ पाएंगे अन्यथा वे आपको अंगूठा दिखा देंगे। इसलिए पहले से ही अपने को स्मिर बनाएं तो आपको जल्दी ही सफलता मिलेगी। यह समय व्यापार, नीकरी पेशा तथा सुरक्षदर्म में फैसे लोगों के लिए काफी राहतपूर्ण व्यतीत होगी, बेरोजगार व्यक्ति रोजगार प्राप्ति के लिए प्रयास करें। परिवर्त में प्रसन्नता का बातचरण रहेगा तथा नवीन बाड़न की प्राप्ति होगी। आप 'पारदेश्वर साधना' करें एवं 'पारद शिवलिंग' पर जल चढ़ाएं तपत्वता प्राप्त होंगी।

थृष्णु

(ठे, ठो, आ, श्वी, श्वा, क्षा, द्वा, श्वे)

यह माह आपको बहुत कुछ प्रदान कर जाएगा, लेकिन यह ध्यान रखें, कि हवा में उड़न पर कभी-कभी धरती पर आना फड़ता है, अतः धरती पर छी रहें, उच्च अवसर मिलने पर आपनी पहचान न ल्हों, कर्याकृत आपकी पहचान के कारण आपको अवसर मिला है। जोश और होश दोनों को बनाकर रखें, तो आप बहुत कुछ कर सकते हैं समर्थ होंगे। नीकरी पेशा वर्ग के व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा है, अधिकारी उनके कार्य की प्रयोगान्वयन करें। आप का आगमन होगा। विश्वार्थी वर्ग के लिए यह समय बहुत ही लाभकारी है इस समय का सही उपयोग करें तो सफलता अवश्य ही मिलेगी। इस समय आप 'गुरु गीता' के गेट का व्यवण करें। इस माह आपके लिए 'गुरु प्राण धारण साधना' अनुकूल रहेगी।

मकर

(भी, जा, जी, खु, रु, खो, खो, जा, जी)

प्रेम-प्रसंग आप लेकर उत्साह रहेगा, लेकिन स्थानांतरिक मान प्रतिष्ठा को ओर से लापरवाही न बरतें। सान्तीतिक मामलों में खिच बड़ेगी तथा राजनायिकों का निराकरण होगा। नीकरी पेशा वर्ग के व्यक्तियों को अधिकारियों का विशेष सम्बोध प्राप्त होगा। इंटरव्यू तथा नये कारोबारी मामलों में विशेष सफलता प्राप्त होगी। बंतान पक्ष आपके लिए अनुकूल पिछड़ होगा। जीवनसाधारण ये चला उत्तर रहा वे वार्षिक मानमंद समाज होगा। नये-पुराने अनुबंधों पर विचारपूर्वक कार्य करें, लाप होगा। यात्रा अनुकूलता यह चुनौती रहेगी। इस माह पूर्ण अनुकूलता के लिए 'मातृगी साधना' सम्पन्न करें।

कुम्भ

(बू, जे, झो, झा, झी, सु, झे, सो, झो, झा)

समय आपके लिए आसानीत सकलता बाला चल रहा है फिर भी जल्दताजी में आप कोई कार्य न करें। नये एवं पुराने अनुबंधों पर विचार कर सकते हैं। किसी से लिया हुआ कठा भी चुकाना पड़ सकता है, इसलिए अर्थिक स्थिति में न्यूनता आयेगी। अर्थिक वर्ग अपने धन को व्यारंग व्यवहार करें। धार्मिक एवं मार्गलिक प्रसंगों को लेकर यात्रा योग बढ़ें। किसी भी मामले में जल्दीबाजी न लें अपनी रंजिश को आपसी समझीते से डी निपटाने जरूर प्रयास करें तथा जबालती मामलों की उपेक्षा न करें। प्रेम-प्रसंगों को लेकर नववधानी बरतें। भास्माज में मान सामाज की स्थिति बनेगी।

मीन

(ली, द्वू, व, झ, ले, लो, वा, वी)

यह समय आपके लिए सावधानी के साथ व्यतीत करने का है, यूं तो आप पूर्ण पौरुषता से युक्त हैं लेकिन अधिक उत्साह आपके लिए हापित पिछड़ हो सकता है, इसलिए नये प्रयोग व्यवहार के उत्पीड़न करना न मूलें। जीवनसाधारण का सहायोग तो आपके लिए अनुकूल रहता है लेकिन परिवार की उपेक्षा न करें। राजकार्य में बाधाएं आने की सम्भावना है। निवास से कुछ जनवन की स्थिति है। शानु पद में सावधानी बरतें। धार्मिक एवं मार्गलिक प्रसंगों को लेकर व्यस्तता रहेगी। आपके भवयोग में किसी नियन का रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। पूर्ण अनुकूलता प्राप्ति के लिए 'तांत्रिक शिव साधना' सम्पन्न करें।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

- 9 अप्रैल - वैशाख कृष्ण पक्ष ०८ कालाष्टमी, शीतलाष्टमी
- 12 अप्रैल - वैशाख कृष्ण पक्ष ११ कक्षांशीष एकावशी
- 18 अप्रैल - वैशाख शुक्ल पक्ष ०३ अश्व तुर्सीवा, पश्चिम नयंती
- 20 अप्रैल - वैशाख शुक्ल पक्ष ०५ आदिशंकराचार्य जयंती
- 21 अप्रैल - वैशाख शुक्ल पक्ष ०६ सदगुरु जन्म विवस, श्रीरामानुजाचार्य जयंती
- 23 अप्रैल - वैशाख शुक्ल पक्ष ०८ दुर्गाष्टमी, बगलामुखी जयंती
- 24 अप्रैल - वैशाख शुक्ल पक्ष ०९ सदगुरु शब्दांजलि नवमीपूर्ण विवस
- 26 अप्रैल - वैशाख शुक्ल पक्ष ३ ॥ मोहिनी एकावशी
- 27 अप्रैल - वैशाख शुक्ल पक्ष ५ २ प्रदोष व्रत
- 28 अप्रैल - वैशाख शुक्ल पक्ष ६ ३ श्री नृसिंह जयंती
- 30 अप्रैल - वैशाख शुक्ल पक्ष १ ४ बुध पूर्णिमा

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साथनामक सद्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक कार्य की समर्पयाओं को हल सरल और सटज रूप में समाहित है।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की पार्षिक सदस्यता

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

स्वर्णकिर्णि यंत्र

— क्या आपके जीवन में आर्थिक अभाव के कारण सुनुचित उझाटि नहीं हो पा रही हैं?

— क्या आपके ऊपर प्राच्य: भ्राता का भार लदा ही रहता है?

— क्या आपके पास आद्य का कोई सुदृढ़ सोत नहीं है?

— यह एक आश्चर्यजनक तीव्र प्रभावी तांत्रोत्तर यंत्र है, जो कि प्रत्येक व्यक्ति के घर में स्थापित

करने द्योरथ भाग गया है। यदि इस पर लक्ष्मी पद्मोन ज भी किया जाए और केवल मात्र घर में ही मंत्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त तांत्रोत्तर 'स्वर्णकिर्णि यंत्र' रख दिया जाए, तो आर्थिक उझाटि, रोजगार प्राप्ति, दुकान में बिक्री बढ़ाने व सभी कार्यों में रुक्षायक बड़ी रहती है। इसलिए वृहस्थ जीवन के लिए यह एक श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण यंत्र है।

किसी बुधवार को प्रातः सूर्योदय के ममय यंत्र को जल से स्नान कराकर पोष्ट कर, किसी तथा पात्र ने रख दें, उसका कुकुन, अफन ने पूजन करें और फिर 'ॐ हौं स्वर्णकिर्णिपाय सिद्धाये फट' मन का एक माह तक निल आधा घण्टा बिना नाला के जन करें। एक माह बाद यंत्र को जाल बन्ध में लपेट कर अपनी तिजोरी में उल्लेजन रूपये-पैसे, आशूवण कार्य रखें जाते हैं।

Are mounting debts, poverty, joblessness giving you sleepless nights? Just get the SWARNAAKARSHAN YANTRA and experience for yourself its wondrous money pulling powers. Subscribe to the spiritual magazine in Hindi (with special pages in English), Mantra-Tantra-Yantra Vigyan for a year and get this mantra-energised Tantrik Yantra absolutely free. Placing the Yantra in one's house is enough to ensure financial success, job, business take off and freedom from paucity. For this on a Wednesday at sun rise bathe the Yantra with water. Offer vermillion and rice grains on it. Chant Om Hreem Swarnaakarshannaay Siddhaye Phat for half an hour daily without a rosary for 30 days. After that wrap the Yantra in red cloth and place it in your safe or the place where you keep your valuables.

यह दुर्लभ उपहार तो आप पोर्टेलो का तार्किक सदस्य अपले डिलीवरी मिश्र, रेष्टेदार या दबजल को ब्लाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यह आप पोर्टेलो के सदस्य नहीं है, तो आप सबसे भी तदस्य बलकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में दर्जाएँ पोर्टेलो द्वारा दरपात्र उक्सरों में भरकर हमसे पास मेज के, दोष कार्य हम स्तर से करेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at : —

वार्षिक सदस्यता शुल्क — 195/- डाक खर्च अनिवार्य 30/- Annual Subscription 195/- 30/-postage

सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर — 342001, (राज.)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

Phone: 0291-432209 Fax: 0291-432010

संन्यासियों की तेजस्विता
और अद्रभुत शक्तियों के आधार ये

21.6.99

अन्यास सिद्ध पंचरट्टन

जिनके मात्र धारण करने से ही सिद्धि प्राप्त होने लगती है



हुत कम साधकों को संन्यास पंच रत्न का ज्ञान होगा, मैं इस छोटे से लेख में इन पंच रत्नों के सम्बन्ध में दुलभ, प्रामाणिक और सिद्ध तथ्यों का वर्णन कर रहा हूँ जिससे कि गृहस्थ साधक लाभ उठा सके।

संन्यासी का तात्पर्य यह नहीं है, कि वह जंगल में रहता हो, या भगवे कपड़े पहनता हो अथवा अपनी ही मर्जी से जीवन बिताता हो, अपितु संन्यासी का तात्पर्य यह है कि वे गृहस्थ में रहते हुए भी गृहस्थ की शांशटों से अपने आपको बचाए रख सके, जो निरन्तर साधना की ओर अग्रसर हो, और जिसके मन में यह बलवती इच्छा हो कि मैं अपने जीवन में साधना में अवश्य ही सफलता प्राप्त करूँगा – स्वर्ण विज्ञान, रसायन विज्ञान, आयुर्वेद विज्ञान या किसी भी एक क्षेत्र में पूर्णता के साथ सफलता प्राप्त करूँगा।

संन्यास दिवस क्या है

बण्णीश्वर व्यवस्था में संन्यासाश्रम आयु का वह चतुर्थ भाग होता है, जिसमें व्यक्ति जापने सांसारिक दायित्वों को पूण कर पूर्ण रूप से वैरागी हो जाता है। परन्तु पूर्ण गुरुदेव ने तो गृहस्थ संन्यास के महत्व को ही प्रेरित किया है, अर्थात् परिवार के मध्य पूर्ण प्रेम भाव से रहते हुए भी निरीन्त्र रहना और जिस दिन व्यक्ति के मालस में ऐसा चिन्तन आ जाए, तो वह दिन ही उसके लिए 'संन्यास दिवस' हो जाता है... शास्त्रों की मान्यता है, कि संन्यास दिवस के आवसर पर साधक या शिष्य प्रयत्न करके भी गुरु चरणों में पहुँचे भक्ति भाव के साथ उनके चरणों में बैठे और अगले एक वर्ष के लिए किसी एक साधना या किसी एक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करने की

ज 'अप्रेत' ३५ मंत्र-तंत्र-यत्र विज्ञाव '७३'

आखिर क्या होता है, इन

संन्यासियों और योगियों के पास...?

जिसके बल पर वे एकदम निडर होते हैं, ब्रेबाक होते हैं, उन्हें किसी प्रकार के खतरे से, किसी भी जंगली पशु आदि से लेश मात्र अर्भ भय नहीं होता?

कुछ न कुछ तो होता है अवश्य उनके पास, जिन्हें भले ही सामाज्य व्यष्टि न जानता हो, परन्तु जो संन्यास और गृहस्थ दोनों

में ही समान रूप से वस्त्रल रखते हैं, उनको तो सब कुछ स्पष्ट ही होता है...

'संन्यास पंच रट्टन' ही वे आद्युथ या सिद्धियाँ हैं, जिन्हें गुरु कृपा कर अपने संन्यासी शिष्यों को प्रदान करते हैं जो उसके कंठकाकीर्ण पथ को एक मधुर याक्रा में रूपांतरित कर देते हैं।

प्रतिज्ञा कर। वह गुरु के सामने यह शपथ ले कि मैं यह एक वर्ष आपके घरणों में समर्पित कर रहा हूँ, मेरा इच्छा और आकाङ्क्षा अमुक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने की है, इसके साथ ही साथ वह गुरु से उस जोगीय विद्या की जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न करे।

गुरु तो कोई भी जान या जानकारी शिष्य को देने का प्रयत्न करता ही है, परन्तु गुरु पैसों से खरीदा हुआ गुलाम

ये पंचरत्न स्वतः ही सिद्ध व
चैतन्य हैं, इन पर कोई प्रयोग अथवा
मंत्र जप करने की आवश्यकता नहीं है।
इन्हें तो मात्र धारण कर लेना ही पर्याप्त
है... और धारण करने के लिए कोई
आवश्यक नहीं कि २१ जून अथवा
किसी विशेष तिथि को ही धारण किया
जाए।

यह तो संन्यास की भाव भूमि है,
जिस दिन मन में इन विद्या आभूतियों को
गुरु चरणों में समर्पित करते हुए धारण
कर सकते हैं।

नहीं है, वह इस बात को देखता रहता है कि शिष्य में कितनी परिवर्तनता या कितना स्नेह-सम्बन्ध आ पाया है। वह जितना ही ज्यादा गुरु के प्रति समर्पित होगा, वह जितना ही ज्यादा गुरु साधना में लीन होगा गुरु उसनो ही तेजी के साथ उसे उस ज्ञान को देने का प्रयत्न करेगे, इसके लिए पूरा प्रयत्न शिष्य की तरफ से ही होता है।

और यदि गुरु के द्वारा तक पहुंचना संभव न हो या कुछ ऐसी परिस्थितियां आ जाय जिसकी वजह से धारा न कर सके, या गुरु से प्रत्यक्षतः न निल सके तो अपने धर्म में ही गुरु चित्र के सामने स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर बैठ जाय और पूर्ण विधि विधान के साथ गुरु पूजन करे, और हथ में जल लेकर यह दृढ़ संकल्प करे कि मैं यह पूरा वर्ष गुरु चरणों में लीन रहता हुआ अमुक साधना में पूर्णता प्राप्त करने के लिए ही व्यतीत करूंगा और अमुक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करूंगा।

इसके साथ ही साथ जब वह ऐसा दृढ़ निश्चय कर लेता है तो उच्चकोटि के योगी, संन्यासी और उसके प्रिय गुरु का भी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है, जिससे वह अवश्य ही अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर लेता है।

वह जीवन ही क्या जो गुमनामी के साथ व्यतीत हो जाय, उस जीवन का मकसद ही क्या, जिसके द्वारा आप हजारों लोगों का कल्याण न कर सके, वह जीवन जीवन लहा ही नहीं जा सकता, जो पूरे देश में प्रसिद्धि प्राप्त न कर सके, जो अपने जीवन में अद्वितीय न बन सके, और जो साधना

के क्षेत्र में पूर्ण सफलता न प्राप्त कर सके।

यह दिवस 'बृह शंकल्प दिवस' है, मनोयोग पूर्वक पूर्ण निश्चय का दिवस है, मन के विन्तन और आत्मलोचन का दिवस है। यह दिवस इस जात का साक्षी है, कि मैंने अपने जीवन में अब तक क्या प्राप्त किया है, और मुझे क्या प्राप्त करना है, मैंने अब तक जो जीवन बिताया है, उसका क्या प्रयोग रहा है, और मुझे इस एक वर्ष में जीवन की पूर्णता के लिए क्या कार्य, क्या साधना सम्पन्न करनी चाहिए, और यदि ऐसा आत्म विश्लेषण शिष्य वृद्धता पूर्वक कर लेता है, तो यह विन उसके लिए परिवर्तनकारी और सीधान्यशाली होता है।

संन्यास सिद्ध पंच दर्शन

उपर टिप्पणी में संन्यास सिद्ध पंचरत्न का उल्लेख आया है, साधना में या जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए संन्यासी इन पंचरत्नों का प्रयोग करते हैं, और इसीलिए वे वीर्यायु होते हैं, इसीलिए उनका शरीर स्वस्थ, सौन्दर्ययुक्त और अत्यन्त सुन्दर बना रहता है, इसीलिए हजारों लाखों भक्त और व्यक्ति उनके चरणों में दूषक रहते हैं, और इसीलिए वह अद्वितीय व्यक्तित्व बन सकता है।

गृहस्थ साधक भी पंचरत्नों का प्रयोग कर सकता है, और इसके माध्यम से वह अपने जीवन में प्रत्येक वृष्टि से पूर्णता सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है।

१. सिद्ध कंकण

यह अभूतों के आकार का महत्पूर्ण कंकण माना गया है, जिसे संन्यासी अपनी उंगली में धारण किये रहते हैं, इसके माध्यम से उन्हें अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती रहती है, एक प्रकार से देखा जाय तो उनके जीवन में कठिन या असंभव नाम की कोई चीज़ नहीं होती। प्राचीन समय से ही सन्यासियों को सिद्ध कंकण पहिनने की सलाह दी गई है, जिससे कि वे अपने जीवन में निश्चिन्त और निर्भीक हो सकें, वे अपने जीवन में अंगे बदल सकें, और सफलता प्राप्त कर सकें।

इसके निर्माण में राङ्गा, शीशा, जस्ता, चुंबक पत्थर अथवा सिद्ध धातु में से किसी एक धातु को कूट पास कर कपड़े से छान कर उसकी पिस्टी बना लेना चाहिए और फिर इसे गूलर के दूध में धोंट कर खूब कूटना चाहिए, कूटने कूटते जब इसमें से तार निकलने लगे, तब उसे अग्नि में जारण कर उसे चिकना और कड़ा बना देना चाहिए और उस गर्म तार की

मुद्रिका बनाकर जब वह लाल सुर्ख हो, तब उसे जागत पारे में डुबो कर रिहर्द बना लेनी चाहिए, इसी के गृन्धों में सिल्ह कंकण कहा जाया है, यह अपने आप में अद्वितीय और दुलभ होना है, और प्रत्येक संन्यासी के लिए तो एक प्रकार से अनिवार्य है ही, प्रत्येक साधक के लिए भी जरूरी है।

२१ जून अध्याय किसी भी शृंग द्वारा इस कंकण को अपनी उंगली में धारण कर लेना चाहिए जिससे कि साधना के क्षेत्र में उसे निरन्तर सफलता प्राप्त हो सके, ऐसा कंकण निरन्तर शरीर को स्पर्श किये रहता है जिससे शरीर में व्याबर विशुद्ध प्रवाह बनी रहती है, शरीर रोग रहित, सुन्दर, आकर्षक और अद्वितीय बन जाता है, और यदि श्रद्धापूर्वक इसे धारण किये रहे, तो उसके जीवन के प्रत्येक कार्य सफल होते रहते हैं। एक प्रकार से देखा जाय तो साधना और सिद्धि के लिए यह अत्यन्त महान्वपूर्ण और दुर्लभ कंकण कहा जाता है।

तंव गृन्धों में यह बताया जाया है कि गृहस्थ को यदि अपने प्राण प्रिय है, अपना शरीर प्रिय है तो उसे यह कंकण भी उतना ही प्रिय होना चाहिए क्योंकि इसी के द्वारा वह प्रत्येक कार्य में सिद्धि और सफलता प्राप्त करने में समर्थ एवं सफल हो पाता है।

न्यौठावर - 330/-

२. सिद्ध जल कड़ा

हकीकत में देखा जाय तो इसको 'योगी कड़ा' या 'संन्यासी कड़ा' कहा जाता है। गोरखनाथ ने इसे जल कड़ा या जलमुद्रा कहा है। अपने हाथ को कलाई में संन्यासी लोग इस प्रकार का कड़ा धारण किये रहते हैं।

संन्यासियों के लिए यह गृहस्थ व्यक्तियों के लिए यह

वह जीवन ही क्या जो गुमनामी के साथ व्यटीत हो जाय, उस जीवन का मक्सद ही क्या, जिसके द्वारा आप हजारों लाखों लोगों का कल्याण न कर सके, वह जीवन जीवन कहा ही नहीं जा सकता, जो पूरे देश में प्रसिद्धि प्राप्त न कर सके, जो अपने जीवन में अद्वितीय न बन सके, और जो साधना के क्षेत्र में पूर्ण सफलता न प्राप्त कर सके।

अ. 'अप्रैल' 99 मंत्र-तत्त्व-यत्र विज्ञाव '75'

कड़ा पूर्ण सौभाग्यशाली माना जाया है। ऐसे कड़े को वे हवय की सात परतों में छिपा कर रखते हैं, कुछ योगी इसे अपने हाथ में धारण भी कर लेते हैं।

इसके माध्यम से गृहस्थ पर किसी प्रकार का मारण-मोहन या वशीकरण नहीं हो पाता। एक प्रकार से वह निर्भय और निश्चिन्त होता है। यदि गृहस्थ भी इस कड़े को धारण करता है, तो उस पर किसी प्रकार की तांत्रिक क्रिया सम्पन्न नहीं हो पाती। भूत-प्रेत पिशाच आदि उसका कुछ भी नहीं बिगड़ सकते। वह जहाँ कहीं भी रहता है, शत्रुओं से पूर्णत सुरक्षित रहता है। शत्रु अपने आप परासन होते रहते हैं और किसी भी प्रकार से शत्रु ऐसे व्यक्ति पर न तो हाथी हो सकते हैं और न उसके शरीर को तुकसान पहुचा सकते हैं। ऐसे व्यक्ति को किसी प्रकार की आधा या अझ्यन आ सकती है।

कड़े के निर्माण में तीन धातुओं को परस्पर मिला कर उसके ऊपर चैतन्य पारे का लेप किया जाता है, और फिर उसे गल मुद्रा में बांधा जाता है क्योंकि धातु पर पारे का लेप करना अत्यन्त कठिन है। इस प्रकार से जल बन्धन कर फिर उसे अन्नी ताप दे कर कड़े को पूर्ण सक्षम बनाया जाता है। यदि इसके निर्माण में योद्धा सी भी गलती होती है तो सरा रसायन चौपट हो जाता है और वह कड़ा किसी लायक नहीं रहता, यह सारी क्रिया कठिन है, और इस प्रकार का कड़ा निर्माण करने पर काफी व्यय आ जाता है। मगर इतना व्यय करने के बावजूद भी यह कड़ा बन जाय तो सौभाग्य ही समझना चाहिए।

संन्यासी इस कड़े को धारण करते हैं या शोली में रख देते हैं। गृहस्थ इस कड़े को पहिन सकते हैं या सुरक्षित रख सकते हैं। बास्तव में ही यह जल कड़ा सौभाग्यवायक और श्रेष्ठ माना जाया है।

न्यौठावर - 330/-

३. सिद्ध वज्रघण्ड

यह ताबीज के आकार का अत्यन्त दुर्लभ रसायन प्रयोग होना है, जिसे प्रत्येक संन्यासी अपने गले में धारण किये रहता है। आगे के योगीयों ने इसको ग-डा भी कहा है। इसके माध्यम से संन्यासी को कई प्रकार की सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। इसको धारण करने के बाव यदि साधक योद्धा तांत्रिक साधना सम्पन्न करे, तो उसे निश्चय ही शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

उन्नुभव में यह आया है कि वज्रघण्ड जहाँ साधक को पूर्ण सुखदा प्रवान करना है, सेकड़ों शत्रु मिल कर के भी

उसका किसी भी प्रकार से कोई अहित नहीं कर सकते, किसी भी क्षेत्र में शाशु परास्त रहते हैं। साथ ही साथ इस वज्रदण्ड की यह विशेषता होती है कि कुछ सिद्धियाँ तो उसे स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। भूत-प्रेत सिद्धि या भूतों को वश में करना, उनसे मनचाहा कार्य करवा देना, तीव्र और उग्र साधनाओं को सिद्ध करना, योगिनियों को वश में करके उनसे मनचाहा द्रव्य प्राप्त करना, आदि साधनाएं थोड़े से प्रयत्न से ही सिद्ध हो जाती हैं।

इस वज्रदण्ड के द्वारा ही संन्यासी अपने भ्रतों के कई कार्य सम्पन्न कर लेता है और वह सिद्ध माना जाता है। इस प्रकार के वज्रदण्ड के निर्माण के लिए निवडण तथा शूल को मिलाकर एक गोल गोली बनाई जाती है और अस्वत्थ के सफेद दूध में इस गोली को धोट कर उसे वज्रदण्ड के रूप में सिद्ध किया जाता है। फिर इसे ताबीज में भर कर धारण किया जाता है। इस सारी क्रिया पर भी काही अधिक व्यव आ जाता है, ऐसा वज्रदण्ड कोई भी पुरुष या स्त्री धारण करता है। जो जीवन में पूर्ण सफलता चाहते हैं, उन्हें इस प्रकार का वज्रदण्ड अवश्य ही धारण करना चाहिए।

न्यौदावर - 330/-

४. विश्ववेदी सुदृढप

संन्यासियों में यह इसी नाम से पुकारा जाता है और यह अंगूठी के आकार का होता है, परन्तु गुरु गोरखनाथ ने कहा है, कि जो पूरे संसार पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं, जो पूरे संसार पर शक्ति करना चाहते हैं उनको यह विश्ववेदी सुदृढप धारण करना चाहिए।

इसमें वशीकरण का अन्यतम विशेषता होती है। उच्चनकोटि के गृहस्थ साधक या संन्यासी इसे अंगूठी में धारण किये रहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि सामने बाले किसी स्त्री या पुरुष की नजर इस मुद्रिका पर पड़ती है तो वह पुरुष स्वतः वश में हो जाता है, या यदि इस अंगूठी का स्पर्श जिससे भी हो जाता है, वह वश में बना रहता है और जीवन भर उस संन्यासी या धारण करने वाले व्यक्ति की आशा मानता रहता है।

एक प्रकार से देखा जाय तो यह सम्मोहन अथवा वशीकरण मुद्रिका है। इसके निर्माण में बड़े दूध में पारद को बांध कर फिर उसमें धातु का जारण किया जाता है और उसे अन्ने वेष्ठ कर उसे मुद्रिका का आकार दिया जाता है। इस प्रकार यह मुद्रिका सिद्ध हो जाती है और इसमें दूसरों को

सम्मोहित करने या वशीकरण करने की अद्भुत क्षमता ज्ञाती है।

ऐसा साधक विश्व में कहीं पर भी असफल नहीं होता और सम्पूर्ण विश्व को अपने वश में करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है। साधक स्वयं इस प्रकार की मुद्रिका तैयार कर अथवा कहीं से भी प्राप्त कर इस विवास को धारण कर जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

न्यौदावर - 330/-

५. समुद्र सिद्ध कायाकल्प कंकण

इसे 'गोरख कंकण' भी कहा जाता है, किसी पात्र में समुद्र का जल भर कर आंच पर रख कर उसमें धूर-धैरें मधु का जारण किया जाता है। जब वह मोम बन जाय तो उसमें पारे का संस्कार कर उस मोम को त्रिधातु पर लगेट कर चौबीस घण्टे उसे समुद्र जल में ही पकाया जाता है, इससे इस प्रकार का कायाकल्प कंकण तैयार हो जाता है।

इसके धारण करने से स्वतः पूरे शरीर में परिवर्तन होता रहता है और यदि संन्यासी को या साधक को किसी प्रकार का रोग हो, तो वह निश्चित ही रोग समाप्त हो जाता है।

शास्त्रों में यह बताया गया है कि इस कड़े में रोग मुक्त करने की अद्भुत क्षमता है, यदि इस कड़े या मुद्रिका को रात भर पानी में रख कर सुबह वह पानी रोगी को पिला दे तो रोगी का रोग दूर होना शुरू हो जाता है।

इसमें तो कोई दो राय नहीं कि इसे धारण करने वाले व्यक्ति के शरीर के रोग तो समाप्त होते ही हैं, उसकी वृद्धावस्था समाप्त होने लगती है, सिर पर काने और घने बाल आने लगते हैं, आंखों की रोशनी और शरीर में पूर्ण पीसुव के साथ-साथ वह एक ऐसा व्यक्तित्व बन जाता है, कि सामने वाला देखना ही रह जाता है।

एक प्रकार से धूर-धैरें पूरे शरीर का कायाकल्प हो जाता है। बास्तव में ही यह अपने आप में दुर्लभ और सिद्ध 'कायाकल्प मुद्रिका' कही जाती है। इसे गृहस्थ साधक अथवा संन्यासी धारण किये रहते हैं, जिससे उनका शरीर दर्शनीय चमत्कारिक और आश्चर्यजनक हो जाता है।

ऊपर संन्यासी पंचरत्नों का विवेचन किया गया है। इन पांचों दुर्लभ वस्तुओं से ही संन्यासी सम्पूर्ण विश्व में सम्मान, धश, प्रसिद्धि और पूर्णता प्राप्त करने में समर्थ, सफल हो पाते हैं। इनको बिना किसी कर्मकाण्ड के मात्र धारण किया जाता है।

न्यौदावर - 330/-

माताजी गुरुजी में श्रेद नहीं



धन्द्र गुरुधाम में शिष्यों के साधनार्थ एवं गत्वा साधना हाल है, जिसमें पञ्चानन्द सद्गुरुदेव के इतनी आधिक सत्त्वमें प्रवृत्तन हिए हैं, वीक्षण प्रदान की है, और जहाँ शिष्यों ने करोड़ों करोड़ों यंत्र निपट कर दिए हैं, कि उम्र छाल के अन्दर प्रविष्ट होते-तुरन्त ही समयमें एक शान्ति यो आ जाती है। यह उस स्थान की बीतन्यता का प्रभाव है। ८ अप्रैल १९७५ लगभग १०.०० बजे प्रातः बैला वा समयरहा जोगा। गुरुधाम में देवारत शिष्यों ने आज साधना कदा को विशेष रूप से सजा रखा था। पञ्चानन्द माताजी का जन्म दिवस जो था आज। गुरुधाम में माता जी का जन्म दिन भी उसी उल्लास व उपेन के साथ मनाया जाता है, जैसे कि गुरु जन्म दिवस २५ अप्रैल। शिष्यों ने बन्दनीय माताजी के रवागतार्थ भजन-पूजन आदि का आयोजन किया था, परन्तु शद्वृक्षदेव (जो उस दिन कार्यवश दिल्ली में थे) के अनुपरिणीत समी को खल रही थी।



आड़ी देर में माताजी साधना हाल में चल कर आईं शिष्यगण उन पर पूज्य वत्त कर रहे थे। माताजी के उपस्थित होते ही शिष्यों में एक प्रसकृता की एक लहर आ गई थी।

और यह उमग बिल्कुल दैसी ही थी, जैसी पूज्य गुरुदेव के आन से अनुभव होती थी। माताजी के चलने का तरीका भी बिल्कुल सद्गुरुदेव की तरह सिहवत लग रहा था, माता जी आसन घर लिंगनमान रहीं, अप्पों के मन में स्पष्ट सन्मान ही रहा था, कि गुरुदेव ही विराज रहे हैं। माताजी के चड़े पर एक शरिमा था, बार-बार ऐसा लग रहा था, कि माता जी नहीं ओपतु सद्गुरुदेव ही उपस्थित है।

परम पूजन के बाद माता जी ने भजन सुने। कार्यक्रम के पूर्व ही वर्षा चली थी, कि माता जी की अद्यनी तौर-तरीके परन्द नहीं हैं, सम्भवतः वे 'हेपी बर्थ डे' बाला जीत सुनना प्रसन्न न करे। इस भावना से बहस्त होकर शिष्यों 'बाल्यादिन मुबारक' कहते हुए हिन्दी में भजन गाए। इसके लक्ष बाद ही जब माता जी ने 'हेपी बर्थडे' गाने को कहा, तो सभी की प्रसन्नता का लिकाना न रहा। वे सोच रहे थे, कि यह तो पूज्य सद्गुरुदेव को परन्द था, परन्तु माता जी ने केस इसकी फरणाइश की, माताजी के स्वर में गुरुदेव की मात्र भूमिका झलक रही थी। इस बात का सभा अनुभव कर रहे थे। तभी माता जी ने जैसे सबके माने उठ रहे भावों का वढ़ा लिया हो, उन्होंने सबका रामबोधित करते हुए कहा— 'माता जी और गुरुजी ये कोई फ़क़े नहीं हैं, गुरु जी ही माता जी हैं, और माताजी ही गुरुजी हैं। ऊक वाक्य में इतना तेजाविता था, कि यह बात सोड़े हुए में उतर रही थी।



ठीक इसी दिन यानि ८ अप्रैल ६.७ को पूज्य गुरुदेव दिल्ली में उपस्थित थे। नोआपर में नो इसका अद्यन माताजी उपस्थिती में हुआ। परन्तु दिल्ली गुरुधाम में शिष्यों की माताजी अनुपरिणीत खदूक रही थी। जाधपुर में जिस प्रकार पूज्य सद्गुरुदेव का बड़क, अनुशासनप्रयत्न और संयोग रूप विषयों को अनुभव करने का मिला है, वही दिल्ली में गुरुदेव का लौलामय, अनन्द स्वरूप प्रलूब हुआ है। टेबल पर माताजी का बथडे केक रखा हुआ था। सद्गुरुदेव ने केक को काटते हुए यही कहा था— 'केक माताजी काटे या गुरु जी एक ही बात है, गुरु जी और माता जी में कोई भेद नहीं है, माताजी की ओर से तुम सबको आशीर्वाद।'

ये दोनों सामरण्य एक ही दिन के हैं, और दोनों में ही शिष्यों के सामने एक ही बात पूछ डेकर सामन मार्ह, कि गुरु जी ही या माता जी, इककोष अप्रेल हो या आठ अप्रैल, दोनों ही शिष्यों के लिए समान हैं।

पिता और माता योनों ही तो एक दूसरे के पूरक हैं, गुरुदेव ही या माताजी, शिव ही या शक्ति— इन बोनों में जो साधक भेद करता है, उसके समान अज्ञानी कोई नहीं होता— तो उस विन सम्भवतः इन बटनाजीं से सद्गुरुदेव यही शिक्षा दे रहे थे।

गुरुद्वारा विषयी

दिसम्बरी में दो दिनों तक और अर्द्धाम तीव्रांति
समय के दौरान गुरुद्वारा विषयी -
पर ही दिल्ली साधनात्मक प्रणाली

समस्त साधकों एवं शिष्यों के
लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके
अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली
'सिंहासन' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में
ये साधनाएं पूर्ण विषयी-विद्यान के साथ
सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन
शाम 5 से 7 बजे के बीच सम्पन्न होती
है और यदि अब व विश्वास हो, तो
उसी दिन से साधना सिद्धि का अनुमत
भी होने लगता है।

साधना में माग लेने वाले साधक
को यंत्र पूजन सामग्री आदि सख्त द्वारा
निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्टा और
फूलपात्र अपने साथ में लाए या न हो तो
यहाँ से प्राप्त कर ले)।

दिनांक 24.4.99 बनाकर स्वर्ण लकड़ी प्रणाली

यदि वैष्णव और ईश्वर्य का एक ही स्थान पर पूर्ण विस्तार देखना हो
तो, इन्द्र के दरबार के अलावा कोई दूसरा ऐसी जगह नहीं है, जहाँ इन्हाँ
विपुल ऐश्वर्य विश्वरा पढ़ा हो। स्वर्ण आभृणों, रत्न-माणिक्यों से आभृणित
देवगण, यौवन से परिपूर्ण अस्सराएं, मुन्द्र नन्दन कानन और भौतिक दृष्टि
से छर प्रकार की पूणीता का नाम ही स्वर्ण है।

स्वर्ण के इस ऐश्वर्य के पाठे गहरा प्रतिपादित एवं को
गई स्वर्ण लकड़ी साधना का। इस साधना द्वारा साधक अपने जीवन में
विपुल ऐश्वर्य को निम्रण दे सकते हैं। लकड़ी और स्वर्ण लकड़ी की कृपा
साधक पर आजीवन बरसती है, किर अमाव या दरिंद्रिता उसके जीवन में
रह नहीं पाना है।

इन नियमों के अनुसार आपने किसी भी विषयी साधना का लिए विषयी साधना कैसे ले सकते हैं

1. आप आपने नियंत्री दो मित्रों अध्यवा रखनां को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुद्वारा में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में माग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक प्रयोग शुल्क ₹. 225/- है, परन्तु आपको मात्र ₹. 438/- ही जमा कराने हैं। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र, गुरुद्वारा आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं वश आपने किसी एक पत्रिका के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में माग ले सकते हैं।
3. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को अपने परम्परा के इस पावन साधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पावन, पुरीत एवं पूर्णदारी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रधास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में इश्वरीय विनाश, साधनात्मक विनाश आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही मज़ीक है। उपरोक्त प्रयोग तो रार्थथा निःशुल्क है और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तौल सकते।

'अप्रैल' 99 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '78'

दिनांक २५.४.७९ प्रधान वल्लभा चिन्हिती प्रयोग

विषय तरह अन्यरा एक वेद योगि है। इसे प्रधान किसी भी एक योगि है। उन्होंने वर्ग की तुलना में किसी भी को साझना का प्रचलित है, बद्यपि ये आधिक गोप्ता ये सिद्ध होने वाले हैं। जब्तक नहीं अन्यरा को रिख्य करने के लिए नाधक को ही प्रयोग करना पड़ता है, वहाँ इसके विपरीत किसी भी व्यय इप बात के लिए प्रथनरत होती है। कि उन्हें मृत्युनोक श्रेष्ठ साधना अन्यजन पुरुषों का साहचर्य प्राप्त हो सका। ऐसे नाधकों का साहचर्य प्राप्त कर के रखने अपने को धन्म अनुमद करती है, और अपने साधकों को जानने में रूप, रस, योग्य, अन् वेष्वर्य, माधुर्य नभी कुछ प्रदय करती है। ऐसों ही एक किसी का नाम है प्राण वल्लभा।

दिनांक २६.४.७९ तंत्र व प्रेत वादा नियामण हनुगान प्रयोग

जीवन में बल, बुद्धि, नाइम, कमठता, तेजस्विता, और और संकटों पर विनय प्राप्त कर लेने का नाइम और सब कुछ अवश्य उन्नाह का गिरा जुना रूप यदि कही है, तो उसे हनुगान कहते हैं। जीवन में सैकड़ों बाधाएं परेशनियाँ, अड़वने भा जाती हैं, और प्रण-प्रण पर शमु हम पर वार करने के लिए तेयार खड़े रहते हैं। यह अवश्यक नहीं है कि छुरा सम्मने से ही भोका जाए, आज कल लोग छोटे-मोटे सहक छाप तंत्रिकों द्वे कुछ ऐसे तंत्र प्रयोग करा देते हैं, जिनसे जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। घर में कालक, आए जिन एक्सोडेंट, चोट लगना, खर्च का तेजी से बढ़ जाना, घर में जोगों का बीमार रहना, मन में उदासी व निराशा की भावना — ये सब अप अप कराए गए किसी तंत्र प्रयोग के कारण भी हो सकता है। इनके अलावा अनेजाने में भी हमसे कुछ दोष हो जाता है, जिसके कारण भशरीरी आत्माएं हमारे मन्त्रर निवास कर लेती हैं, जिनके प्रभाव से जीवनी शक्ति समाप्त हो जाती है।

हनुगान साधना द्वारा ऐसा कोई भी बाधा टिक नहीं सकती है, क्योंकि इस साधना के बाद हनुमान सदैव अपने नाधक की प्रतिष्ठा रक्षा करते हैं।

* दीक्षा अन्न के तुल में एक प्राचीपिण्ड का प्राप्त है। सफलता की लकड़ीयों को प्राप्त कर लेने का, दीक्षा के उत्तरान को, आपसीं को मृत कर लेने का, जीवन में अनुलूपीय बल, साहस, गौरुष एवं शीर्षप्राप्त कर लेने का, सध्यार्थी जीवन का लक्षण दीक्षा की।

* एक प्रदत्त शत्रुपात्रों का दृष्टिक्षण विसर्जन के लिए हेतु बहुदीन प्राप्त करता है। उनमें लिपुष्ट धापन कर लेता है, जीविके वह गोदानों और अपेक्षा धापन करते ही उक्त लक्षण देता है।

* दीक्षा में नाव दीर्घ वाले सभी साधकों का जल के आग्रह और विकार के लिए उपग्रह विशेष शत्रुपात्र प्राप्त किया जाता है। यह दीक्षा इन विवरों को साझा कर देता है। विवरों को साझा कर देता है। विवरों के उपरावत एक उपर्योगी गंभीर प्रदान किया जाता है।

सम्पर्कः सिद्धान्तम् 306 गोहाट एच्चरेव, गोतमपुरा, नई दिल्ली - 34, फोन 011-7182248, फैक्स 011-7196700

किन्हीं पांच व्यक्तिकों
को आधिक नवन्य बनावक
उनके पास विज्ञान कर
उपहार दरबन्ध पर वीका आये
नि-मृत्युक प्राप्त होती है।

शक्तिपात्र वक्त दीक्षाएः
महाकाली शिवि दीक्षा

22.00
=Rs. 1125/-

वह नीव प्रतिष्पदा का युग है। अप बाहू या न जाहं प्रियदर्शकारी नन आपक जीवन की शान्ति, नीलार्द भगा करने का प्रयाप्त करते भी रहते हैं। एक दृष्ट प्रसूति वाले व्यक्ति की अपेक्षा एक स्त्रील और रान्न मृत्युनि वाले व्यक्ति के लिए अपमान तिरन्कार के जार मूले ही रहते हैं। आज वना एक भी व्यक्ति नहीं है, जिसका कोई शक्ति न हो। और जार म नावन किसी सानव नीवन भार की अनुत्ता से ही नहीं वसन रोक, शोक, व्यापि, दोऽग्रा भी मृत्यु के शक्ति दीर्घ जाहने हैं, जिससे व्यक्ति हर क्षण वसन रहता है। और उनसे हुटकारा पाने के लिए व्यक्ति हमें टीटके जारि के वक्तव्य करने के भयन समय और धन दोनों का ही व्यय करता है, परन्तु यिन गो जार्जाओं में हुटकारा नहीं मिल पता।

महाकाली शिवि दीक्षा के माध्यम में व्यक्ति शक्ति को जिसी एवं परामर्श करने में वशम हो जाता है, चाहे वे शक्ति आपवन्नरिक ही या बाहरी, इस दीक्षा के द्वारा वह उन पर विनय प्राप्त कर लेता है, क्योंकि महाकाली शक्ति ही मात्र वे जनि व्यवस्था है, जो शक्ति का संठार कर अपने भक्तों को रक्षा करने प्रश्ना करती है।

उद्विरस यात्रा जारी है

“जित पूजत प्रभु पांचरी प्रीति न हृदय समाति”



गवदकुमा जब भी दूसी है तो वह
जमोम ही जाती है। प्रभु या तो वरदान
देते हों नहीं हैं और जन देते हैं, तो
शनचाह छो सब कुछ प्राप्त हो जाता है। अन्धरसरव का
पञ्चमुत्तमक देह का त्याग किए अनन्दराव आठगाहने
हो जाए है, लेकिन इन आठ महिमास में चेतना को जो
लहर ब्याप्त हुई है, वह जलवनीय है। ऐसा लगता है,
कि शिष्य और साधक अब पहिलान गए हैं, कि उनके
सर्वगुरुरव वास्तव में यगवान ही ये। आज जो
अनुभूतिमाँ और प्ररणा प्राप्त हो रही है, भक्ति साधना
ओर दीक्षा का त्वरित फल प्राप्त हो रहा है, वह वर्णन
में फैर है। ब्रह्मेक सम्प्रक चकित, विष्णु पवं आग्नेयीन है। प्रत्येक शिष्य आज यह जान गया है, कि उसके मजबूत कंडों पर^१
जिम्मेवारी है और उस निशाना ही है।

श्रीकृष्ण काल में जब वसुण देव ऊर्जा धूक कृपालु हो गए और उन्होंने गोवधन क्षेत्र में मूरलाधार वर्षा प्रारम्भ कर दी, गेव
इक्षु लग तो सारि निवासी श्रीकृष्ण वा श्रीपाठे ने आए। तब मनवान श्रीकृष्ण ने अपनी ताजी अंगुली पर गोवधन पवत उठा लिया और
सारे निवासियों को कहा, कि मैं अकला यह ताजा नहीं कर सकूँ। तुम सब नाम अपनो-अपना लालिया लेकर आओ। और इस पवत को
ऊंचा उठाए रखें मैं खहयान या क्याह जाकियों के बल पर कभी पर्वत को उठाया ना सकता है? यह तो यगवान को ही लीला ही।

दीक्षा रसा ही आज सार शिष्यों के बीच हो रहा है, एक शिष्य संकल्प करता है, कि शिविर होना चाहिए और सद्गुरुदेव की
कृपा से सारे वार्ष सहन ही द्वान लगते हैं। परवर्ग माझे में द्वापुरी, मद्भाष्टु से यह शृंग काँच प्रारम्भ हुआ और जो आठ दिन कावरम
इस महिने में हुए उनमें शिष्यों का खहयान अपनाया, अमरुचि, संकल्प संबुद्धि इस बात को देखा रहा था, कि अन्धरसरव वर्षी
बहानाड में साइकों के लकड़ में ही तो विश्वासन है।



१३-१४ प्रज्ञवर्दी, महाराष्ट्रायांत्रिकालिन, बहायुर्दी, महाराष्ट्र

हर बार महाराष्ट्रायांत्रिकालिन शिविर बैठना ज्योतिःशान पर द्वाना था। इस बार गुरु कुमा में यह नागपुर से १०० कि.मि. दूर
बहायुर्दी, जिला वेदपुर में स्थित है। यह जब विवर स्थान है, जहां बण गण के किनारे मार्कंडेय व्रीष्णे ने नपस्या को था। सप्त दो
हजार का नाम बहायुर्दी पढ़ गया। ११ कर्त्तव्य की राशि ६५.०० बजे गव गुरु त्रिमूर्ति श्री नन्दकिशोर जी, श्री कलाश चन्द्र मी, श्री
अरविन्द जी नागपुर लगाई उड़ पर पहुँचे तो चहाहवाले लोग सद्गुरुदेव की नव नियकाल करते हुए स्वागत के लिए तत्त्व थे। बार-
बार गलामेंटी जपघोष हो रहा था, यि जब तक नूरज चार रहेगा, गुरुवर लेगा नाम रहेगा।

नामपुर में एक छोट भा. व्यवसाय प्रभावित
प्रभावित थी। हमा प्रधिकत के बहु सब गोपा था।
जो जाना बड़ी लाइ आवश्यक था, कि उद्योगवाले न
उमे एक अमर कहा था, कि मैं उमरहारे यहां अवश्य
जाऊँगा। युक्त कभी भी अपने वचों को कभी भी
मिथ्या नहीं होने देते। हमा प्रधिकत छाट भाज-उल्लास
ने अवश्यकता दी थी। बर बड़ा ही या न हो, मन
और भ्रात विश्वाल होने चाहिए। वहोंने स्वयं सारोह
के बाद ब्रह्मपुरी के लिए धारा प्रस्तुत हुई। शहर में
दो नीन लग हुए थे जो नैनामर किया। चन्द्रपूर जैव
जले में शिष्या जीर संघरकही, यह नामकर प्रसवदाता



हुई। शहर की २-०० बड़न ब्रह्मपुरी प्रस्तुत, जो नाम के द्वार पर ही लीकड़ी भाष्म उत्तरिता थी और फिर गुलबन के रुप ने कुछ भी उत्तरित
नहीं पहुँचे। जब शिष्य साथ गे हों, तो विन और सर का लोहे भ्रव नहीं होता, और वह ब्री कोह थकावट अनुभव होती है। विष्णु के
इष्य से लघु और उल्लास में उठाह ने रहे हैं।

२ फृजवरी को पूरे नगर में शोणा यात्रा निकली। रघुन-व्यापान प्रधिकत कहा थे, भूर चैमांद का तिनक, और पुष्पादार अविन
किए, भूत्य सुसंवित वाहन पर गुरु विमुति विराजमान थे, ऐसा जग रहा था, कि सदृस्तेव पूर्वकरों हुए, वहोंने साधात बड़े आशीर्वाद
प्रदान कर रहे हैं।

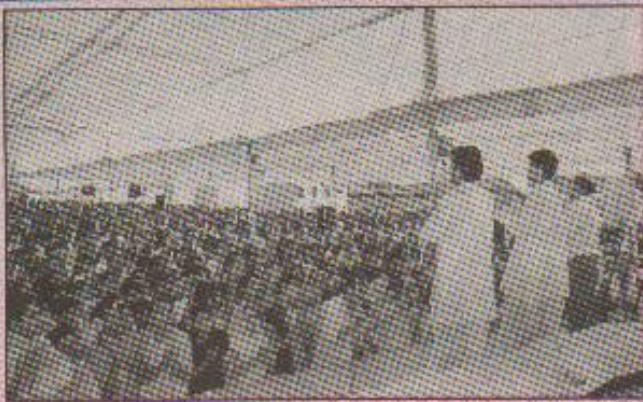
३ फृजवरी को प्रात, महायात्रानि शिविर प्रारम्भ हुआ, जहां भूदेव थो न दक्षिण जी। भाष्यकों को प्रवचन दिया कि
भगवान शिव किसने ब्रह्मपत्र है, जो भूषण भूषित रे व्यवसाय द्वारा जाते हैं, वे भूष्यन द्वे तिनकों भाधना ले दिया जाए तो कुछ नहीं लिगाड़ मिलता
है। तीव्रन को गृह्युनामी बनाने के लिए शिवायिक अविन भावशयक है। शिष्य के लिए शहद और समर्पण भावशयक है और यह क्रष्ण/
अंग अस्त्र नहीं होनी चाहिए, अपितु बुद्धि और विवेक से नियन्त्रित होनी चाहिए।

युज्वेव अरशिवन जी ने साथकों को 'महायात्य विष्य दीक्षा', 'वैतन्य दीक्षा' प्रदान का लोप उन्ह अन्त नीवाम में पूर्ण स्वल्पता
द्वारा आधीरोग दिया। उन्होंने कहा, कि युक्त तो जान और अपने का स्वरूप होता है। जब युक्त संत्वय साधना और तपस्या निरंतर
सम्पन्न करते हैं, तभी वे कुछ देने में समर्थ होते हैं।

गहोश्वलात्रि के शुभ अवसर पर साधकान पापवेशवर्ग शिवालिष पर अधिष्ठेक प्रारम्भ कुमा, नियन्त्रित पूर्ण गुरुदेव थी केलाश
चन्द्र जी ने कहा कि ब्रह्म में नियन्त्रित तत्त्व स्थापित होना चाहिए और साधना के माध्यम से युक्त जन्म के वाही का निवारण किया
जा सकता है। उसके राष्ट्र ही उन्होंने '११ किलो के प्राण अविनित शिवालिष पर अधिष्ठेक प्रारम्भ किया थी और योगी नाथकों ने उपन
मध्यन पापदूर्व शिवालिष पर अधिष्ठेक प्रारम्भ किया जी कि शिव जी नाम से ग्रह तक चला। भान साधक तान पाए कि वासनव में
क्षमायिक विष्य प्रकार से साधन से किया जाता है। इस शिविर में नामकों व समाधिन शिव्यों की नियमी दीनने का रथ किया जह तो छर दृष्टि
ए आधीरोग के पाव हैं। जान दो लीकड़ी हैं, मन युक्त करा के जाव हैं, उपमें भी सुधार सेनोकर, पालक और, भगीरथ शीवास्तव,
किण्णा भाइक, बालाजी वसन्ताल्प, ब्रह्माज्ञ बालन, केशव मने, राज्य प्रधान, एन. आर, निनाव, तुलाश्वर जोगवे, सोहलवार साहेल,
तिर्योप्य देशमुख जी तो पिछले एक गाहने से दिन-गाहन एक कर दिया था। जान चन्द्रपुर, गोदिया, नागपुर, गहोश्वलात्रि में जो उशोनि
प्रान्यालित हुई है, वह ताजा नाश गुणा फलती हुई पूरे मण्डल का गुणाव बनायी, ऐसा विश्वास है।

१०-४५ रात्रिरात्रि शिवायापुर, महायात्य

उनीभुक समीति माध्यकों की यात्रा रही है, विष्य जान रही है, कि नदीकुदव वहां कहे बार प्रधान बुको है। पिछले वर्ष
मदगुरुदेव ने कहा था, कि मैं बिलासपुर संवय आकंगा, तब उन्ह नहीं थे, कि मैं ब्रया जोला रहेंगे। उन्होंन अपना व्यवहार नियमा
ने किया गुरुदेव नन्दकिशोर जी और गुरुदेव थी अर्थक दो के बाही में सदृस्तेव के अस्त्र पूष्प कलश थे। बिलासपुर की यात्रा
वयत्राश मुरी ने विराजन की थी जो कुम में एक प्रान्य जिन्दु था, तदा नय परवा दिया तक अस्त्र पूष्प विराजमान थे। इन्हाँ किसी का
लगा ही नहीं कि मदगुरुदेव वस्त्र पर दो हैं। इस शिविर में इगारो की लंबाया में साधकों की उपस्थिति, हजारों तप साधकों द्वारा
गीक्षा ग्रहण और वह नियन्त्रक गुरु धर्मान्वान एवं भक्ति समीत पूरे वासवरण का ग्रामय करा रहा था। संच पर लैन वर्ज एवं लग रहा था,



कि सामने जो दस-पन्द्रह हजार साधक शिवाय आये हैं, वे आर्य संस्कृति की परमपरा को पुनर्जीवित करने छेत्र तत्पर हैं।

गुरुदेव श्री नन्दविज्ञोर जी ने कहा कि वह महात्माओं शिविर ऐसा शिविर है, जिसमें साधक संकल्प ले कि वह अपने स्व अर्जन इन तत्त्वों की प्राप्ति करें, स्वयं साधना में संलग्न हों। आर्य और कर्म का संयोग साधना और तपत्व के माध्यम से ही सम्भव हो पाता है। उन्होंने कहा कि यहाँ जो जित्तात्मग साधक परिवार है, लोग अब अब बनाकर बैठ जाते हैं और कहते हैं, कि यह एकमात्र स्थान है हमारी कोई शारण नहीं है। जब कि हमारे

स्थित्यात्म साधक परिवार तो ऐसा परिवार है, जिसकी शारण हर जगह है और हर स्थान पर होनी ही चाहिए, जहाँ साधक एक-दूसरे से मिले, आधुनिक साधना, वज्र डाकावि सम्पर्जन करे।

गुरुदेव श्री अरविन्द जी ने कहा: 'क ल्याकि के जीवन में तीन तत्व आवश्यक हैं—प्रथम तो साधक अपने 'त्व' को जाग्रत कर, 'स्व' जाग्रत होने पर साधना का यागं प्रशङ्खा होता है। साधना के द्वारा ही जीवन में पूर्णता और यूर्ध्वता का भी सर्वोच्चतम स्वरूप सिद्धात्म अपने जीवन में ही प्राप्त हो सकता है। 'स्व', साधना, शिवाय तीनों एक दृसंग से जुड़े हैं। गुरुदेव श्री अरविन्द जी ने द्वाटों खड़े रहकर साधकों को विद्यु दीक्षाएं प्रदान की और ज्यादा से ज्यादा साधकों का व्यक्तिगत मार्गदर्शन किया, उसने पूरा साधक सम्पादन गणना की गया।

गुरुदेव जी रामपुर, बिलाउ, शिवरो नामयाग, अमरकान्तक इत्यादि स्थानों पर आज से कुछ वर्ष पहले जो तीज बोए थे, वे ही बीज आज बृक्ष बनकर हर परिवार के विस्तार बेतु कृतसंकल्प हैं।

इस शिविर में श्री आर.सी. सिंह, जो रमण गोपालनगर में द्वायरेक्टर है, उन्होंने एक टोप बनाकर शिविर को जो नेपारा के और हजारों साधकों के लिए सुखर व्यवस्था की, वह वासनव में ही साधुवाद के अधिकारी है। इन्हें गृहस्थ संत कहा जाए, तो ज्यादा उचित रहेगा। इन्होंने जो टोप बनाई, उसमें प्रत्येक ही के शिखों का साथ लिया।

श्री एस.के. निह, गोपालनगर, के पी. पटेल, बिलासपुर, राजेश्याम साहू, जानगीर, आर.के.सोनी, कोरचा, एस.वी. नेवार, स्वनोप सोनी, धापा, बड़ी पी. सिंह, गोपालनगर, सालिकराम धादव, गोपालनगर, लोकेश राठोर, बिलासपुर, एल.पी. श्रीवास्तव, बाल्को, आर.पी. चिवेदी, बाल्को, जगदीश प्रसाद साहू, दीपिका, कीर्ति सिंह, विज्ञवाण, सेवा यम वर्मा, खिलता, जीवनलाल कुमार, तरमा, बबलू तिवारी, बोमेनरा, सुर्जीदास महंत, कोरवा, टी.आर. वर्मा, नेवरा तिल्का, शोलेन्ड्र तिवारी, जानगीर, एस.आर. कल्याण, पीपरछड़ी, फूल सिंह देवांगन, बिलासपुर, जानसिंह, पामगढ़, तुकाराम गिरीशकर, ढींगसांब, बंसीलाल पेकरा, तनोद, पी.के. शर्मा, गोपालनगर, के. शेकरन, गोपालनगर, मिलापराम देवोगन, डोगरगांव, के.के. निवारी, रायपुर, सुरेन्द्र प्रताप सिंह, दीपिका, हेमलाल ग्रावर, कोरवा, सी.पी.साहू, संजनी, जय पाण्डे, कमलकान ज्ञा, जानगीर, श्रीमति सोनिया, कोरवा, परशुराम राज, दीपिका, विनय कु. साहू, कवर्जा, विनोद कु. साहू, तनोद, कोरेक, बिलासपुर ने अपनी जनकी में अधिक भरोयी किया। इन सभका समर्पण इत्या अधिक विशेष था, कि इनका कहना था, कि हमारे अन्दर तो दो दूर शक्ति तो सदृश छोटे की ही है। हम तो निषित मात्र हैं, आज बिलासपुर शिविर दिनांकित शिविर बन गया है, यहाँ यह गांग लखी गड़, कि हर तीन महिने में छन्नारायण छोटे एक शिविर अवधि हो ही।

२०-२३ प्रदेशी, युनियन गढ़, उडीसा

बिलासपुर रो शाम की रवाना होकर झंडरावी के द्वारपुरगाँह स्टेशन पर पहुंचे। यहाँ से मुन्दरगढ़ करीब ६० किलोमीटर है, उत्कल प्रदेश उडीसा में यह प्रथम शिविर था। झंडरावी में भी द्वारपुरगाँह स्टेशन जयघोष के नाम से जून उठा। सुदूरगढ़ पहुंच कर अलंरावी में जो स्वामी गन्नारोह देखा, वह हृदय का गदगद कर देने वाला था, इस सुदूर प्रान्त में भी यह गृहदेव के जान का प्रकाश पाया गया के साथ विकल्पित है। दूसरे दिन २३ कल्कटा की जब शिविर प्रारम्भ हुआ, तो पूरा पालाल ख बाखुक भगा हुआ था, यहाँ मोहन

गोप्य के उ
विन वसने

कला कि
जिसमें
वर्ण ढारा
लग्न हो
। तपस्या
लों कला
ग आश्रम
एकमात्र
के हमारा
क-दूसरे

गो जाग्रत
बोचतम
अरविन्द
ग, उससे

गए थे, वे

व्यारो का
तो व्यादा
परम् श्री,
विवस्तव,
वनन्नाल
म् आल
।, तनोव;
पाप सिंह,
परम्पुराम
ग किया
।। हम तो
इ क्षेत्र मे

गुरुदेव श्री नन्दकिप्पोर जी एवं गुरुदेव श्री अरविन्द जी ने कहा कि साधना के लिए समर्पण प्रावश्यक है, शुद्ध पात्र आवश्यक है, कवन लड्डे लड्डे तितिक लगाने ऐ ही साधना सफल नहीं होती है, कोई भी व्यक्ति अपने आप को लोटा नहीं गगड़े, उह सभी मन्त्र ही जीवन में महान बन करता है।

२३ फरवरी की रात को ही जगन्नाथ पूरी के लिए यात्रा प्रारम्भ हुई। सप्तरुद्रेव गिरनका पूरा गौवन सर्वद का गांति विशाल और हजारों प्राणियों का अपने गोतर समेट था। उसी विशालता के अनुरूप उनके पृष्ठों को समर्पण करना था। श्री अंगाधर महापात्र और उनके द्वाता भास्कर महापात्र द्वारा जो व्यवस्था की गई, वह अत्यन्त श्रेष्ठ थी। अभिजन महूर्ण में बैकड़ी साथकों का उपस्थिति में नाव में बैठकर जलधारा के पार्श्व सर्गद में स्थित भश्यन विष्णु को उनके ही रबरूप सद्गुरु सभ्या भगवान नारायण को समर्पित कर दिया। वह विसर्जन समर्पण था प्रथम के साथ मिलन था।

१८ छहवारी-५ मार्च, होली शिविर, जोधपुर

शूरु शकि पोल गोदापुर में प्रत्येक कार्य अनोखा और लिप रहता है, यहाँ पहुंच कर प्रयेक साधक को लगाता है। मानो वह उपने घर ही आया है। गुरुदेव श्री नन्दकिशोर जी ने कहा कि रंग और उत्सव के बीच बाह्य रूप में ही नहीं होने चाहिए, जब तक जीवन में रंग और उत्सव नहीं हैं, तब तक जीवन अधूरा है। गुरुदेव अरविन्द जी ने कहा, कि ये सदगमदेव पिणाश्रो की दिव्य वेतना और उनके निर्देशन्युक्त गणितापूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए सभी शिष्यों के साथ सिद्धाश्रम साधक परिवार और मत्र-तत्र-यत्र का ज्ञान गारतवर्ष के प्रत्यक्ष देव में कठरता है।

गुरुदेव श्री कलाश चन्द्र जी ने साथको की उत्तमान रियति का विस्तृत विवरण करते हुए, उन्हें 'भगवान बनायेम प्रणीति सिद्ध नुदर्शन चक्र वीक्षा' प्रदान की। इस गिरिर में लावोत्त होल्ज पर्व पर शक्तिपात्रयुक्त नवार्ण दीक्षा प्रदान की गई। नंदार का इह तो नन्दी में यदि प्रत्येक साधक अपना ले तो स्फलता उपन्ये दूर नव्वा रह सकता। नोशपुर में कार्यरथ नीवगणों रियतों का अधिनन्दन किया गया। प्रत्येक विषय जो गुरु भवा के लिए अपना तन मन ममर्दण करने को तृप्त है, वह अपन स्वयं अपन कुल की दोति में भा वृक्ष करना है एवं समर्पित रियत हो तो सदगहरेव के कानून का हाथ है।

નાયાર, લાલબેટા સંસ્કૃતા એન્ડ પ્રિન્ટિંગ, પુષ્પ કોર્પોરેશન્સ

शायबरेली में सेकड़ों जगहों पर गूरु पूजन और गृह भवा कार्य होने रहते हैं। इस बारे तब गृहस्तों श्री कैलाशचन्द्र जी 'गणपति साधना शिविर' में पश्चात् तो भाष्यकों की उपस्थिति और उसाध्यवातावरण गे उनकी गृह भविकों प्राप्ताणित कर दिया। हजारों की संख्या में आस्थित साधकों ने रक्षात्प लिया कि उनकी दूर ज्वास मूरु कार्य के लिए है। गृहस्तेवं श्री कैलाश जी ने कहा कि मेरा कार्य तो आप सब साधकों का लक्ष्य तक पहुंचाने में ही है और यह कर्त्ता निरंतर बढ़ता रहे, आप अपने भाष्यक अपने नीतिंगंधन घन्टहो जाएं। इस शिविर में श्री विश्वनाथ श्री वामनव, एन. सी. मिह, गवेनर भवयोदिया, मोहनलाल वर्मा, डॉ जगत नारायण, श्री प्रगीष मिह, श्री रमचंद्र श्रीवास्तव, डॉ सी. जे. यादव, श्री राजवनकश सिंह ने पूजा आयोजन नगपत्र कराया।

यह अविवरण सभी तो मर्मी पुरी तक वली रहनी। बस आपकथकता है, सहगुरुनेव निखिलेष्वरानन्द महाराज जी के समर्पण
व्यक्तिगत की पहिचानने की ओर उनके विवर संदर्भों को नीचत में अपनाने की।



साधना शिविर एवं दीक्षा अमारोद

उक्त बृहिं में

19-20-21 अप्रैल ७७

भोपाल

निखिल जनती सामाजिक

शिविर स्थल - दक्षाहरा मैदान, टी.टी.बगर

- श्री अरविन्द सिंह डॉ साधना सिंह भोपाल 0755-583637, 554925
- श्री पवन खेतान भोपाल 0755-557425
- श्री विजय गुप्ता इनौर 0731-412400

24-25-26 अप्रैल ७७

बुज़दाराम, विल्सो

राधना प्रयोग एवं दीक्षा

स्थल - लिंगाभ्रम, 306 नोहाट एन्डलैन,
पीतमपुरा, नई दिल्ली

- फोन : 011-7182248, 7196700

2 अप्रैल ७७

बोरेल (गुजरात)

गुरु लक्ष्मी नाणोश राधना शिविर

शिविर स्थल - सूर्य मरिनर हाल, परिवक आक्षम, बोरेल

- श्री कनुभाई सोनी बोरेल 02896-20411
- श्री रमेश पाठिल, नवसारे 02637-53188
- श्री सुनील सानी बडोदा 0265-844337
- श्री जीताल थोकशी आनंद
- श्री कनुभाई कोका बडोदा

8-9 अप्रैल ७७

लुधियाना

भवतीती महालक्ष्मी राधना शिविर

शिविर स्थल यूनाइटेड सार्विक एवं पार्टी

मैनपुरीकरण एसोसियेशन कॉम्प्लेक्स,
लिंगट गिल चौक, गिल होड, लुधियाना

- श्री मदन सेनी लुधियाना 0161-511501, 511510
- श्री कृष्णा अम्बाला 0171-831667
- श्री आर डी जोशी चण्डीगढ़ 0172-571914
- श्री डिनार कुमार, हांडियारपुर 01882-27658
- श्री एम. के जोशी बटाला 01871-46688
- श्री हरीश कुमार कुरुक्षेत्र 01744-52427

16 अप्रैल ७७

देहरादून

राधना शिविर छिह्नापुर से 40 किमी।

शिविर स्थल - शिविर कोल, लालन जीवलाल तिकाल,

लखर, देहरादून (विवर संचार बहस्त ट्रैफ़िक
से 3 किमी. दूर) (आठो उपलब्ध है)

'अप्रैत' ७७ मत्र तत्र-यत्र विज्ञान '४४'

• श्री डॉ अरुण कुमार चौधेरे, कृष्णा सर्जिकल सेटर, विकासनगर 01360-50049, 50056

• श्री आर. एस. नेही, विकास नगर 01360-50373

• श्री सुधीर कुमार गुप्ता एवं श्रीमती विजयलक्ष्मी गुप्ता, विकास नगर 01360-51035

• श्री अनिल नंदगांवी, देहरादून 0135-871245

• श्री गोपाल चंद वर्मा, देहरादून 0135-684952

• श्री सुनील कुमार विष्ट, हस्त्रदपुर, देहरादून

16-17-18 अप्रैल ७७

ब्रह्मधाम विल्सो

साधना प्रयोग एवं दीक्षा

स्थल - लिंगाभ्रम, 306 नोहाट एन्डलैन,

पीतमपुरा, नई दिल्ली

- फोन : 011-7182248, 7196700

साधन, पालक तत्त्वप्रयोग स्थान दें

वाराणसी में बहुधा ऐसे पत्र आते हैं जिनमें आपका उक्त पता या वो अपूर्ण होता है जिसका स्पष्ट अकार से लिखा नहीं होता। इस कारण से पत्र का जवाब देने ने कठिनाई आती है और आपको अपने पत्रों के उत्तर विलम्ब से लिने हैं या नहीं यिन पत्रों के उत्तर आपसे निवेदन है कि जब भी आप पत्र लेवार करें तो आपना नाम व पता हिन्दी अथवा अंग्रेजी में स्पष्ट लिखारो में फिर कोड के साथ अवश्य लिखें।

व्यवस्थापक

राजनांदगांव

आपकी यह प्रिय पत्रिका 'जन-तत्र-यत्र विज्ञान' दो महीने अग्रिम गतिशील होती है अतोत यह अक अप्रैल का है तो इसमें जून मास की समाप्ति व प्रायोग दिवे जाते हैं।

ऐसा क्यों? एसलिए कि राधनमती के लिए यह उपकरण आपकी आवश्यकता होती है जो मन छिड़ हो, प्रणालेचतुर्युक्त डॉ। आपको जुवाई के लिए पोर्टफोर्ल पत्रिका में रालन जाता है जिस पर काइ जाक व्यवस्था नहीं देना दाता।

एष भोजन जाते हैं और वित्त जाता रहता है फिर इन्हेंको ने जान देन दाता पर पोर्टफोर्ल भेजते हैं जो समझ पर जीर्ण पूर्ण पाता और उस साथा में विजेत रह जाता है।

व्योक्त आपके पोर्टफोर्ल के लिए जाता है उसी में 7-8 दिन का ज्ञान लेगा और यह जाता है इस साथी प्रक्रिया में 20-25 दिन तक जाता है इस साथी प्रक्रिया में 50-55 दिन, अधीयों यो शहीने लग जाते हैं, यह लस्यलय विज्ञान यो पोर्टफोर्ल भेजने से वह साथा मुहूर्त लिखत जाता है और उस साथा से आप अपनि रह जाते हैं।

इसलिए आपको कोई जो भी यह लिख जाना चाहिए है तो विना डीला हवाला दिये तुरन्त गोरखकड़ ग्रन जर भेज देना चाहिए जिससे कि आप एवं साथी प्राप्त हो सकें।

सुधिग आप जोडपुर टेलीफोन नं. 0291-432209 अथवा डेलीफोन नं. 0291-432010 से भी साथी को आदेश दे सकते हैं।

जन-तत्र-यत्र विज्ञान के नवीनतम् अनु एवं प्रकाशित नियमों के अनुरूप

पत्र देने वाली जीवनी या दीप्ति से उत्तमतम् जानने के लिए यह अपूर्ण है।

यह मात्र 60 रु. से कम की सामग्री जानता है तो आप साथी युक्त तथा 20 रु. की यो यो युक्त जेट का पत्रांशी जीवन के लिए भी दें।



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server!]

